16, II

त्रैमासिक

श्रीः

श्रीस्वाध्याय

हेमन्ताङ्क

वर्ष
१६
सं० २०१३

संख्या
२
पौष



स्वाध्यायोऽध्येतव्यः

वार्षिक
मूल्य
४)

इस अङ्कका
मूल्य १।-)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

विषय-सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
१.	निवेदनम् (संस्कृत पद्य)	श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज	३
२	इन्दौर कांग्रेस, ५७ के चुनाव	सम्पादकीय	४—८
३.	श्रीदुर्गासप्तशती कथाका रहस्य	श्री पं० राजेन्द्र झा 'विमल' शास्त्री	९—११
४.	संसारके राजरोगकी औषधि भारतके पास है	श्री पं०निरञ्जन शर्मा 'अजित'	११—१४
५.	जापानका राष्ट्रधर्म	श्री मगनलाल पी० दोशी	१५—१७
६.	कम्यूनिज्म कम्यूनिज्म है साम्याद नहीं	श्री आचार्य अभयदेवजी	१७—१८
७.	जनतन्त्र राज्य अभिशाप या वरदान		१९—२०
८.	श्रीभगवत्साक्षात्कारके बिना जीवन व्यर्थ	श्री भक्त रामशरणदासजी	२१—२५
९.	कारक सूत्र-विवेचन	श्री पं० नारायण शास्त्री चुलेट	२५—२७
१०.	ज्योतिष-शास्त्र और रोग चिकित्सा	श्री प्रो० पृथ्वीधराचार्य	२८—३१
११.	अनुभूत योगमाला	श्री पं० तारादत्तजी राजगुरु ज्योतिषालंकार	३१
१२.	उज्जयिनी पक्षान्त (कुम्भ पुष्कर) स्नान निर्णय	श्री पं० चन्द्रकान्त शर्मा राजज्योतिषी	३२—३४
१३.	दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र	श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी	३५—३९
१४.	सन् १९५७ ई० का भविष्य	श्री प्रो० बी० व्ही० रमन	३९—४१
१५.	यकृत रोगकी अनुभूत चिकित्सा	श्री विश्वनाथ अग्रवाल वैद्य	४१—४३
१६.	तीन मासका व्यापार भविष्य	श्री प्रो० बी० सी० महता	४४—४६
१७.	त्रैमासिक व्यापार भविष्य	श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिषरत्न	४६—४८
१८.	ज्यो० की दृष्टिमें तय्यार और वायदाकी तेजी-मंदी	श्री पं० ओंकारप्रसाद शर्मा ज्योतिर्भूषण	४८—५०
१९.	त्रैमासिक व्यापारकी जनरल रूपरेखा	श्री राजवैद्य डा० अमरदत्त मिश्र	५०—५१
२०.	तीन मासका साप्ताहिक भविष्य प्रकाश	श्री पं० गंगाप्रसाद ज्योतिषाचार्य	५१—५२
२१.	रुई चांदी सोनेकी अनुभूत रिपोर्ट	श्री पं० गिरिधारीलाल शर्मा ज्यो०	५३
२२.	तीन मासका दैनिक व्यापार रुख	श्री पं० गणेशशंकर शर्मा दैवज्ञरत्न	५४—५९
२३.	त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय	'श्रीविश्वविजयपंचांग' से	६०

विद्वान् लेखकों से निवेदन

आगामी 'वसन्ताङ्क' के लिए सब लेख माघ शु० १५ ता० १४ फरवरी १९५७ तक कार्यालयमें सम्पादकके पास पहुँच जाना आवश्यक है। तेजी मंदीके सामयिक लेख और विज्ञापन अन्तिम तिथि १० मार्च तक स्वीकृत हो सकेंगे। सहयोगी दैवज्ञ इस बातका ध्यान रखकर ज्योतिष और तेजी मंदी सम्बन्धी अपने लेख १० मार्च १९५७ तक अवश्य भेज दें। बादमें आये लेख प्रकाशित न हो सकेंगे। लेख स्पष्ट सुवाच्य अक्षरोंमें कागजके एक ही ओर संशोधनके लिए स्थान छोड़कर खुला लिखना चाहिए। कई लेखक पंक्तिके साथ पंक्ति सटाकर ऊपर नीचे कहीं भी संशोधन सम्पादनके लिए रत्ती-भर भी स्थान नहीं छोड़ते। ऐसे लेख भविष्यमें प्रकाशित न हो सकेंगे। लेख बहुत लम्बा भी नहीं होना चाहिए। इन नियमोंके विरुद्ध लेख भेजने वालोंका परिश्रम व्यर्थ होगा। आगामी 'वसन्ताङ्क' निश्चित तिथिसे १० दिन पूर्व चैत्र शु० १ ता० १ अप्रैल १९५७ को ग्राहकों तक पहुंचानेका प्रयत्न किया जावेगा।

हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय'
सोलन (हिमाचल प्रदेश)

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

धर्ममार्त्तण्ड राजासाहब श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर सी० आई० ई०, सोलन ।

श्रीमान् रायबहादुर सेठ तोलारामजी गजराजजी जैन, लाडनूं [राजस्थान]

सहायक—

श्री १०५ मती स्व० माँजी महारानी साहिबा [सिरमौरीजी] बघाटराज्य ।

श्रीमती सरस्वतीदेवीजी गाडोदिया, दिल्ली ।

आयुर्वेदमहोपाध्याय श्री पं० गोवर्द्धन शर्माजी छांगाणी, सीतावर्डी, नागपुर ।

श्रीमान् पं० खुशीरामजी शर्मा ठेकेदार, कुराली (पंजाब)

श्री नरेन्द्रनाथजी 'मोहन' मैनेजिङ्ग डायरेक्टर डायर मीकन ब्रूरीज लिमिटेड सोलन ब्रूरी ।

श्रीमान् हीरालाल मोतीलालजी पुजारा, ध्रांगध्रा (सौराष्ट्र)

श्रीमान् पं० लक्ष्मीकान्तजी शर्मा, चीफ रेवेन्यू अकाउण्टेण्ट, भरतपुर ।

श्रीमान् स्व० पं० चतुर्भुजजी राजपुरोहित ताल्लुकेदार, भरतपुर ।

श्रीमान् सेठ गयाप्रसादजी खण्डेलवाल, सिल्चर (आसाम)

श्रीमान् ला० रामरत्नदास श्रीकृष्णदासजी, रुईकी मण्डी, दिल्ली ।

श्रीमान् ला० बनवारीलाल ओंकारनाथजी, कूचा महाजनी दिल्ली ।

श्रीमान् लाला श्यामलालजी मित्तल, अनूपशहर [उत्तरप्रदेश]

सम्पादक और व्यवस्थापक—

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य

उपसम्पादक—

आचार्य श्री पं० रमानन्द शास्त्री सारस्वत साहित्यरत्न

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन. (हिमाचलप्रदेश)

'श्रीस्वाध्याय' के नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना 'श्रीस्वाध्याय' का मुख्य उद्देश्य है।

संचालकगणोंके नियम

संरक्षक—

जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपयेसे अधिक प्रतिवर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जायेंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५१) रु० से ३००) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे, वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जायेंगे।

'श्रीस्वाध्याय' आश्विन शुक्ला १०, पौषशुक्ला १०, चैत्रशुक्ला १०, और आषाढ़शुक्ला १० को प्रकाशित होता है। इसका वार्षिक मूल्य ४।) और १ प्रतिका १।=) एक रुपया छः आना है।

(३) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय-सदनकी ओर से प्रार्थना-पूर्वक मंगबाये जायेंगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे, अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जावेंगे तो यथा समय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(४) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) की पत्र-पत्रिकाएँ सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (शिमला) के पते से भेजने चाहिएँ।

(५) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(६) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने-बढ़ाने तथा लौटाने न लौटाने का सम्पूर्ण अधिकार सम्पादकको है। अस्वीकृत लेख डाक व्यय प्राप्त होने पर ही लौटाये जा सकेंगे।

ग्राहकोंके नियम

'श्रीस्वाध्याय' के स्थायी ग्राहक वर्षारम्भके प्रथमाङ्कसे (आश्विनमास की विजयादशमीसे) ही बनाये जाते हैं। चाहे वे मूल्य कभी भेजें। यदि विजयादशमीका 'नववर्षाङ्क' समाप्त हो जावे या कोई ग्राहक अवधि समाप्त होने पर पीछे विशेषांक न लेना चाहें तो बीचमें किसी भी समय से ग्राहक हो सकते हैं। ऐसी स्थितिमें उनसे वार्षिक मूल्य ४।) रु० न लेकर वर्ष-समाप्ति (आषाढ़) तकके शेष अङ्कों का मूल्य ही लिया जायेगा। 'नववर्षाङ्क' के बिना तीन अङ्कों या नौ मासका मूल्य ३।।) रु० और एक अङ्कका मूल्य १।=) मनीआर्डर द्वारा पेशगी आना चाहिए। वी० पी० मंगवाने पर उक्त मूल्यमें तेरह आने वी० पी० रजिस्ट्री खर्चके अधिक बैठ जायेंगे। वर्षारम्भसे स्थायी ग्राहक बनकर पूरी फाइल मंगवानेमें ही ग्राहकोंको विशेष लाभ है।

मूल्य भेजते समय मनीआर्डरके कूपन पर अपना नाम तथा पूरा पता और ग्राहक संख्या स्पष्ट अक्षरोंमें लिखना चाहिए। यदि ग्राहक संख्या स्मरण न हो और पुराने ग्राहक हों तो मनीआर्डरके कूपन पर 'पुराना' शब्द और नये ग्राहक हों तो 'नया' शब्द नामके साथ अवश्य लिख देना चाहिये। वार्षिक मूल्य वा एक अंकके मूल्यका नोट या टिकट लिफाफेमें कदापि न भेजें।

'श्रीस्वाध्याय' का नमूना बिना मूल्य किसीको नहीं भेजा जाता। जिन सज्जनोंके जवाबी पत्र या उत्तरके लिए टिकट आवेंगे उन्हींको तत्काल उत्तर दिया जावेगा। 'श्रीस्वाध्याय' प्रकाशित होनेकी तिथि (शुक्ला दशमी) को प्रत्येक ग्राहकके नाम बड़ी सावधानीसे भेज दिया जाता है। यदि किसी ग्राहकके पास कोई अंक न पहुँचे तो उसके प्रकाशित होनेकी तिथिसे १५ दिनके अन्दर हमें सूचना देनी चाहिए। बादकी शिकायत पर कोई ध्यान नहीं दिया जायगा।

व्यवस्थापक—

श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्रीस्वाध्याय

[हेमन्ताङ्क]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति　　—श्रीराष्ट्रालोक

वर्ष १६　　सालन, पौष शु० १० शुक्रवार सं० २०१३ वि०　　संख्या २

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै॥
—अ० वा० आचार्य

निवेदनम्

[श्री १०८ आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज]

गुरुश्रीश्रीपादाम्बुजभवपरागाञ्जनवती
दृगात्मानं द्रष्टुं समरसशिवैश्वर्यमहितम्।
विशालं सामर्थ्यं सपदि लभते काऽपि रुचिरा
नमामस्तां वामो विधिरपि सदा पूजयति याम्॥१॥
अहो! स्वात्मन्! नित्ये सुहृदि परिपूर्णे त्वयि सति
प्रभो! विश्वैश्वर्याश्रितवपुषि कामं निरुपमे।
उदारे पुत्रस्त्रीधनधरणिधामादिसुखदं
त्वदन्यं दातारं कमपि मृगयन्तेऽतिकृपणाः॥२॥

सम्पादकीय विचार—

इन्दौर-कांग्रेस

ॐ सहनाववतु सह नौ भुनक्तु हवीर्य्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषामहै॥

कांग्रेसके शब्दोंमें शक्ति है। भारतके भाग्यकी निर्मातृ और विधायिका शक्ति आज इस एक दलमें है। अतः इन्दौर कांग्रेसका निर्णय भविष्यकी दृष्टिसे महत्वपूर्ण है।

कांग्रेसका लक्ष्य बदला गया है। अब इसका ध्येय समाजवादी सहकारी राष्ट्र-कुल (सोशलिस्ट कोआपरेटिव कामनवेल्थ) की स्थापना करना हो गया है। यद्यपि आवड़ी में कांग्रेसने समाजवादी ढंगकी सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था स्थापित करना अपना ध्येय घोषित किया था। किन्तु समाजवादी शब्द अभी तक कांग्रेसके संविधान और उसके लक्ष्यमें सम्मिलित नहीं किया गया था। इस परिवर्तनको कांग्रेसके अध्यक्ष श्री ढेबरने अपने अध्यक्षीय भाषणमें महत्वपूर्ण बताया है और कहा है कि हम विकास की जिस दिशामें जाना चाहते हैं उसमें यह एक महत्वपूर्ण कदम है। इस अवसर पर कांग्रेसका समाजवादी व्यवस्था में विश्वास प्रकट करना अर्थ सूचक है। प्रजा सोशलिस्ट पार्टीके अध्यक्ष श्री गंगाशरणसिंहके शब्दोंमें यह केवल मत प्राप्त करनेके लिए है। कांग्रेस सामन्ती मनोवृत्तिकी है, यह श्रीगंगाशरणकी बात सर्वथा गलत नहीं कही जा सकती। इन्दौर-कांग्रेसमें ही साधारण प्रतिनिधि, साधारण नेता, बड़े नेता, और चोटीके नेता, ये विभाग स्पष्ट रूपसे दिखाई दिए और इन सबके लिए निवास भोजनकी अलग-अलग व्यवस्था थी। लक्ष्मीनगरमें पूर्ण निरामिष भोजनकी व्यवस्था थी। किन्तु जो नगरसे बाहर ठहराए गए थे, उनके लिए इससे भिन्न व्यवस्था थी। जब चार दिनोंके लिए भी कांग्रेसजन एक समान भावसे नहीं रह सकते तो ये देशमें जान-राज्य और समाजवादी व्यवस्था स्थापित करेंगे, यह कैसे आशा की जा सकती है?

परिभाषा नहीं की गई—कांग्रेस किस प्रकारकी समाजवादी व्यवस्था स्थापित करना चाहती है, यह नहीं बताया गया है। प्रधानमंत्री श्रीनेहरूने कहा है कि वे किसी की प्रतिकृति नहीं चाहते। इस देशके अनुकूल, इस देश की भूमि, बुद्धि और प्रतिभासे उत्पन्न समाजवाद इस देश में लोकतंत्रात्मक और शांतिपूर्ण रीतिसे स्थापित करना चाहते हैं। किन्तु उसका रूप क्या होगा, यह आज बताना कांग्रेसके लिए भी कदाचित् सम्भव नहीं। परन्तु ऐतिहासिक दृष्टिसे समाजवाद पूंजीवादसे भिन्न है और दोनों के बीच एक विभाजक रेखा स्पष्ट रूपसे खींची जा सकती है। किन्तु समाजवाद और कम्युनिज्मके बीच इसी प्रकार स्पष्ट विभाजक-रेखा नहीं खींची जा सकती। श्रीनेहरूने पूंजीवादको अनद्यतन बताया है, किन्तु कम्युनिस्ट पार्टीने अपने निर्वाचन घोषणापत्रमें घोषित किया है—पूंजीपतियों के सब उचित अधिकारोंकी रक्षा की जायगी और नियोजन को सफल बनानेमें उनका सहयोग प्राप्त किया जायगा। यही नहीं कम्युनिस्ट पार्टीने मध्यमवर्गके प्रति भी सहानुभूति प्रदर्शित की है और विश्वास दिलाया है कि उसके लिए जीविका वृत्तियों और कामोंका विस्तार किया जायगा।

कल्याण राज्यका अविरोधी है—कांग्रेसका उद्देश्य इस देशमें कल्याण राज्यकी स्थापना करना है। श्री गाडगिल इसको समाजवादका विरोधी मानते हैं, किन्तु श्री नेहरू इन दोनोंमें कोई परस्पर विरोध नहीं मानते। श्री नेहरूका विश्वास है कि समाजवादसे कल्याण राज्य बाहर नहीं है। प्रधानमंत्री वैयक्तिक आयकी उच्चतम सीमा निश्चित करनेको अव्यावहारिक और अवाञ्छनीय मानते हैं। किन्तु भूमि-स्वामित्व और भू-आय पर प्रतिबन्ध लगाना कांग्रेस और प्रधानमंत्री अनुचित नहीं मानते।

श्रीनेहरूने कहा कि वे केवल अनुपार्जित धनके संगृहीत होनेके विरोधी हैं। वे इसका धीरे-धीरे अन्त करना चाहते हैं। परन्तु क्या यह सम्भव है? सोवियत रूसमें वेतन स्तरोंमें पर्याप्त भिन्नता है। यह विभिन्नता उत्तराधिकारमें भी प्रकट हुए बिना न रहेगी, यद्यपि रूस सिद्धान्ततः वैयक्तिक सम्पत्तिके पक्षमें नहीं है। भारतमें वैयक्तिक स्वतंत्रताकी गारण्टी दी गई है और वैयक्तिक आयकी उच्चतम सीमा भी नहीं बांधी गई है। इस अवस्थामें पूंजीपति और पूंजीवाद भी बना रहेगा। क्योंकि उत्तराधिकार द्वारा अनुपार्जित सम्पत्ति किसी-न-किसी मात्रामें संगृहीत होती रहेगी और कांग्रेसके बारेमें जो आज कहा जाता है कि धनी और अधिक धनी हो गए हैं और गरीब और अधिक गरीब हो गए हैं, वह सम्भवतः भविष्यमें भी कहा जाय। इसके साथ यह भी भय है कि राज्य पूंजीवादी हो जाय और उत्पादन और वितरणके सब साधनोंका यह नियंत्रण करे और इसकी अधिसत्ता सर्वव्यापक हो जाय और वैयक्तिक अभिक्रम और उपक्रमणके लिए कोई स्थान न रहे। पश्चिमी बंगालके प्रथम और भूतपूर्व मुख्यमंत्री डा० प्रफुल्लचन्द्र घोषने यह व्यक्त किया है और वह निराधार नहीं है।

क्या संभव है?—कांग्रेस और श्रीनेहरू जिस प्रकारका समाजवाद और जिस ढंगसे उसको स्थापित करना चाहते हैं, क्या वह स्थापित होना सम्भव है? श्रीनेहरूने माना है कि पूंजीवादको अवैध करनेकी कोई आवश्यकता नहीं। यह भी स्वीकार किया है कि दूसरे महायुद्धमें पूर्णतया उध्वस्त हो जानेके बाद जापान और पश्चिमी जर्मनीने पूंजीवादके मार्गसे ही अपना पुनर्निर्माण किया है। फिर समाजवादकी क्या आवश्यकता है? इसका उत्तर प्रधानमंत्रीने इस प्रकार दिया है—"भारतमें समाजवादकी स्थापनाकी आवश्यकता भारतकी परिस्थितियोंके कारण हैं। औपनिवेशिक और सामन्तशाही सम्मिलित आर्थिक व्यवस्थाको आधुनिक आर्थिक व्यवस्थामें परिणत करना है।" किन्तु क्या यह शान्तिपूर्ण और लोक तंत्रात्मक ढंगसे सम्भव है? बीमा-संविधानका जर्मनीमें क्या हुआ? चीनमें औपनिवेशिक और सामंती आर्थिक व्यवस्थाकी जगह समाजवादी आर्थिक व्यवस्था स्थापित हुई है। किन्तु उसके लिए चीनने वैयक्तिक स्वतन्त्रताका अन्त करनेके रूपमें भारी मूल्य चुकाया है। पोलैण्ड हंगरी और रूमानिया अब कहने लगे हैं कि वे जो समाजवादी व्यवस्था चाहते थे वह यह नहीं है। गोमुलकाने सहकारी खेतीकी विफलताकी घोषणा की है। परीक्षणने सिद्ध किया है कि खेतों पर किसानोंका स्वामित्व स्वीकार करनेसे ही अच्छी खेती होती है। इस अवस्थामें स्वभावतः प्रश्न उठता है कि क्या कांग्रेस अपने लक्ष्यकी पूर्ति कर सकेगी? श्रीनेहरू इसके लिए बीस-तीस वर्षका समय भी अल्प बताते हैं। इस अवस्थामें कैसे विश्वास किया जाय कि कांग्रेस इस देशमें समाजवादकी स्थापना कर सकेगी? स्वीडिश मंत्री साइकलों पर अपने मंत्रालय आते हैं, और इसमें वे अपनी प्रतिष्ठा मानते हैं। किन्तु कांग्रेस मंत्री नई मूल्यवान् और शानदार मोटरोंमें बैठना आवश्यक समझते हैं। वे अपनी फ़ाइल भी अपने हाथसे उठाना अपना अपमान समझते हैं। अतः यह विश्वास करना कि कांग्रेस इस देशमें समाजवाद स्थापित कर सकेगी, सहज नहीं है।

१९५७ का निर्वाचन

आगामी निर्वाचन होलीसे पहले-पहले समाप्त हो जायगा। १९५२ के निर्वाचनमें विभिन्न राजनीतिक दलोंको मत इस प्रमाणमें प्राप्त हुए थे।

	लोकसभा	विधान सभाएं
कांग्रेस	(प्रतिशत) ४५.०१	(प्रतिशत) ४२.३६
कम्युनिस्ट	५.०६	५.१०
सोशलिस्ट	१०.५	९.७३
जनसंघ	३.५	२.८१
शीड्यूल कास्ट फेडरेशन	२.३०	१.७४

१९५२ में मतदाताओंकी संख्या लगभग १२ करोड़ थी। इस बार यह संख्या लगभग बीस करोड़ होगी। यह भी अनुमान है कि पिछली बारके समान इस बार भी ६० प्रतिशत निर्वाचक निर्वाचनमें भाग लेंगे। किन्तु कांग्रेसको छोड़कर और कोई भी पक्ष लोकसभा और विधान-सभाओंके सब स्थानोंके वास्ते अपने उम्मीदवार खड़े करनेमें समर्थ नहीं है। किसीका भी संगठन अभी तक साधारण जनता तक नहीं पहुँचा है। अतः कांग्रेस पुनः शासन-सूत्र ग्रहण

करेगी, यह सन्देहातीत है। पिछली बार निर्वाचनके बाद लोकसभा और विधानसभाओंमें विभिन्न पक्षोंकी शक्ति इस प्रकार थी।

	लोकसभा	विधान सभाएं
कांग्रेस	(प्रतिशत) ७४.४३	(प्रतिशत) ६८.५६
कम्युनिस्ट	५.३१	५.२७
सोशलिस्ट	२.४५	३.६०
जनसंघ	०.६१	१.००
शीड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन	०.४०	०.३६
स्वतंत्र	७.६	६.८

कांग्रेस विरोधी पक्ष यह अनुभव करते हैं कि निर्वाचन में ५० प्रतिशतसे भी कम मत पाकर कांग्रेसने स्थान ७५ प्रतिशत तक प्राप्त कर लिए, क्योंकि कांग्रेस विरोधी मत विभक्त हो गए। कांग्रेस विरोधीपक्ष मोटे तौर पर दो भागोंमें विभक्त हैं—दक्षिणपक्षी और वामपक्षी। ये दोनों भी अनेक भागोंमें विभक्त हैं। दक्षिणपक्षी दलोंमें जनसंघ और वामपक्षी दलोंमें डा० लोहियाकी सोशलिस्ट पार्टीने निर्वाचन कालके लिए भी किसी प्रकारकी एकता स्थापित करनेसे नकार कर दिया है। मध्य बम्बईसे लोकसभाके लिए कौन खड़ा हो, प्रजा सोशलिस्ट या कम्युनिस्ट इसमें मतभेद होनेके ही कारण दोनोंकी समझौतेकी बातचीत वहां टूट गई। विरोधी पक्षोंकी अनेकताका लाभ कांग्रेसको मिलेगा, यह सन्देहातीत है। किन्तु पश्चिमी बंगाल और केरल में, विशेषतः केरलमें विरोधीदल बहुत आशावान् है। किन्तु उम्मीदवारोंका जंगल १९५२ के समान इस बार भी दिखाई देगा और कांग्रेसके वास्ते विजय पाना कठिन न रहेगा। नगरोंमें मतदाताओंमें मत देनेका उत्साह भी कम होता है, अतः कांग्रेसके प्रति जहां सर्वाधिक असन्तोष है, वहां भी वह विजयी होगी। क्योंकि मतदाता जानते हैं कि कांग्रेस का कोई विकल्प नहीं है, अतः उसके विरोधियोंको मत देना व्यर्थ है, और कांग्रेसको वे देना नहीं चाहते, अतः निर्वाचनके कारण मिली छुट्टीका उपयोग वे अन्यत्र करेंगे और मतदानमें भाग न लेंगे।

यादवी युद्ध—कांग्रेसको विरोधी पक्ष भले ही चोट न पहुंचा सकें, किन्तु कांग्रेसमें श्रीनेहरूके जीवनमें ही तितर-बितर और छिन्न-भिन्न होनेकी प्रक्रियाका प्रारम्भ हो गया है, जैसे कि भगवान् श्रीकृष्णके देखते देखते यादवोंका नाश हो गया था। जो कांग्रेसजन जेल गए हैं, और तीस चालीस वर्षोंसे कांग्रेसका कार्य कर रहे हैं, उनकी मान्यता है कि विधि-सभाओंमें प्राप्त स्थान उनके लिए जन्मभरके लिए लिख दिया गया है, और इस पट्टेको किसी भी अवस्थामें रद्द नहीं किया जा सकता। मध्ययुगमें राजकी सेवाके बदले भूमि और राजदरबारमें सम्मान दिया जाता था, फलतः जमींदारों और जागीरदारोंकी इस प्रकार सृष्टि हुई। कांग्रेसने जमींदारी और जागीरदारी तो नष्ट कर दी है अतः विधि-सभाओं की सीटोंने ही अब उसका स्थान ले लिया है और इस कारण जिसको यह एक बार मिल गई है, उसको वह छोड़ना नहीं चाहता। यह आकर्षक मोहक और प्रभावशाली होनेके साथ वृत्ति और जीविकाकी समस्याको भी हल कर देता है, और इसके अतिरिक्त घरानेकी गिनती सम्भ्रान्त कुलोंमें की जाने लगती है, कन्याका विवाह सरलता से हो जाता है, और लड़कोंको अच्छी नौकरी मिल जाती है एवं विदेशोंमें पढ़नेके लिए छात्रवृत्तियां भी मिल जाती हैं। कांग्रेसके पास इसके मुकाबले और कोई आकर्षक वस्तु देनेको नहीं है। अतः कांग्रेसने जिन प्रार्थियोंको निराश किया है, वे विद्रोहकी पताकाएं खड़ी कर रहे हैं। पंजाब और बिहारमें इसका श्रीगणेश हो गया है। बिहार में तो २५०० कांग्रेसजनोंने अधिकृत कांग्रेसी उम्मीदवारों के विरुद्ध अपने उम्मीदवार खड़े करनेका निश्चय किया है और घोषणा की है कि वे कांग्रेसके तानाशाहीका अन्त करके ही दम लेंगे। पूछा जा सकता है कि एक मास पहले वे वीर और सूरमा कहां छिपे हुए थे? सहसा कांग्रेसके नेता निरंकुश और तानाशाह हो गए यह क्या माना जा सकता है? यदि इनके नाम कांग्रेसके उम्मीदवारोंकी सूचीमें सम्मिलित होते, तो भी क्या वे यह कहते कि कांग्रेसमें अधिनायकवादका राज्य है, बोलबाला है? अतः वैयक्तिक महत्वाकांक्षाओंकी पूर्तिका प्रश्न है। सेवा त्याग और तपस्याकी बात तो केवल कठोर सत्यको छिपानेके लिए है। जब सब पुराने मंत्री उपमंत्री सभा-सचिव आदि उम्मीदवार बनाए जा रहे हैं और उनमें नवीन ३० प्रतिशत का नियम लागू नहीं किया जा रहा, तब विद्रोहियोंको

दोष देना भी ठीक नहीं है। लोभ सब पापोंका मूल है। विधिसभाओंकी सदस्यताका आकर्षण ऐसा है कि इसमें फँसनेके बाद फिर इससे निकला नहीं जा सकता। अतः कांग्रेसको प्रति पाँच वर्ष बाद यादवी युद्धका सामना करना पड़ेगा और इस प्रकार धीरे-धीरे कांग्रेस एक वर्ग, एक विचार और एक आदर्शके लोगोंकी हो जायगी। अन्ततोगत्वा यह कांग्रेस और देश दोनोंके लिए भी ठीक होगा। आज तो कांग्रेसमें एक किसान और बड़ोदा-नरेश दोनोंके लिए स्थान है। किन्तु एक आदर्शमें विश्वास करने वाली राजनीतिक पार्टीके लिए सम्भव नहीं। अतः कांग्रेस को अपना संघटन बदलना होगा, और यह कदाचित् यादवी युद्धों द्वारा ही हो। विशालकाय होना शक्तिका सूचक नहीं। पंजाबमें कांग्रेस यह अनुभव कर रही है। अकाली पार्टीका कांग्रेसमें सम्मिलित होना उसकी शिरोवेदनाका एक कारण हो गया है। अतः कांग्रेसका रूप छोटा हो जानेसे उसको लाभ ही पहुँचेगा हानि न होगी।

महान् ज्योतिर्विज्ञानाचार्यका महाप्रयाण

पूज्यपाद सुकृतनामधेय गुरुवर सिद्धान्तपञ्चानन श्री ६ पं० केदारनाथजी महाराज राजज्योतिषीका महाप्रयाण (देहावसान) गत कार्तिक कृष्णा १३ बुधवार तदनुसार ता० ३१ अक्तूबर १९५६ ई० को जयपुरमें हृदय-गति रुक जानेके कारण हो गया। यद्यपि आप गत वर्षसे ही कुछ अस्वस्थ थे और ६६ वर्षकी वृद्धावस्थामें निर्बलता भी उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही थी, तथापि ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नति एवं वेधशालाके जीर्णोद्धारकी लगन आपके मानसमें हम युवकोंसे भी अधिक थी। आपके स्वर्ग-प्रयाणसे आज भारतीय ज्योतिर्विज्ञान और वेधशालाओंकी अपूरणीय क्षति हुई है। आप त्रिस्कन्ध ज्योतिषके तो महान् आचार्य थे ही, साथ ही संस्कृत-साहित्य काव्य दर्शन और धर्म-शास्त्रके भी प्रकाण्ड पण्डित थे। आपके विनोदपूर्ण सरस सदुपदेशात्मक पथ-प्रदर्शनका अभाव आज हृदयको विदीर्ण कर रहा है। जयपुरकी राजकीय वेधशालाके आप अध्यक्ष थे, अपितु यह कहा जा सकता है कि वेधशालासे आपका अंगाङ्गीभाव सम्बन्ध बन गया था। वेधशाला आपका पुण्य तीर्थ वा मन्दिर था और आप थे उसके देवता।

अमृतात्मन्! आपके अलौकिक गुणगानमें वाणी असमर्थ है, आपके स्नेह सान्निध्यका अभाव कंठावरोध कर रहा है। भारतमें सर्वत्र आपके सैंकड़ों शिष्य, भक्त और अनुयायी हैं, उन सबका यह कर्तव्य है कि परस्पर संगठित होकर ज्योतिर्विज्ञानकी उन्नतिमें प्राण-पणसे जुट जावें और दिल्लीकी वेधशालाके जीर्णोद्धारकी जो आपकी अन्तिम अभिलाषा थी, उसे पूर्ण करें। लोकसभाके अध्यक्ष श्री अनन्तशयनम् आयंगर और केन्द्रीय उपशिक्षामंत्री श्री कालूलालजी श्रीमालीने आपके सम्मुख उस दिन ता० ६ अगस्त ५६ को वेधशाला निरीक्षण करके नई दिल्लीकी इस भग्नप्राय वेधशालाको केन्द्रीय सरकार द्वारा पूर्वकी एक महान् वेधशाला बनवानेका जो आश्वासन दिया था—तदर्थ हम महामान्य श्री आयंगर एवं श्री श्रीमालीजीसे पुनः निवेदन करेंगे कि वे स्वर्गीय गुरुवरको दिये गये आश्वासन का स्मरण कर इस जन्तर-मन्तरको राजधानीके अनुरूप एक आदर्श वेधशालाके रूपमें परिणत करा कर दिल्लीके गौरवकी रक्षा करें। स्वर्गीय आचार्यके ग्रन्थागारमें जो अलभ्य अप्रकाशित ग्रन्थ अवशिष्ट हैं, उनका प्रकाशित होना भी नितान्त आवश्यक है। ऐसी और भी कई बातें हैं जिन पर आगे प्रकाश डालेंगे।

भूलिए नहीं !

आपको 'श्रीस्वाध्याय' का एक नया ग्राहक अवश्य बनाना है।

श्रीदुर्गा सप्तशती कथाका रहस्य

[लेखकः—श्री पं० राजेन्द्र झा 'विमल' शास्त्री ज्यौतिष-साहित्याचार्य B. A. हिन्दी रत्न]

[महामाया श्रीदुर्गाम्बाके स्तोत्र-रत्नोंमें 'सप्तशती स्तोत्र' प्रमुख है, इसके लौकिक, पारलौकिक किंम्वा भौतिक आध्यात्मिक कितने ही रहस्य गर्भित भाव सहृदय साधकोंके हृदयमें स्फुरित होते रहते हैं। विद्वान् लेखकने उसी 'स्तोत्र-राज' की कथा का लौकिक दृष्टिसे स्थूल भावार्थ वैज्ञानिक भाषामें प्रस्तुत लेखमें सार संगृहीत किया है। सत्य तो यह है कि इस पर जिस दृष्टिसे जितना लिखा कहा या सुना जा सके सब थोड़ा ही है। लेख भावपूर्ण एवं सारगर्भित है—अतः सुधी जनोंसे एक बार इसे पढ़ जानेका हम सस्नेह अनुरोध करते हैं। —सम्पादक]

निस्सन्देह,अखिल सृष्टि एक अघटन घटना यटीयसी शक्तिसे अनुशासित है। हमारा जीवन और उसके समस्त व्यापार—उत्थान, पतन, हास्य-रुदन, जन्म-मरण आदि समस्त वस्तु जात—उसी शक्तिसे आविर्भूत और उसीमें तिरोभूत हुआ करते हैं। वह महिमामयी शक्ति सहज ज्ञेय नहीं है। चिरकालकी साधनासे उसका दिव्य अनुभव हो सकता है। हमारे पूर्वज तपःपूत ऋषियोंको वैसा अनुभव हुआ था। उन्होंने विरासतके रूपमें, हम साधारणजनोंके कल्याणार्थ उसकी जो एक सगुण सारगर्भित आराधना-पद्धति निर्दिष्ट की वही "दुर्गापूजा" के रूपमें प्रचलित रही है। 'दुःखेन गम्यते इति दुर्गा'—दुःखसे, कठोर संयमसे उसकी प्राप्ति होती है; अतः उसे 'दुर्गा' कहा गया है।

दुर्गा-पूजा, प्रतिवर्ष हम शारदीय नवरात्रमें (आश्विन शुक्ल १से १० तक) समारोहपूर्वक सम्पन्न करते हैं। जब कि प्रकृति प्रायः साम्यावस्थामें रहती है। न वर्षाका ध्यानोच्छेदक रिमझिम, न हेमन्त-शिशिरका शीत सिहरन, न बसन्तकी उद्दीपक मादकता और न ग्रीष्मकी उद्वेजक उष्णता। इन दिनों दिग् दिगन्त एक विलक्षण पवित्रता और शान्तिसे ओत-प्रोत रहते हैं।

दुर्गा-पूजाके माहात्म्य-ज्ञानके हेतु दो ग्रन्थ विशेष प्रसिद्ध हैं :—१. श्रीदुर्गा-सप्तशती, २. देवी-भागवत। इन दोनों में भी श्रीदुर्गा सप्तशतीका जन सुलभ होनेके कारण अधिक प्रचार है। यह कल्याणकारी ग्रन्थ माना जाता है। सप्त शतीका अर्थ है—सात सौका समूह। अर्थात् उक्त ग्रन्थमें चूंकि ५६७ श्लोकोंमें दुर्गाशक्ति मूलक ७०० मंत्र संगृहीत हैं; अतः उसे 'दुर्गा सप्तशती' कहा गया है। इसका पारायण (पाठ), जप और अनुष्ठान करने-करानेसे श्रद्धालु भक्त-जन 'दुर्गा' नाम विशिष्ट ब्रह्म शक्तिका सामीप्य और कृपा प्राप्त करते हैं। विधि-पूर्वक मंत्र-जपसे अनेक लोग व्यापार, नौकरी, स्वास्थ्य, गृह आदि सम्बन्धी भौतिक उन्नति भी प्राप्त करते देखे गए हैं। नित्य पाठ मात्रसे भी विविध कार्य-की सिद्धि होती है।

'सुरथ' और 'समाधि'

महाशक्ति 'दुर्गा' को समझने तथा उसका सामीप्य प्राप्त करनेका इस लोकमें सबसे पहला प्रयास सुरथ नामक राजा और समाधि नामक वैश्यने किया। सुरथ है—अच्छे रथ वाला अर्थात् 'कर्तव्य-परायण' व्यक्ति और समाधि है—मनकी एकाग्रताका व्यापारेच्छु। कर्तव्यको विरोधियोंसे पराजित होना पड़ा है और समाधि को संसारकी अनित्यता से वैराग्य-वृत्ति हो आई है, और चूंकि जब तक विषयकी आसक्तिसे छुटकारा नहीं मिलता, तब तक मनकी एकाग्रता असम्भव है; अतः वे दोनों (सुरथ और समाधि) विकल होकर, मेधा (विवेकशक्ति पूर्ण सद्बुद्धिमान्) ऋषिके पास पहुँचते हैं और उनसे सांसारिकताके खोखलापन किन्तु फिर भी तद्गत अनिवार्य मोहकता और आकर्षणके विषयमें अनेक प्रश्न पूछते हैं। उत्तरमें उन्हें श्री नित्या जगदम्बाका माहात्म्य सुननेको मिलता है। तत्वज्ञान प्राप्त कर वे दोनों ऋषिके बताये मार्गसे ब्रह्मशक्तिका साक्षात्कार करते हैं। समाधिको मोक्ष-सिद्धि और सुरथको भोग-सिद्धि उपलब्ध होती है। कहा भी है कि—

"श्री सुन्दरी साधन-तत्पराणां,
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ।"

सामाजिकता

दुर्गा सप्तशती ग्रन्थमें सामाजिकताके गम्भीर सिद्धांत एवं मानव-बुद्धिकी विशेषता भी वर्णित है। मानव-जीवन किम्बा प्राणि मात्रकी पहली आवश्यकता क्या है? भोजन। उस भोजनरूप प्रश्नके निवारणका परिष्कृत रूप है—व्यक्तिगत सम्पत्ति। इसीका प्रौढ़रूप है, राष्ट्रीय सम्पत्ति और विराट् रूप है—महालक्ष्मी। इनकी रक्षाके लिए 'शक्ति' की ही परमावश्यकता होती है; नहीं तो 'चिड़ियां चुग गई खेत'—उक्ति चरितार्थ होने लगेगी। इस रक्षा-शक्तिके तीन रूप दृष्टिगोचर होते हैं—१. व्यक्तिगत शक्ति, २. सुसंगठित सामूहिक शक्ति और ३. विराट् (महालक्ष्मी) शक्ति। शक्ति और सम्पत्तिके सम्मेलनसे 'पशुशक्ति' का विकास होता है। इसका प्रयोग मानव और पशु—दोनों एक रूपसे करते हैं। जो मानव पशुशक्ति तक ही अपनेको विकसित करता है, वही 'दानव' कहलाता है; जैसे रावण, कंस आदि। आधुनिक युगमें प्रायः सभी पश्चिमी राष्ट्र रावणादिकी ही कोटिमें गिने जा सकते हैं। मानवता और दानवताके पार्थक्य-निदर्शन के हेतु शांतिपूर्ण विवेकशक्तिकी आवश्यकता होती है। जिस का व्यष्टि रूप है—व्यक्तिगत विद्वत्ता, समष्टिरूप है—विद्वानोंकी सभा, विद्यालय, पुस्तकालय, 'श्रीस्वाध्याय' जैसी सांस्कृतिक पत्र-पत्रिकाएँ आदि और विराट्रूप है—महा सरस्वती। मानवताको परम पवित्र और दिव्य करनेके लिए ही महाशक्तिकी आराधना 'महालक्ष्मी, महासरस्वती और महाकाली'—इन तीन रूपोंमें करनेका विधान है।

श्रीदुर्गाकी मूर्ति और उसका वाहन आदि

सगुण साकार उपासना पद्धतिके क्रममें श्रीदुर्गाशक्तिकी मूर्ति आदिकी कल्पनाएं भावपूर्ण हैं। दुर्गाकी मूर्ति समष्टि शक्ति या राष्ट्रशक्तिका प्रतीक है। इसका वाहन केसरी (सिंह) है—अर्थात् चूंकि व्यक्तिका समष्टिरूप राष्ट्र होता है; अतः जिस व्यक्तिमें या राष्ट्रमें शरीरबल, बुद्धिबल और आत्मबल सिंहके समान होगा, उसीमें या उसी पर दुर्गाशक्ति उपविष्ट होगी। सभी दिशाओंमें फैली हुई राष्ट्रशक्ति ही माता दुर्गा की चार, आठ, दश या सहस्र भुजाएं हैं और दिग्पालोंके अस्त्र—वज्र, खड्ग आदि इसके अस्त्र हैं। महिषासुर-राष्ट्र का विरोधी तत्व है, जिसका संहार शक्ति करती रहती है।

क्रमिक विकासका चित्रण

सप्तशतीके श्लोकोंमें समाजकी अविकसित, अर्धविकसित और पूर्ण विकसित—तीनों दशाओंका अर्थात् क्रमिक-विकासका सजीव चित्रण प्राप्त होता है। अविकसित दशाका रूप है—मधु कैटभकी कथा। इस रूपमें केवल पशुबल किम्बा शारीरिक बलका प्रदर्शन होता है। बुद्धिबल काम नहीं करता। एकान्तमें मधु-कैटभ एक निस्सहाय व्यक्ति को (ब्रह्माको) देखते हैं और बिना कारण ही उसे मार डालने को टूट पड़ते हैं। निस्सन्देह यह मानव-समाजकी आदिम अविकसित दशाकी घटना है।

महिषासुर कांड

'अपनी डफली अलग बजाने' की फुटकर मनोवृत्तिसे होने वाली हानि को व्यक्तिने समझा और अब संभलकर समष्टिरूपमें (संघटनरूपमें) अपने को आगे बढ़ाया तो उसे पर्याप्त सफलता मिली—इसकी झलक हमें महिषासुर काण्ड से मिलती है। दानवी हरकतोंसे तंग आकर, देवगण अपने नेताओं (ब्रह्मा विष्णु, महेश) के पास आत्मरक्षाके उपाय जानने पहुँचे। महिषासुर पर देव नेताओंको तीव्र रोष हुआ! उनके शरीरसे निकली हुई ज्योति पर्वताकार-सी जलने लगी और एकता भावसे एक नारीके रूपमें परिणत हो गई। उसका प्रकाश तीनों लोकमें व्याप्त हो गया।

निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत।
अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्॥
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्त लोकत्रयं त्विषा।

देवताओंमें जिनके पास जो कुछ बलप्रद वस्तु थी, वह सब देकर सभीने एकता देवीका सम्मान किया। प्रसन्न होकर देवी अट्टहास करने लगी। संग्राम छिड़ा। महिषासुर का बध हुआ। देवगण विजय पाकर शांतिकी सांस लेने लगे। यह व्यक्ति-व्यक्तिकी शक्तिका संग्रहकर समष्टिके रूपमें या संस्थाके रूपमें समाजका संघटन करनेका शुभ फल है। सभी सदस्य जब किसी संस्था को अपनी सम्पूर्ण शक्ति प्रदान कर देते हैं, तो वह संस्था चमक उठती है और शक्तिशालिनी बनकर गर्जन करने लगती है। फिर तो उससे

संसारके राजरोगकी औषधि भारतके पास है

[लेखकः—श्री निरंजन शर्मा अजित]

[इस समय विश्वमें एक विचित्र भय और आतङ्कका सा साम्राज्य है। स्वेज और हंगरीकी समस्या तथा बड़े देशोंकी साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा न जाने कब विश्वको विनाशकी ओर ले जाये यह कौन कह सकता है ? ऐसे समयमें केवल भारत ही एक ऐसा राष्ट्र है जो अपनी तटस्थ नीति से सबके आकर्षण एवं आशाका केन्द्र बना हुआ है। 'पंचशील' के रूपमें मानवताके संरक्षण का जो अमर सन्देश संसारको भारतने दिया है—वही एक मात्र अवलम्ब इस भयंकर आंधी और तूफान भरे समयमें लोगोंको दिखलाई दे रहा है। प्रस्तुत लेखमें विश्वको विनाशसे बचानेमें कौन सी शक्ति समर्थ हो सकती है इसी प्रश्न प्रहेलिकाका समाधान सुन्दर शब्दोंमें श्रीवेंकटेश्वर समाचारादि कई पत्रोंके भू० पू० यशस्वी सम्पादक विद्वान् लेखक श्री अजितजी ने किया है।

—सम्पादक]

लुकमान हकीमका नाम प्रायः सबने ही सुन रखा है, क्योंकि हमारे देशमें यह कहावत प्रसिद्ध है कि "इस बहमकी दवा तो लुकमानके पास भी नहीं है।" बहमके सिवा सब रोगोंकी रामबाण औषधि लुकमानके पास थी।

संघटक सदस्यों को स्वतः कल्याणकी प्राप्ति हो जाती है।

शुम्भ-निशुम्भ

सामाजिकताका विकास शुम्भ-निशुम्भकी कथामें अपनी पूर्णावस्था को प्राप्त हुआ जान पड़ता है। शुम्भ-निशुम्भ दो थे। दोनोंने मिलकर अपने दलका आश्चर्यजनक संघटन कर रक्खा था। उनके दलका "रक्तबीज" बड़ा विलक्षण है। तात्पर्य कि जहां एक (रक्तबीज) गिरता था, वहां अगणित लोग उसकी जगह पर जान देने को जुट जाते थे। अद्भुत एकता, अद्भुत बल वीर्य और अद्भुत क्षमता थी उनमें। देवी तो अकेली थीं; किन्तु आवश्यकता पड़ते ही उन्होंने असंख्य शक्तियोंके रूपमें अपने को प्रदर्शित कर दिया। राक्षसोंका नाश हुआ। केवल 'शुम्भ' बच गया था। उसने कहा—देवि, तुम तो अनेक हो; मैं हूं अकेला। ऐसी दशामें युद्ध नीति पूर्ण कैसे ? देवीने अपनी विस्तृत शक्तियोंको अपनेमें ही समेटकर कहा—ठीक, यह लो मैं भी अकेली हूँ। फिर युद्ध हुआ। शुम्भ भी मारा गया।

शुम्भ-निशुम्भ-युद्धके वर्णनसे स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत शक्तियां अनन्तरूपमें प्रकट हों और आवश्यकता पड़ते ही वे (अनन्त शक्तियां) एकत्रित हो जांय तो यह सामाजिक संघटनकी चरम सीमा कही जायगी। वस्तुतः ऐसे ही गठन में देवी और मानवी शक्ति अन्तर्निहित है। "या देवी सर्व भूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै......।" ऐसा कहकर देवीरूपमें मानवी शक्ति और मानवीशक्तिके रूपमें देवीकी उपासना की जाती है। इस प्रकार दुर्गा सप्तशती-कथा प्रतीकात्मक रूपमें एक लौकिक रहस्यसे भरी है। अध्यात्म-दृष्टिसे किम्बा उपासनात्मक सिद्धांतके विभिन्न दृष्टिकोणोंसे भी हम दुर्गा सप्तशतीमें परम रहस्यका बोध कर सकते हैं। जैसे रावणने भेदबुद्धिसे रामकी उपासना की, तद्वत् साधक यहां महिषासुर है, जिसे माताने प्रसन्न होकर सायुज्यमुक्ति प्रदान की। यह पशुभाव मूलक उपासना हुई। सोहंभाव द्वारा उपासना करने वाला 'वीर साधक' धर्म स्वरूप है—सिंह। जिसके बारेमें "धृतं येन चराचरम्" कहा गया है। अस्तु, इस प्रसंग को स्थानाभावके कारण यहीं समाप्त कर सारांशरूपेण एक विद्वान्के शब्दोंमें हम इतना ही ध्यान रक्खें कि 'वेदान्त वेद्य ब्रह्म' ही दुर्गा है। पुरुष या स्त्री—जिस रूपमें रुचि हो, उसीमें उसकी चिंतना की जा सकती है। अथवा रूपहीन चिदानन्दका ही ध्यान किया जा सकता है।" कहा भी गया है—

पुरुषं वा स्मरेद् देवि स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत्।
अथवा निष्कलं ध्यायेत् सच्चिदानन्द लक्षणम्॥

इतना जानते हुए भी यह बात बहुत ही कम व्यक्तियोंको विदित है कि लुकमान खाली आयुर्विज्ञानाचार्य ही नहीं, अपितु वैज्ञानिक गुणी महापुरुष थे। पर उन दिनों पाशविक वृत्तियोंका प्रभाव परमोच्च सीमापर पहुँचा हुआ था। वह गौरवर्ण न होकर हट्टे-कट्टे और काले कलूटे थे। इसका परिणाम यह हुआ कि एकबार लोगोंने इनको भी पकड़कर गुलामोंके बाजारमें पशुकी भांति बेच दिया। यह महात्मा बिककर एक दुराचारी रईसके क्रीतदास (गुलाम) बन गये। उन्होंने गुलामीके दिन सचाईके साथ स्वामीकी सेवा करते हुए परम सन्तोषसे निकालने शुरू किये। तब स्वामीने इनको गुलामोंका सरदार बना दिया। स्वामीको इनपर पूर्ण विश्वास हो चुका था। एकबार उसने इनसे कहा कि हमारे असुक-असुक खेतोंमें तुम स्वयम् अपनी निगरानीमें गेहूंकी कृषिका प्रबन्ध कर दो। "यथा ज्ञापयति भवान्" कहकर लुकमानने सरदारके खेतोंमें हल चलवाकर 'जौ' के बीज बो दिये। किसीने मालिकको यह बुरी बात सुना दी। उसने इनको बुलाकर खूब डाट बतायी।

सरदारः—"बड़ा मूर्ख है, तूने गेहूंकी जगह जौ क्यों बो दिये?"

लुकमानः—"यह सच है कि गेहूंके नामपर तो मैंने जौ ही डाले हैं—पर आप विश्वास रखिये कि फसल काटेंगे, तो हमारे कोठे गेहुंओंसे भर जायेंगे।"

सरदारः—महामूर्ख कहींके, गेहूं कैसे हो जायेंगे। जौ बोये हैं, तो जौ ही उपजेंगे।"

लुकमानः—"ठीक उसी तरह, जिस तरह आप पाप-पंकमें और दुराचारमें निमग्न रहते हुए भी इस लोकमें यश और परलोकमें सुख पानेकी आशा करते हैं—ठीक इसी तरह मैं भी यह आशा करता हूं कि जौ बोये गये हैं, तो भी गेहूँकी फसल होगी।"

सरदारको समझ आ गयी। उसने कहा—भले आदमी तूने मेरे हृदयके पट खोल दिये हैं, सच बता, तू गुलाम है या कोई वैज्ञानिक मेरा उद्धार करनेके लिये चला आया है।

अन्तमें लुकमानने अपनी रामकहानी कह सुनायी और कहा कि भगवान्ने यह भी अच्छा ही किया कि मुझे दुःखमें डालकर भी आपको सन्मार्ग-प्रदर्शनका सुख प्रदान कर दिया। अन्यथा आपके दर्शनोंका भी मुझे सौभाग्य न मिला होता।

संसारका स्वीकृत सिद्धान्त

इस समय संसारका स्वीकृत सिद्धान्त लुकमानके नुस्खे वाला ही तो है। पाप करते हुए सभी पुण्यसे भी अधिक सुखद फल पानेकी कल्पना रखते हैं। राष्ट्रोंकी राजनीति भी यही है। अशान्तिके बीज बोते चले जाते हैं, फिर शान्तिका सुख मानकर मजलिस करते हैं राष्ट्रसंघोंकी। जितने राष्ट्र शान्ति-समारोहोंका जितना अधिक नाम लेते हैं, वे सब, घरोंपर उतने ही अधिक बमगोले बनवानेका प्रबन्ध करके इन मजलिसोंमें आते हैं। कसाईपनके कामकी चीजें तैयार करनेमें राष्ट्रीय शक्तियां लगी रहती हैं—फिर दूसरोंके घरोंमें एकत्र सम्पत्तियोंपर दांत जमाते फिरते हैं।

गम्भीरतापूर्वक विचार करनेपर यह विदित होता है कि संसारकी सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक रचना आमूल परिवर्तन चाहती है। आमूल परिवर्तन चाहने वालोंमें रूसका सर्वाग्रागण्य नुस्खा लुकमानके नकली नुस्खेसे भी अनोखा है—"सिर दर्द करता हो, तो सिर न रहे—दांत दुखता हो, तो दांत न रहे—आंख दर्द करती हो, तो आंख न रहे"—इस प्रकारका लासानी नुस्खा सोवियट रूसके पास है। धर्ममें पाखण्ड और पापका अंश आ गया है; अतः धर्मका नाम ही मिटा देना चाहिये। पाप और पुण्यका भेद नदारद हो जायेगा। सब धार्मिक दृष्टिसे समान हो जायेंगे। नीतिका स्तर निम्नतम रखनेसे कोई किसीको बड़ा-छोटा न समझेगा। हो गयी सामाजिक समस्या हल। व्यापार और उद्योग सरकारके हाथमें रख दिये जानेपर सब ही नंगसनंग चवाल सो—सब ही श्रमिक, सब ही किसान सब ही नौकर-चाकर। सब राष्ट्रोंको कम्युनिस्ट बना डाला जाये—तो हो गयी राजनीतिक समस्या हल। न रहेगा बांस; न बजेगी बांसुरी।

साम्यवाद घोर अशान्तिकी जड़ है

यदि संसार भरमें साम्यवादकी स्थापना हो जाये, तो कदाचित् राष्ट्रीय संग्रामोंकी सम्भावना कम भी हो जाये—दुर्जन-तोष-न्यायसे। पर इन दिनों तो यह वस्तु अलभ्य ही है। इस अलभ्यको प्राप्त करनेके लिये सोवियटका नुस्खा है—घर-घरमें घोर घृणा, प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या-द्वेष और वर्ग संघर्ष। वर्ग-संघर्षका अर्थ होता है गरीबों-अमीरों, पूंजी वालों और श्रमिकोंका कभी समाप्त न होने वाला कुहराम।

यह आन्तरिक राष्ट्रीय नीति हुई। राष्ट्रोंकी मजलिसमें नुस्खा और भी उग्र हो जायेगा। (१) प्रत्येक देशमें गुप्तरूपेण तबाही और जासूसी जाल-प्रसारके लिये कम्युनिष्ट पार्टी स्थापित हुई है। (२) प्रत्येक देशको पंजेमें फांसनेके लिये आन्तरिक और बाह्य कुचक्र, धमकियां और शस्त्रास्त्रका बाहुल्य भी है। रूस कभी यूरोपमें पैर बढ़ाता है, तो कभी एशियामें। अफ्रीका और अमरीका भर केवल आन्तरिक षड्यन्त्रके कुचक्रसे बचे हैं—शेष संसार द्विविध कुचक्रसे पीड़ित है। पर, प्रचार इतना अच्छा है कि सारा पाप दूसरोंके शिर मढ़ दिया जाता है।

माना जा सकता है कि पूर्व-व्यवस्थाएं सुधार चाहती हैं—वर्त्तमान जीर्ण-शीर्ण अवस्थामें न तो वे रह सकती हैं और न उनको रखना हितावह है। पर रूसवाला नुस्खा इस रोगकी दवा कदापि नहीं है। रूस और एशिया एवं यूरोपके अर्ध भागमें सोवियट तन्त्र चलता है, कुल २४—२५ वर्षसे रूस इस लासानी हकीमी नुस्खेसे इलाज कराता चला आ रहा । पर वहां न तो सुख है, न शान्ति है, न नैतिकता है और न गुणोंका विकास है। पति-पत्नी जुदे-जुदे वकील रखते हैं—दनसे नोटिस, दन्नाटेसे मुकदमा और फिर तलाक! राष्ट्रीय रूपमें सारी शक्ति २—२॥ सौ जवानोंके हाथमें है। बेटा बापके विरुद्ध जासूसी करनेकी प्रेरणा करता है और पुरस्कार पाता है—पति पत्नीके विरुद्ध जासूसी करता है। सारे अफसरों पर जासूस नियत हैं। सर्वोपरि शासकके रूपमें दर्जनभर व्यक्ति हैं। इनमें जो सर्वसत्ताधारी जनता है, वह अपने उन सब मित्रोंकी सपार्षद बलि चढ़वा देता है, जिनको वह कभी समानता कर सकनेवाला गिनने लगा हो। दो-चार दर्जन नामी राजनेताओंको किसी भी दिन (फायरिंग स्क्वैड) सैनिक अग्निवर्षासे भून डाला जाता है।

जब काबेमें ही कुफ्र फैल रहा है, तब फिर अन्यत्र शान्ति-सुख रूसके नुस्खेसे कैसे फैल सकता है?

सच्चा इलाज भी है

सच्चा इलाज भारतके नुस्खेसे हो सकता है—पर नेहरूजी द्वारा भारतीय नुस्खा बताकर जिसका प्रयोग किया जा रहा है, वह कोई नयी औषधि नहीं है। उसको तो आप किसी दूसरे रंगकी बोतलमें भरी हुई पहले नुस्खे वाली खाली समझें।

हर हालतमें हम मूल भारतीय नुस्खेकी बात कर रहे हैं—पर इसके सम्बन्धमें दो भारी असुविधाएं हैं—

१—यह कि लोग प्रयोगसे पहले ही कहने लगते हैं कि इसी वाहियात इलाजसे तो भारतका नाश हुआ था। अतः लोगोंको बताना होगा कि सत्यानाशका कारण भारतीयता न होकर पाप-प्रवृत्तियोंके प्रति अतिशय सदय भाव रखना ही था।

२—दूसरी असुविधा यह है कि हमारे पास ऐसे नेताओंका अभाव है, जो भारतीय तत्वके जानकार हैं और विदेशोंमें विदेशी भाषाका आश्रय लेकर सन्देश पहुंचा सकते हैं!

भारतीय नुस्खा

आन्तरिक राष्ट्रीय समस्याओंके लिये—

(१) राग-द्वेष-ईर्ष्यासे दूर रहकर उदार धर्म और नीतिका पालन।

(२) विद्वानों और सच्चरित्रों द्वारा अनुमोदित शासन और न्याय-व्यवस्था—(मुण्ड-मण्डलीके बहुमतसे नहीं)।

(३) धनोपार्जनकी सबको समान छूट पर अमुक परिमाणमें धन हो जानेपर यज्ञादिके हीले दरिद्रोंको शक्तिदानकी व्यवस्था।

(४) चारों वर्ण अपने-अपने निश्चित कार्यमें ईमानदारी और प्रेमसे संलग्न रहें।

(५) अन्यान्य धर्मावलम्बी दूसरोंके धर्मकार्योंमें बाधा न देते हुए अपने-अपने विश्वाससे कार्य करते रहें।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था

(१) सारा संसार वर्ण और आश्रम व्यवस्था को उसकी उपादेयता और उसकी विशिष्टता समझ कर अपना ले। इससे दो भारी लाभ होंगे—(क) वर्गवादके नामपर मजदूर-मालिक-संघर्षकी अन्त्येष्टि हो जायेगी, (ख) और नियत समयपर वानप्रस्थ एवं सन्यस्त आश्रम स्वीकार करते रहनेपर नयी पौदको नौकरियां देनेके लिये ५०।५० साला भले आदमियोंको नौकरीसे अलग करनेमें हैरान न होना पड़ेगा।

(२) धार्मिकता भरी भारतीय उदारतासे जिहाद और क्रूसेडप्रभृति गंदगीका नाश हो जायेगा। हिन्दू धर्मके मूल

सिद्धान्त ही ऐसे हैं कि उन्होंने कभी किसीके धर्मस्थान, धर्मग्रन्थ और धर्मानुयायियोंपर अत्याचार नहीं किया। धर्मरहित समाज और राष्ट्र पापी-चोर-अपकारी और कृतघ्नों की मण्डली बन जाया करते हैं। धर्मके नामसे तोबा कर लेनेके बाद ही रूसमें सगे भाई-बहन परस्पर विश्वास नहीं रख सकते।

(३) तीर्थयात्रा निमित्त कोई भी किसी देशमें अबाधित रूपमें आ जा सकता है—विद्योपार्जनके लिये भी पूरी छूट हो। व्यापारादिके लिये मर्यादातिक्रमण दण्डनीय हो··· इससे सैनिक-जासूसी-षड्यन्त्रों और कुचक्रोंका नाश हो जायेगा।

(४) अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक आदर्शवाद तोड़ दिये जायें—इण्टर नेशनल पार्टियां भी वर्जित कर दी जायें। इनसे उन सब देशोंमें षड्यन्त्रपूर्वक कुचक्र चलते हैं, जहांके प्रजाजन सीधे-सादे, भोले, सन्तोषी और परिश्रमी हैं।

(५) सेनाएं—सैनिक जातियां और सैन्यसञ्चालनके साथ ही सब राष्ट्रोंकी सीमाएं निश्चित कर दी जायें—उन सीमाओंको पार करना अखिल संयुक्त राष्ट्रसंघसे दण्डनीय करार दे दिया जाये—किसी भी समय किसी भी आदर्शवाद या पार्टीबाजीके हीलेसे सीमाति-क्रमणकारी राष्ट्रके विधायकोंको भारी दण्ड दिया जाये। थोड़ेसे ऐसे ही नियम और भी बनाये जा सकते हैं। इसके बाद अपने-अपने घरमें अपनी-अपनी रीतिसे सब राजी रहेंगे। अन्तर्जातीय धर्म-प्रचारसे तबतक कोई हानि नहीं होती, जबतक उसको राजनीतिक षड्यन्त्रका दास न बना लिया जाये। इससे अच्छा नुस्खा इस रोगका और कोई नहीं है।

खतरेका स्वरूप सबको समझा दो

मनुष्यता भारी खतरेमें है, यह तात सबको समझा देना चाहिये। भारतीय नुस्खा मनुष्यमेंसे पशुताका अंश निकालनेका आयोजन सर्वप्रथम करता है। पर आज तो पशुताका अंश रखने और न रखनेवाले सभी मृत्युके मुखमें जाते हुए नजर आते हैं। इसके लिये भारतीयताकी रीतिसे (१) युद्ध-विद्याको (२) युद्धके उद्देश्योंको (३) युद्धकी विधियों और युद्धके चेत्रोंको भी मर्यादित करना होगा। गत महायुद्धमें अणु-बम सदृश भीषणास्त्रोंसे असंख्य नर-नारी मारे गये थे, जो वास्तवमें युद्धलिप्त न थे। फिर अगणित सुयोग्य राजनेता और सेनाधिपतियोंके साथ ही कारखानेदारोंको 'युद्धापराधी' कहलाना और प्राण गंवाना पड़ा था। इसके बाद जो युद्ध होगा उसमें कदाचित् (थोड़ी रियायत हो तो) विजयी राष्ट्र वाली राजनीतिक पार्टीके सिद्धान्तोंके अनुयायी ही जीवित रह सकेंगे—शेष सब युद्धापराधी माने जाकर गोलीसे उड़ा दिये जायेंगे–या फांसीके तख्तोंपर लटका दिये जायेंगे। इसके बाद विजयी राष्ट्र, पराजित राष्ट्रके प्रत्येक नर-नारीको अपराधी मानकर उसकी सारी सम्पत्ति लूट लिया करेगा, जो युद्धकी तबाहीसे बच जायेगी—प्राणोंका कोई मूल्य न होगा।

अब अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति-पार्टी, अणु-हाइड्रोजन बम सहित सर्वग्राही होकर चलेगी। सैनिक भी दण्ड पायेंगे; व्यापारी भी दण्ड पायेंगे, कारखानोंमें काम करनेवाले श्रमिक भी मारे जायेंगे—सब युद्धके अपराधी गिने जायेंगे। उधर पराजय होनेसे पूर्वतक प्रत्येक नर-नारीको देशभक्ति—पार्टी-सिद्धान्त भक्तिके नामपर बलात् युद्ध-कार्यमें सहयोग देना ही पड़ेगा।···हमें आश्चर्य होगा, यदि भविष्यमें (यही गति रही तो) पराजित राष्ट्रोंके सब अध्यापक, वक्ता, लेखक और स्वदेशभक्त कवि युद्धापराधनिर्णायक न्यायालयोंमें पेश होकर फांसियां पाते नजर न आयेंगे तो···।

जापानका राष्ट्र-धर्म

[लेखक—श्री मगनलाल पी० दोशी]

[जापान बड़ा ही पुरुषार्थी राष्ट्र है, प्रत्येक जापानी व्यक्ति अपने परिश्रमसे ही अपना जीवन यापन करना पसन्द करता है—यही कारण है कि पिछले महायुद्धमें जर्जरी भूत होने पर भी जापान थोड़ेसे समयमें ही पर्याप्त प्रगति कर चुका है। उसकी इस कर्तृत्व शक्तिका लोहा संसार के सारे राष्ट्र मानते हैं। विश्वका शायद ही कोई ऐसा देश हो जहां जापानकी कोई न कोई वस्तु विक्रयार्थ न पहुंची हो। प्रस्तुत लेखमें भारतीयोंको अनुकरण योग्य इसी जापानी-अध्यवसाय की एक झलक पाठक प्राप्त कर सकेंगे, ऐसा हमारा सुनिश्चित अनुमान है। —सम्पादक]

संसार और एशियाके देशोंमें अपनी प्रजाकी विशिष्टता के कारण जापानका महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्तिके विकासके साथ वहांकी प्रजा राष्ट्रकी वफादारीके लिये कितनी जाग्रत है, इसका वर्णन वहांके एक अनुभवी व्यक्ति द्वारा यहां दिया जाता है। युद्धमें नष्ट हुआ जापान थोड़े ही समयमें पुनः उन्नत हो गया है। १९४७ ई० की १५वीं अगस्तको स्वतन्त्र हुए अपने देशकी प्रजाको अभी कितना कार्य करना है, इसका इस लेखसे कुछ मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

जापान शीण्टो और बौद्ध-धर्म-प्रधान देश है। ये दोनों ही धर्म प्रायः बराबर हैं और भारतीय धर्मसे भी सुसंगत हैं। गत कुछ वर्षोंसे जापानमें ईसाई-धर्म भी फैला है। हमारे देशमें धर्मगुरु अधिकतर जो शिक्षा धर्म मान कर देते हैं, वैसी शिक्षा तो जापानके लोग प्रतिदिनके व्यवहारमें प्रयोग करते हैं। जापानियोंका प्रतिदिनका व्यावहारिक-जीवन ऐसा है कि उसे हम जापानका राष्ट्र-धर्म मान सकते हैं।

सत्यका सम्यक् पालन

जापानमें कोई भी झूठ नहीं बोलता और वहांके प्राथमिक या धार्मिक शिक्षणमें "सत्य बोलना चाहिये, झूठ नहीं बोलना चाहिये" की कोई भी शिक्षा नहीं देता। सभी मनुष्य सत्य बोलते हैं। उदाहरणके लिये हम यदि किसीको नौकरीके लिये बुलाते हैं, तो वह स्वयं जितना जानता है उतना ही कहेगा। वह नौकरी पानेके लिये झूठ नहीं बोलेगा। उसे दिये गये कार्यका यदि अनुभव नहीं होगा, तो वह तुरन्त कह देगा कि 'अन्य चतुर व्यक्तिको रखिये'। संक्षेपमें जापानके लोग झूठ बोलना जानते ही नहीं।

अहिंसाका पालन

भारतीय दृष्टिसे यदि हम अहिंसाका विचार करें तो जापान अहिंसक नहीं है और उसी तरह भारत भी अहिंसामय नहीं है। यदि हम भारतका राजनीतिक अहिंसाकी दृष्टिसे विचार करें, तो जापान पूर्ण अहिंसक है। वहां कभी भी किसीकी न तो हत्या ही की जाती है और न कभी गोलीकाण्ड ही होता है।

अपरिग्रहका पालन

भारतीय धर्मकी दृष्टिसे अपरिग्रह एक श्रेष्ठ धार्मिक व्रत गिना जाता है। अपरिग्रह अर्थात् किसी वस्तुका व्यर्थ संग्रह न करना, अनावश्यक वस्तुओंका संग्रह न करना। ऐसा अपरिग्रह-व्रत जापानके लोगोंमें दैनिक व्यवहारमूलक साधारण वस्तु है।

उदाहरणतया धनी जापानी-कुटुम्बका कोई व्यक्ति अपने लिये दो या तीन जोड़े कपड़ेसे अधिक नहीं रखता। अच्छा धनवान् कुटुम्ब भी मोटर नहीं रखता। देशकी टैक्सियोंको वे अपनी ही मोटर समझते हैं। तिजोरी तो बैंकके अतिरिक्त भाग्यसे ही किसीके यहां देखनेको मिलेगी। अनावश्यक वस्तुओंको वे लोग नहीं खरीदते।

क्रोधका सर्वथा अभाव

जापानियोंको क्रोधित होना या क्रोध करना आता ही नहीं। नौकर यदि भूलसे चार-पांच हजारका नुकसान कर

देता है, तो उसका स्वामी क्रोधित नहीं होता। घरमें कार्य करते समय नौकरसे प्याला-तश्तरी टूट जाने पर मालकिन भी क्रोधित नहीं होती।

दो मोटरोंसे आमने-सामने कभी आकस्मिक घटना होनेवाली हो, तो दोनों ही ड्राइवर मोटरें खड़ी करके क्षमा मांगकर शान्तिके साथ चले जाते हैं। इस प्रकारकी क्षमा याचनाको जापानकी भाषामें "गोमेन नासाई" कहते हैं। किसी दुकानदारका सन्दूक रास्तेपर पड़ा हो, तो ड्राइवर तुरन्त उतर कर सन्दूकको एक किनारे रख अपना रास्ता पकड़ेगा, किन्तु सन्दूकके मालिकको न गालियां देगा और न उसके ऊपर क्रोध ही करेगा।

जापानमें अपने पच्चीस वर्षोंके निवासके समय मैंने किसीको लड़ते-झगड़ते नहीं देखा। किसीको 'गाली देना' तो आता ही नहीं, 'गाली देना' ये शब्द जापानकी भाषामें ही नहीं है। जापानमें किसीको मूर्ख कहना सबसे बड़ा अपमान समझा जाता है। इसीको बड़ी से बड़ी गाली भी कह सकते हैं।

चोरीका नाम-निशान नहीं

जापानमें चोरी या लूट कोई नहीं करता। वहांकी पुलिस-कोर्टमें ऐसी कोई भी घटना नहीं आती। यदि कोई ऐसा केस आ भी जाये, तो वहां भयंकर दण्ड दिया जाता है।

कोई भी परदेशी पूर्ण स्वतन्त्रतासे चोरी, लूट आदि की शंकासे रहित अपने घरके द्वार खोलकर जापानमें रह सकता है। चोरीके अपराधकी जांचके लिये वहां खुफिया पुलिसका विभाग ही नहीं है। किसी व्यक्तिको कोई वस्तु रास्तेमें, मोटरमें, रेलगाड़ीमें या अन्यत्र कहीं भी मिल जाये, तो वह तुरन्त ही पुलिस-स्टेशनमें जाकर दे देता है। फिर चाहे उसमें नकद रोकड़ हो या जवाहरात हों। पुलिस-विभाग उस वस्तुको रेडियोसे सूचित करके मालिकको दे देता है।

'दगा किसीका सगा नहीं'—यह कहावत हमारे यहां तो साधारण है, किन्तु जापानमें दगा करना कोई नहीं जानता। वहांके लोग दूध, मक्खन या अन्य किसी भी वस्तुमें मिलावट नहीं करते। तौल में या मापमें कोई जरा भी कम नहीं देता। वस्तुओंके भाव सभी ग्राहकोंके लिये एक ही हैं। ईर्ष्या, द्वेष, निन्दा आदि मनोविकारोंसे जापानके लोग एकदम अज्ञात हैं।

जागरूक विवेक

जापानके लोग विवेकमें बहुत आगे बढ़े हुए हैं। सम्पूर्ण संसारमें श्रेष्ठ समझी जानेवाली 'दुश्मनको वशमें करो' की कहावत जापानमें पूर्णतया व्यवहारमें देखनेमें आती है। वहां अपना ही नौकर यदि अन्य कार्य करता हो, उस समय मालिकको पीनेका पानी देता है, तो मालिक उसका बड़ा आभार मानता है। उस आभारको, अंग्रेजीमें जिसे 'थेंकयू' कहते हैं, जापानकी भाषामें 'अरी गातो' कहते हैं।

जूठन न छोड़ना

जापानमें जूठन नहीं छोड़ते। पांच सौ मनुष्योंके भोजमें आपको दो-चार सेर जूठन देखनेको भी नहीं मिलेगी। घरमें भी जूठन नालीमें फेंकनेके लिये बचाई नहीं जाती।

अपने भारतवासी जापानमें रसोई करनेके लिए जापानकी छोकरियोंको रखते हैं। वे छोकरियां घरमें पूछकर ही भोजन बनाती हैं। इतना अधिक भोजन नहीं बनातीं, जिससे बादमें नालियोंमें फेंकना पड़े। यदि कभी भूलसे बने हुए अधिक भोजनको फेंकना पड़ा, तो वे जापानी छोकरियां बहुत नाराज होतीं हैं। वे अपने देशका नुकसान समझती हैं।

स्वदेशाभिमान

जापानके लोगोंमें स्वदेशाभिमानकी मात्रा अधिक पायी जाती है। वे अपने ही देशमें बनी हुई वस्तुओंको प्रयोगमें लाते हैं और अपने देशके प्रति वफादार रहते हैं। ऐसे व्यावहारिक जीवनवाले जापानियोंको यदि हम सर्वगुण-सम्पन्न कहें, तो इसमें थोड़ी भी अतिशयोक्ति नहीं। जापानी सत्य बोलना, चोरी न करना, अपरिग्रह रखना, क्रोध, ईर्ष्या आदि न करना आदि व्रतोंके पालक कहे जा सकते हैं।

संसारमें आज जापान प्रगति पथपर बढ़ रहा है। उसके कारणोंमें जापानके ऐसे राष्ट्र-धर्मका, व्यावहारिक जीवनका और देशाभिमानका अग्र भाग गिना जा सकता है।

पिछले विश्व-युद्धके बाद और जापानमें अमेरिकनोंके आनेके बाद जापानकी नीतिको बड़ा भारी धक्का लगा। फिर भी जापान अपने असल स्थान पर पुनः जा रहा है।

कम्यूनिज्म कम्यूनिज्म है; साम्यवाद नहीं

[लेखक:—आचार्य श्री अभयदेवजी]

आजकल कम्यूनिज्म ज्वलन्त चर्चाका विषय है। चर्चा का ही नहीं, किन्तु भयका भी विषय हो रहा है। कारण सम्पूर्ण चीन देशके कम्यूनिष्टों द्वारा अधिकृत हो जानेसे तथा ब्रह्मा, स्याम और इण्डोचीन पर भी इसका प्रभाव पड़ते जानेसे इस गंभीर संकटके बादल हमारे भारत देशके ऊपर भी मंडराने लगे हैं। तिब्बतके द्वारसे यह भारत में प्रविष्ट होना चाहता है। देशका विभाजन हो चुका है; भारत-राष्ट्रमें कम्यूनिष्ट-विद्रोह भावना बढ़ती जा रही है। उसके परिणाम-स्वरूप यह बहुत सम्भव है कि कम्यूनिष्ट लोग समीपवर्ती राष्ट्रोंकी भांति भारतमें भी अन्तर्विग्रह करें।

सशस्त्र आक्रमणसे पहिले भावनाओं और विचार-प्रवाहोंके द्वारा जो आक्रमण हुआ करते हैं, वे तो भारत पर बहुत पहलेसे आरम्भ हो चुके हैं। दश बारह वर्ष पूर्व जब मैंने सबसे पहले यह देखा था कि गेरुआ वस्त्र पहिने हुए (क्योंकि गेरुवे वस्त्रके प्रति आम जनतामें अब भी बहुत आदर-भाव है) कुछ युवक साधु भी ग्राम-ग्राममें कम्यूनिज्म का प्रचार कर रहे हैं, तो मैंने मान लिया था कि सचमुच भारतको भी कम्यूनिज्मका खतरा हो गया है और इससे देशको बचानेके लिये विशेष यत्न करनेकी आवश्यकता है। इतना ही नहीं, कि हमारे देशके कुछ संन्यासी भी कम्यूनिज्मके प्रचारक तथा उपदेशक हो गये हैं; अपितु हमने तो कम्यूनिज्मके लिये एक सुन्दर हिन्दी या संस्कृत शब्द भी गढ़ लिया है—साम्यवाद। कम्यूनिज्मको साम्यवादका नाम दे देनेसे तो ऐसा लगता है कि मानों कम्यूनिज्म कोई हमारे देशकी ही बहुत अच्छी वस्तु हो। पर कहां 'साम्य' और कहां 'कम्यून'। संस्कृत पढ़े हुए लोग जानते हैं कि हमारे भगवद्गीता आदि सम्मान्य ग्रन्थोंमें तो 'साम्य' शब्द बहुत ऊँचे और पवित्र अर्थोंमें प्रयुक्त हुआ है। जैसे 'येषां साम्ये स्थितं मनः' 'समत्वं योग उच्यते'। सो कम्यूनिज्म द्वारा जो एक मोटी और केवल आर्थिक और वह भी अधूरी समता (साम्य) अभिप्रेत है उसे 'साम्य' नाम देना कितनी भारी विडम्बना है। यह तो ऐसा ही है, जैसे जमाये हुए तेलको 'घी' 'वनस्पति' का नाम देकर आम जनताको धोखे में डाला जा रहा है। लोग ऐसी बातें सुनकर सचमुच बहुत धोखेमें आ जाते हैं कि इस 'वाद' के द्वारा धनी-निर्धन (अमीर-गरीब) सब एक हो जायेंगे, साम्य हो जायेगा, वह कितना अच्छा होगा। पर भोले-भाले लोग यह नहीं जानते कि जिस सुन्दर साम्यावस्थाको वे लाना चाहते हैं, जिस नये युगके लिये वे तरसते हैं, उसका कम्यूनिज्मसे कोई सम्बन्ध नहीं। यदि सम्बन्ध है तो उलटा अर्थात् कम्यूनिज्मके आनेसे तो वह पुण्ययुग और दूर चला जायेगा।

भारत-भूमि वस्तुतः कम्यूनिज्मके लिये तनिक भी उर्वरा भूमि नहीं है। भारतकी अपनी संस्कृति, जो प्राचीनकालसे सतत परिपुष्ट होती चली आ रही है, आध्यात्म-प्रधान संस्कृति है। वह कम्यूनिज्मकी सहज विरोधिनी है। इसलिये जब तक भारत अपने आपको ही खो न दे; तबतक कम्यूनिज्म यहाँ पनप नहीं सकता। फिर भी, आज जो हमारे देशके बहुतसे युवक प्रौढ़ तथा वृद्ध लोग भी कम्यूनिज्मके पक्षमें बोलते हुए दिखायी देते हैं या उससे सहानुभूति प्रकट करते हैं, उसका मुख्य कारण यह है कि वे

हमारे स्वतन्त्र होनेके बाद हमारे राष्ट्रकी नींव सत्य और अहिंसासे डाली गई है; किन्तु हम अपने देशके प्रति वफादार नहीं बन सके। सत्य तो हमारे यहां इतना मूल्यवान् बन गया है कि सत्य बोलनेवाला सन्त, साधु या मुनि महात्मा कहा जाता है और हिंसाका तो कोई हिसाब ही नहीं, बम्बई-जैसे नगरमें दो-चार हत्या प्रतिदिन होती ही रहती हैं और छुरा मारनेकी बात तो साधारण हो गई है।

अपने राष्ट्रकी उन्नतिके उसे समृद्धिशाली बनानेके अपनी असली नीतिको स्थायी रखनेके लिये हमें जापानके ऐसे व्यावहारिक जीवन, स्वदेशाभिमान राष्ट्र धर्मको अपनाना चाहिए।

—

उसकी झूंठी चमकसे या बाह्याडम्बरी रूपरेखासे अभिभूत हो गये हैं। कम्यूनिज्मसे जो पूंजीवादके अभिशापसे मुक्ति होती दीखती है और निर्धन लोगोंको राहत और सन्तोषकी एक आशा दिखायी देती है, उससे वे भ्रान्त हो जाते हैं। पर इस ऊपरी चमकके पीछे जो श्रमिक वर्ग (मजदूरों) की अन्ध तानाशाही, वर्ग-विद्वेषका हाहाकार तथा अनीश्वरवादका विष भरा हुआ है, वह हमें दिखायी नहीं देता है। तानाशाही तो कोई भी सत्य नहीं हो सकती; पर शूद्र की (जिस शूद्रको भारतीय व्यवस्था किसी भी प्रकार नीचा नहीं मानती, वह अपने स्थान पर हमारे समाज का एक अत्यन्त आदरणीय अंग है) तानाशाही तो ब्राह्मण (ज्ञानी) की तानाशाहीसे अधिक ही अनर्थकारी होगी और वर्गहीन समाजकी जो बात कही जाती है, वह केवल कल्पना ही कल्पना है एवं वर्ग विद्वेष कभी भी स्थायी सत्य नहीं है; बल्कि हमारे वर्ण धर्ममें जो सामञ्जस्य है, वही स्थायी सुख-शान्तिका स्रोत हो सकता है। इसी प्रकार आर्थिक जड़-समताकी जगह आर्थिक सहयोग तथा सामञ्जस्य ही समाजको विकसित और उन्नत कर सकता है और फिर अर्थ (धन) चाहे कितनी ही, आवश्यक वस्तु हो, पर वह सब कुछ तो नहीं है। इसीलिये हम देखते हैं, कि धनगर्द्धा ('मा गृद्धः कस्यस्विद् धनम्'का विरोधी भाव) पर धन—लिप्सापर आधारित कम्यूनिज्म मानवके अन्य सब ऊँचे भावोंकी उपेक्षा करता है। पर इसी में कम्यूनिज्मकी सबसे बड़ी खराबी छिपी हुई है, कि यह मानवके उच्च भावोंका आध्यात्मिकता आदिका विरोधी है। यह जड़वाद तथा अनीश्वरवाद पर आश्रित है। यही इसका विष है, जिसके कारण यह जिस एक आंशिक, आर्थिक सत्यको प्रकट करता है, वह भी विषैला हो जाता है। आध्यात्मिकता तो दूर रही, मनुष्यमें जो धर्मकी भावना है, उसे भी कम्यूनिज्म नहीं सह सकता। कम्यूनिष्ट लोग किसी नैतिकता पर भी नहीं ठहरते। यह तो उनके द्वारा भारतमें की गई तोड़-फोड़की नानाविध कार्यवाही तथा अपने ही देशके वासियोंको ध्वस्त करने वाले रेलकी पटरियोंको उखाड़ने जैसे जघन्य कृत्योंसे स्पष्ट हो चुकी है और रूसने जो धर्ममात्रका बहिष्कार करनेका बीड़ा उठाया और उसके लिये पूरा यत्न भी किया है; उसमें उसे सफलता चाहे थोड़ी ही मिली हो। इसके विपरीत सचाई यह है, कि कम्यूनिज्मके आदर्शमें जो एक वैयक्तिक सम्पत्ति-रहित समाजकी कल्पना है, वह यदि कहीं कुछ अंशमें सफल हो सकती है या हुई है, तो वह धार्मिक भावोंसे प्रेरित किसी संगठनमें ही हुई है या हो सकती है। हमारे देशके ऋषि-आश्रम तथा गुरुकुल इसके उदाहरणके रूपमें कहे जा सकते हैं, जहां कि राजकुमार तथा निर्धन बालक समभावसे एक होकर रहते थे और विकासको प्राप्त करते थे। पर उसी धर्मको कम्यूनिज्म मूर्खता बताता है और आध्यात्मिकताको भ्रम या बहम।

तो स्पष्ट होता है, कि यह कम्यूनिज्म नामक वाद मानव-जातिके लिये कितनी घातक वस्तु है। पर साथ ही यह भी स्पष्ट है, कि भारतवर्ष स्वयं ही और अपनी संस्कृति के ही द्वारा उस बुराईका वस्तुतः और पूरी तरह मूलोच्छेद कर सकता है जिसकी चिकित्सा (इलाज) अज्ञानवश कम्यूनिज्मको समझा जा रहा है।

इसलिये आइये आज हम यह अनुभव करें कि भारत का आत्मा आज दृढ़ भावसे ललकारता हुआ जगत्को कह रहा है—

कम्यूनिज्मकी बढ़ती चली आती हुई लहरें और चाहे कहीं बेशक पहुंचें और वहां स्वागत भी पा सकें; पर उन्हें मेरे भारतके तपः पूत तथा अध्यात्म-प्रतिबद्ध तटसे टकराकर लौट ही जाना होगा। यहां वे अपना प्रपंच नहीं फैला सकेंगी। और कम से कम यह तो आज हममेंसे प्रत्येकको, भारतमाताके प्रत्येक पुत्रको भली प्रकार समझ ही लेना चाहिये कि कम्यूनिज्म कम्यूनिज्म है। वह कोई साम्यवाद जैसे पवित्र शब्दसे कहे जाने योग्य वस्तु नहीं है और भारत भारत है, वह प्राचीनकालसे अखण्ड रूपसे चली आ रही अपनी आध्यात्मिक संस्कृतिमें पगा हुआ भारत है, कोई रूस नहीं है।

—

जनतन्त्र राज्य अभिशाप या वरदान ?

["गणानां त्वा गणपतिं हवामहे" प्रभृति वैदिक मंत्रोंमें प्राचीन भारतीय गणराज्योंका उल्लेख हुआ है तथा तत्कालीन शासन व्यवस्थाका भी निदर्शन मिलता है; भारतीय राष्ट्रमें गणराज्य प्रणाली ही इस समय अपनाई गई है—इस प्रणालीमें व्याप्त न्यूनताओं तथा गणराज्यकी विशिष्टताओं पर प्रस्तुत लेखमें प्रकाश डालनेका प्रयत्न किया है। गणराज्योंकी मीमांसामें अभिरुचि रखने वाले सज्जनोंके लिए यह लेख पठनीय है।

—सम्पादक]

भारतमें जनतंत्र राज्योंकी प्रणाली बहुत पुरानी है, जिस कालका इतिहास तक हमें उपलब्ध नहीं होता अथवा वर्तमान इतिहासज्ञ जिस कालको अन्धकार युग कहकर पुकारते हैं उस समय भी गणतंत्र राज्योंकी प्रथा थी और निर्वाचनों द्वारा निर्वाचित नेता 'गणपति' नामसे पुकारा जाता था। केवल गणपति ही नहीं अपितु पदाधिकारियोंकी नियुक्ति भी बहुमतके आधार पर ही होती थी। गुरुकुलोंमें दर्शन, नीति, विज्ञान, कला एवं शस्त्रास्त्र संचालन आदि सभी विषयोंकी शिक्षाका पूर्ण प्रबन्ध रहता था उन गुरुकुलों से विविध विषयोंमें पारंगत स्नातकोंमें प्रतियोगितायें होती थी और दर्शक जन-समुदाय बहुमत द्वारा अधिकारी व्यक्तियोंका निर्वाचन करके उन्हें कार्यभार सम्भालनेकी प्रार्थना करते थे। इस प्रकार योग्य अधिकारियोंके हाथों में उत्तरदायित्वपूर्ण पद सौंपकर जनता तन-मन धनसे उसके साथ सहयोग करती थी। यही कारण है कि उन गणतंत्र राज्योंमें सुख समृद्धि एवं संगठन शक्तिकी अटूट धारणायें निरन्तर बहती रहती और अपने पड़ोसी देशोंको भी उनसे तृप्त करती रहती थी। यदि दुर्भाग्यवश कभी कोई निर्वाचित नेता अपने कर्तव्यसे च्युत हो जाता, अपने कार्योंमें संकीर्ण भावनाओंको स्थान देने लगता, कुटुम्ब पोषणमें अपने अधिकारोंका प्रयोग करने लगता, अथवा क्षुद्रता (कमीनेपन) का प्रदर्शन करने लगता तो जनता तत्क्षण उसे पदच्युत कर कठोर दण्डकी व्यवस्था करती और बहुधा वह दण्ड देश निकालेके रूपमें दिया जाता था।

विश्वके सर्व प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेदमें बहुत स्थानों पर जनतंत्र राज्योंका वर्णन और उसके लाभोंका विस्तृत वर्णन मिलता है। जैसे—

समानी प्रपा सहवोऽन्नभागा
. समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चः सपर्यताऽग्निम्
विश्वा नाविव दुरितान्यग्निः॥

गणतंत्र राज्यकी प्रजाको सम्बोधित करते हुए कहा गया है—"तुम्हें पृथक्-पृथक् अपने लिए अन्न जल आदि की चिन्ता नहीं करनी पड़ती, तुम सब कर्तव्यके बन्धनमें समान रूपसे बंधे हो, अर्थात् अपना नियमित कार्य करते रहो, सब प्रजाजन संगठित होकर अपने देशके कल्याणके लिए सहयोग करें और ईश्वरको स्मरण करना न भूलें। तुम्हारी संगठित शक्ति सम्पूर्ण विघ्न-बाधाओंको दूर करके निश्चित ध्येय तक तुम्हें पहुंचा देगी, जैसे नावके द्वारा सभी गम्भीर नदीसे पार हो जाते हैं।"

गुप्त साम्राज्य तक जन-तंत्रका ही भारतके सब भागोंमें प्रचलन था। ग्रामोंकी पञ्चायतें उन्हीं जनतंत्र राज्योंका अवशेष चिह्न हैं जो अब अति संकीर्ण रूपमें प्रायः भारतीय ग्रामोंमें सर्वत्र देखनेमें आती है।

मत दाताओंका कर्तव्य

प्राचीन गणतंत्रके मतदाता भले ही ग्रेजुएट या डिग्रीधारी न हों, किन्तु उनमें इतनी योग्यता अवश्य होती थी कि अमुक व्यक्ति शीलवान् उदार चरित और देशके गौरवका संरक्षक होने योग्य है। उनमें उस व्यक्तिके साथ कभी भी अपने स्वार्थका गठबन्धन करनेकी कल्पना तक न थी। वे निश्चित रूपसे समझते थे कि अनुचित अनधिकारी व्यक्तिको मत देना देशद्रोह करना है। इसीलिए वर्तमान दृष्टिकोणसे अशिक्षित होते हुए भी उनका निर्वाचन इतना परिपूर्ण और समुचित होता था कि उसके लिए उन्हें

पश्चात्ताप करनेके बहुत कम अवसर मिलते थे।

वर्तमान कालका भूखा नंगा स्वार्थी मतदाता इतना अनुत्तरदायी चरित्र-हीन हो गया है कि चायकी प्याली, शराबके प्याले, दो चार बिस्कुट या समोसों पर मुग्ध होकर अपना मत जिस किसीको देनेमें संकोच नहीं करता। वह नहीं समझता कि कितना जघन्य पाप, देशके साथ विश्वास घात वह कर बैठा, अनधिकारीको अपना मत देकर गरम चायकी चुस्कियोंमें आत्मसम्मानको ही नहीं बेच रहा है अपितु राष्ट्रके साथ भी कितना धोखा, विश्वासघात कर रहा है। चरित्रहीन मतदाताओं द्वारा चुने गये चरित्रहीन व्यक्तियों के नेतृत्वसे चरित्रहीन राष्ट्रका ही निर्माण हो सकता है।

गणतंत्र राज्य महान् वरदान है जब कि देशभक्त एवं शिक्षित नागरिकों द्वारा देशके नेताओंका चुनाव हो, किन्तु गणतंत्र राज्योंके स्वर्गीय सुख नारकीय ज्वालाओंमें भी बदल जाते हैं यदि अशिक्षितोंके मतदानसे धूर्त व्यक्तियोंका चुनाव हो जाता है और वे जनतामें एकताकी भावना भरनेके बदले दैशिकता प्रान्तीयता आदि क्षुद्र भावोंको उभार कर अपने अधिकारोंका प्रयोग स्वार्थ पूर्ति और कुटुम्ब पोषणमें ही करने लगता है।

विश्व नागरिक और अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यके सूर्य जार्ज बर्नार्डशा ने कहा है कि "जहां मतदात मूर्ख होते हैं वहां धूर्त प्रत्याशी (उम्मीदवार) अवश्य सफल होते हैं।"

इस प्रकार एक पिछड़े प्रदेशके निर्वाचित नेताको दूसरों के अधिकारोंका हनन करते देखकर श्री 'शा' ने उसे चेतावनी देते हुए कहा—"तुम्हारी मूर्खता को क्षमा किया जा सकता है किन्तु स्मरण रखो क्षुद्रता (कमीनेपन) को किसी भी दशामें क्षमा नहीं किया जा सकेगा।"

आदर्श विधान एवं आदर्श वाक्योंका प्रयोग किसी भी राज्यकी उन्नतिमें तभी सहायक हो सकते हैं जब उनके पालन करने और कराने वाले दोनों ही अपने देशके प्रति विश्वसनीय हों।

हमारे सामने ऐसे भी कुछेक उदाहरण है जहां गणतंत्रके नाम पर कुछ इने गिने व्यक्तियोंका बोलबाला है। प्रजाको स्वेच्छानुसार कुछ भी कहने करने या सोचनेका अधिकार नहीं, तलवारों और बन्दूकोंकी छत्र छायामें मूक और भयभीत प्रजा भेड़ बकरियोंकी भांति जीवन घड़ियां रो रो कर बिता रही हैं। अधिकारियोंसे असहमत व्यक्तियों को छल कपट अथवा न्यायका झूठा अभिनय करके समाप्त कर दिया जाता हैं। एक सर्वे सर्वा व्यक्तिकी व्यक्तिगत इच्छाओं पर करोड़ों व्यक्तियोंके भाग्यको बांध दिया जाता है। फिर भी वह गणराज्य है? ईश्वर बचाये ऐसे जनतंत्र राज्योंसे।

आजके दो महान् राष्ट्र जो अपनेको गणतंत्र राज्योंका आदर्श माने बैठे हैं, भयंकर तृतीय विश्व-युद्ध छेड़नेकी पूर्ण तैयारी किये, बहानेकी प्रतीक्षामें बैठे हैं। जिस परमाणु युद्धसे विश्वभरमें भयंकर प्रलय हो जानेकी पूर्ण संभावना है, यदि उन्होंने अपने इस भीषण संकल्पसे पहिले अपने मतदाताओं वा अपने राज्यकी प्रजासे जिन्हें इस भीषण संग्राम में एक क्षुद्र आहुति बनकर अपने अस्तित्वको सदाके लिए मिटवा देनेके सिवाय और कोई चारा नहीं, पूछा होता तो वे कभी भी युद्धके पक्षमें मत न देते। किन्तु तृतीय विश्व-युद्धसे कुछ इने-गिने व्यक्तियोंके अहम्की तुष्टिके सिवाय किसे क्या लाभ होनेकी संभावना है?

निःसन्देह इस समय स्वीजरलैंड जैसे कुछ इने-गिने गणतंत्र राज्य वस्तुतः प्रतिनिधि राज्य कहे जा सकते हैं, वहांकी प्रजामें चरित्र है इमानदारी है परस्पर भ्रातृत्व है और नेतागण देशके वास्तविक प्रतिनिधि हैं। भारतकी भाँति तटस्थ वह राज्य विश्वशान्तिमें योग देता आया है और दे रहा है, प्रायः शान्ति योजनायें उसी देशमें बनीं।

वर्तमान भारतीय जनतन्त्रमें अंगुलियों पर गिने जाने वाले सर्वसम्मत कुछ कर्णधार इस देशका गौरवपूर्ण प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और उन्हींके कारण देश सम्मानित एवं विश्व भरकी शान्तिका एकमात्र केन्द्र-बिन्दु बना हुआ है।

निर्वाचन प्रणालीमें कुछ आवश्यक परिवर्तन करने आवश्यक हैं जिसमें प्रत्याशी (उम्मीदवार) की योग्यताका निर्धारण, उनके गत जीवनका लेखा-जोखा और मनोविज्ञान द्वारा उसकी मानसिक स्थितिका विश्लेषण करनेके अनन्तर ही उसे उम्मीदवार खड़ा किया जाना चाहिए। ऐसे निर्वाचित नेता ही भारतीय प्रान्तों एवं केन्द्रकी प्रजामें सुख समृद्धि और शान्तिका विस्तार करके अन्य देशोंमें गणतंत्र राज्योंके आदर्श स्थापित कर सकते हैं।

—

श्रीभगवत्साक्षात्कारके बिना जीवन व्यर्थ

[लेखकः—भक्त श्री रामशरणदासजी]

धर्म प्राण भारतमें जन्म लेना, मनुष्य योनिका मिलना, और हिन्दू जातिमें पैदा होना तथा सनातनधर्मी घरानेमें जन्म लेना यह डंकेकी चोट सूचित करता है, बताता है कि तेरे जीवनका एक मात्र असली उद्देश्य बस श्री भगवत्साक्षात्कार करना है और कुछ नहीं। श्रीभगवत्कृपासे धर्मप्राण भारतमें जन्म लिया, मनुष्य बने, और हिन्दू जातिमें पैदा हुये और सनातनधर्मी पतिव्रता माताकी कोखसे उत्पन्न हुये फिर भी यदि हमने श्रीभगवत्साक्षात्कारके लिये प्रयत्न नहीं किया और यूँ ही दिन रात खाने पीनेमें, बच्चे बच्ची पैदा करनेमें, धन माल कमानेमें ही समय गँवा दिया तो हमने मानो कुछ भी नहीं किया और व्यर्थ ही मनुष्य जन्म लिया, इससे तो पशु पक्षी, कुत्ते कुतिया बन जाते तभी ठीक था। भला एक पशु पक्षीमें और हममें फिर अन्तर ही क्या रहा? जो काम खाना पीना, सोना, जागना बच्चे बच्ची पैदा करना पशु करता है यदि वही हम भी करते हैं तो हममें और पशुमें भेद ही क्या है? मनुष्य जीवनकी तो यही एक मात्र विशेषता है कि जिस प्रकार भी हो और जैसे भी हो धर्माचरण करे और श्रीभगवत्साक्षात्कार कर अपना मनुष्य जन्म सफल करे।

जिस प्रकार अमरीकाका प्राण धन है यदि अमेरिकामें धन नहीं तो अमेरिका मुर्दा है। जिस प्रकार पैरिसका प्राण फैशन है यदि पैरिसमें फैशन नहीं तो पैरिस मुर्दा है। जिस प्रकार जापानका प्राण कारीगरी है यदि जापानमें कारीगरी नहीं तो जापान मुर्दा है इसी प्रकार भारतका प्राण धर्म यदि भारतमें धर्म नहीं तो भारत मुर्दा है और फिर भारतकी कोई विशेषता नहीं कोई महत्ता नहीं। आज भारतके प्राण धर्मको ही मिटानेके लिये इन नेता नामधारी जन्तुओंने कमर कसी हुई है और भारतके धर्मको समाप्त कर इसे मुर्दा बनाने पर तुले हुये हैं। मेरे इस धर्मप्राण भारतमें ही यह अद्भुत खूबी है और भारतकी अद्भुत दिव्य मिट्टीमें ही यह एक मात्र विशेषता है कि यहाँ पर पैदा होने वाला बहुत जल्दी ही श्रीभगवत्साक्षात्कार कर सकता है और श्री भगवत्प्राप्ति कर सकता है। और किसी भी देशमें क्या काबुल क्या तुर्की ईरान, क्या इंग्लैण्ड अमेरिका, जर्मनी जापान, क्या रूस फ्रांस आदिमें यह विशेषता, यह खूबी नहीं है जिस प्रकार मेरे दिव्याति दिव्य देश भारतकी विशेषता है। दूसरे देशोंमें किसीको, सबको तो श्री भगवत्साक्षात्कार करनेका सौभाग्य क्या प्राप्त होगा वहाँ पर तो किसीको व्यक्तिगत भी भगवत्साक्षात्कार नहीं होता और न हुआ और न होगा। उन बेचारे इंग्लैण्ड, अमेरिका तुर्की काबुल ईरान, रूस, फ्रांस, जर्मनी जापान आदि देशोंमें कभी आज तक भगवान्‌का अवतार नहीं हुआ, इसलिये उन्हें सामूहिक रूपसे श्रीभगवत्साक्षात्कार करनेका भी सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ। उनके यहां तो किसी देशमें आया खुदाका बेटा और किसीमें आया खुदाका दूत, खुदाका पैगम्बर, पर खुदा खुद नहीं आया इसलिये उन्हें खुदाके बेटेसे, खुदाके दूतसे, पैगम्बरसे ही संतोष करना पड़ता है। व्यक्तिगत भी उन्हें श्रीभगवत्साक्षात्कार नहीं होता, उन्हें खुदाका दीदार नहीं होता बस केवल मात्र खुदाका जलवा नजर आता है, खुदा दिखलाई नहीं देता। इनका निराकार खुदा बेचारा दिखलाई भी दे तो कैसे दिखलाई दे, जब कि वह साकार हो ही नहीं सकता। और जो खुदाके ऐसे नालायक बेटे हैं कि जो खुदाकी बनाई गौडकी बनाई गैया-मैयाको खा जाते हैं, उनकी बोटी बोटी चबा जाते हैं और जो दिन रात अण्डे मुर्गी मुर्गे चट कर जाते हैं, मछली बकरे सबको खा जाते हैं, सताते हैं, जो पशु, पक्षी, कीट पतंगको सताते हैं और लाखों जीवोंको खा खाकर अपने पापी पेटको कब्रिस्तान बनाये हुये हैं ऐसे जालिमोंसे भगवान् भला कैसे बातें कर सकते हैं?

भारतमें सबको श्रीभगवत्साक्षात्कार

इसके विपरीत भारतमें एक ऐसा अद्भुत दिव्य समय आता है कि जब समूचे भारतका भाग्योदय होता है और उस समयके प्रत्येक स्त्री पुरुषके, बच्चे बूढ़ेके, पशु पक्षी, कीट पतंगके, जड़ और चेतनके सभीके भाग्योदय होते हैं

और महान् पुण्योदय होते हैं कि जब एक साथ सामूहिक रूपसे सबको श्रीभगवत्साक्षात्कार होता है और खूब भगवान्को देखने, बातें करने भगवान्के साथ खेल कूदनेका सौभाग्य प्राप्त होता है। वह दिन आता है और एकमात्र भारत में ही आता है और किसी भी देशमें नहीं आता, कि जब मेरी धर्मप्राण देवभूमि, दिव्य , ऋषिभूमि, अवतार भूमि भारतकी श्रीअयोध्याजीमें चक्रवर्ती सम्राट महाराज दशरथके आंगनमें अनंतकोटि ब्रह्माण्डनायक जगन्नियन्ता साक्षात् परब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीराम लक्ष्मण, भरत-शत्रुघनके रूपमें छोटेसे, चुनमुनियासे लाला बन कर छुम छुम करते घूमते हैं। सारे भूमंडल पर मेरा दिव्यदेश भारत ही ऐसा देश है कि जो भारतका सम्राट सारे विश्वके सामने गर्वके साथ डंकेकी चोट कहता है—

जाकर नाम सुनत शुभ होई।
मोरे गृह आवा प्रभु सोई॥

ऐ दूसरे देश वाले लोगों! लो देख लो ब्रह्मको, कर लो ब्रह्मसाक्षात्कार, यह देखो मेरी गोदीमें ब्रह्म बैठा हँस रहा है। भारतकी ही माता श्रीकौशल्या, सुमित्रा, कैकैयी थीं—कि जिनकी कोखसे अनंतकोटि ब्रह्माण्डनायक प्रगट होता है और यहांकी कौशल्या माता सारे भूमंडलको, सारे लोक-लोकान्तरोंको अपनी गोदमें लेकर एक चीज दिखाती है—

व्यापक ब्रह्म निरंजन निरगुन विगत विनोद।
सो अज प्रेम भगति बस कौशल्याकी गोद॥

ब्रह्मको गोदीमें लेकर खड़ी हो जाती है, लो देखोजी ब्रह्मका दीदार कर लो बातें कर लो। धन्य भारत भूमि जिस भूमि पर ब्रह्म—

कौशल्या जब बोलन जाई।
ठुमुक-ठुमुक प्रभु चले पराई॥

ठुमुक-ठुमुक कर प्रभु चलते हैं। है ऐसा सौभाग्य और किसी देश को? छोड़ दो ज्ञान, ध्यान, त्याग तपस्या, छोड़ दो समाधि लगाना योग साधना, चलो श्री अयोध्याजीमें देखो महाराज दशरथजीको—

अवधेस के द्वारें सकारें गई,
सुत गोद कै भूपति लै निकसे।
अवलोकि हौं सोच ... को,
ठगिसी रही जेन ठगे धिकसे॥

तुलसी मनरंजन रंजित अञ्जन,
नैन सुखंजन जातक से।
सजनी ससिमें समसील उभै,
नवनील सरोरुह से विकसे॥

एक सखी कहती है मैं सवेरे अयोध्यापति महाराज दशरथके द्वार पर गयी थी। उसी समय महाराज पुत्रको गोदमें लिये बाहर आये। मैं तो उस सकल शोकहारी बालकको देखकर ठगी सी रह गई। उसे देखकर जो मोहित न हो उन्हें धिक्कार है।

पग नूपुर औ पहुंची करकंजनि,
मंजु बनी मनिमाल हिएँ॥
नवनील कलेवर पीत झंगा,
झलकै पुलकैं नृप गोद लिएँ॥
अरविन्द सो आनन रूप मरन्द,
अनंदित लोचन भृंग पिएँ।
मनमें न वस्यौ अस बालक जौं,
तुलली जगमें फलु कौन जिएँ॥

वह महाराज दशरथकी गोदमें ब्रह्म कैसा था जरा सुनिये तो—उस बालकके चरणोंमें घुंघरू, कर कमलोंमें पहुँची, और गलेमें मनोहर मणियोंकी माला शोभायमान थी। उसके नवीन श्याम शरीर पर पीला झँगुला झलकता था। महाराज उसे गोदमें लेकर पुलकित हो रहे थे। उसका मुख कमलके समान था जिसके रूप मकरन्दका पानकर देखने वालोंके नेत्र रूप भौरें आनंदमग्न हो जाते थे। श्री गोसांईजी कहते हैं यदि मनमें ऐसा बालक न बसा तो संसारमें जीवित रहनेसे क्या लाभ है?

देखा भारतके सनातनधर्मी हिन्दुओंका ब्रह्म साक्षात्कार। अरे एक ही नहीं ब्रह्म चारों भाईके रूपमें छम-छम करते घूम रहे हैं। जरा सुनिये तो मेरी मीठी मीठी रसीली बातें और जरा हो जाइये पागल श्री रामललाके प्रेममें—

तनकी दुति स्याम सरोरुह,
लोचन कंजकी मंजुल ताई हरैं।
अति सुन्दर सोहत धूरि भरे,
छवि भूरि अनंगकी दूरि धरैं॥
दमकैं दँतियां दुति दामिनी ज्यों,
किलकैं कल बाल विनोद करैं।

अवधेसके बालक चारि सदा
तुलसी मन मन्दिरमें बिहरैं ॥

उनके शरीरकी आभा नीलकमलके समान है तथा नेत्र कमलकी शोभाको हरते हैं। धूलिसे भरे होने पर भी वे बड़े सुन्दर जान पड़ते हैं और कामदेवकी महति छविको भी दूर कर देते हैं। उनके नन्हें-नन्हें दांत बिजलीकी चमकके समान चमकते हैं और वे किलक-किलक कर मनोहर बाल-लीला करते हैं। अयोध्यापति महाराज दशरथके वे चारों बालक तुलसीदासके मन मंदिरमें सदैव बिहार करें।

भारतमें ब्रह्म ताली बजा-बजा कर कैसे नाचते हैं जरा और मीठी बात सुन लीजिये—

कबहुँ ससि मांगत जारि करैं,
कबहुँ प्रतिबिम्ब निहारि डरैं।
कबहुँ करताल बजाइ कैं नाचत,
मातु सबै मन मोद भरैं ॥
कबहूं रिसि आई कहैं हठि कै,
पुनि लेत सोई जेहि लागि अरैं।
अवधेशके बालक चारि सदा,
तुलसी मन मन्दिर में बिहरैं ॥

कभी चन्द्रमाको मांगनेका हठ करते हैं, कभी अपनी परछाहीं देखकर डरते हैं, कभी हाथ से ताली बजा-बजा कर नाचते हैं जिससे सब माताओंके हृदय आनंदसे भर जाते हैं। कभी रूठ कर हठपूर्वक कुछ कहते (मांगते) हैं और जिस वस्तुके लिये अड़ते हैं उसे लेकर ही मानते हैं। अयोध्यापति महाराज दशरथके वे चारों बालक तुलसीदासके मनमंदिरमें सदैव विहार करें।

इतना ही नहीं ब्रह्म चौराहों पर, गलियोंमें, बाजारों में भी घूम रहे हैं और सारी नगरी ब्रह्म साक्षात्कार कर रही है, यह है मेरे देशका परम सौभाग्य जिसे देखिये तो—

पद कंजनि मंजु बनी पनहीं,
धनुहीं सर पंकज पानि लिए।
लरिका संग खेलत डोलत हैं,
सरजू तट चौहट हाट हिए ॥
तुलसी अस बालक सों नहि लेहु,
कहा जप जोग समाधि किए।
नर वे खर सूकर स्वान समान,
कहौ जगमें फलु कौन जिए।

उनके चरण कमलोंमें मनोहर जूतियां सुशोभित हैं, वे करकमलोंमें छोटा सा धनुषवाण लिये हुये हैं, बालकों के साथ श्री सरयूजीके किनारे, चौराहे, और बाजारोंमें खेलते फिरते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं यदि ऐसे बालकोंसे प्रेम न हुवा तो बताइये जप योग अथवा समाधि करनेसे क्या लाभ है? वे लोग तो गधों, शूकरों और कुत्तोंके समान हैं, बताइये संसारमें उनके जीनेका क्या फल है?

बस इन अद्भुत दिव्य बालकोंसे ही प्रेम करो, जप तप समाधि लगाकर क्या करोगे। यहीं तक नहीं मेरे देश दिव्य भूमि भारतकी भीलनी थी जिसकी खोज करते, करते ब्रह्म राम लक्ष्मण स्वयं उसकी कुटिया पर पधारे। ब्रह्मके साक्षात्कारके लिये समाधी लगानी, योगसाधना करनी पड़ती है, पर वाहरे मेरे भारत, वाहरे सत्य सनातनधर्म, धन्य है तुझे यहां उल्टी बात हो गई, ब्रह्म स्वयं भीलनीका साक्षात्कार करने जा रहा है और भीलनीके हाथोंसे मीठे-मीठे बेर खा खाकर प्रसन्न हो रहा है। इतना ही क्यों मेरे भारतके एक पक्षी गृद्धराज जटायुको अपनी गोदमें बैठा कर जटायुकी धूरको अपनी जटानसों झारते हैं यह है मेरे देशके पक्षीका परम सौभाग्य। पक्षीराज जटायु ब्रह्म रामलक्ष्मणका साक्षात्कार करते हैं और कहते हैं—

राम कहा तनु राखहु नाता।
मुख मुसुकाइ कही तेहिं वाता ॥
जाकर नाम मरत मुख आवा।
अधमउ मुकत होइ श्रुति गावा ॥
सो मम लोचन गोचर आगें।
राखौं देह नाथ केहि खांगें ॥

भारतका पक्षी डंकेकी चोट कहता है नाथ! तुम साक्षात् ब्रह्म मेरे सामने खड़े हो, इससे बढ़कर मेरा परम सौभाग्य और क्या होगा? अरे भारतका पक्षी बनना, कीड़ा मकोड़ा झाड़ फूंस बनना भी बड़े ही परम सौभाग्यकी बात है। यही ब्रह्म जब कभी भारतमाताके भाग्योदय होते हैं तो श्रीवृन्दावन धाममें श्री यशोदा नंदबाबाके आंगनमें, ब्रजकी रजमें छोटा सा लाला बन और पैरोंमें पैंजनियां बांध छम-छम करके घूमने लगता है और स्त्री पुरुष बालक बूढ़े, देवी देवता, पशु-पक्षी जड़-चेतन सभीको एक साथ ब्रह्मका

साक्षात्कार हो जाता है। भारतका कव्वा भी तो उस समय बड़े-बड़े योगियोंसे, ज्ञानियोंसे भी बढ़कर बाजी मार ले जाता है। जरा सुनिये मियां रसखानके मुखसे—

धूरि भरे अति सोभित स्यामजू,
तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना,
पग पैंजनि बाजति पीरी कछोटी॥
या छविको रसखान विलोकत,
वारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग बड़े सजनि
हरि हाथ सौं लै गयो माखन रोटी॥

यह है मेरे भारतके कव्वेका ब्रह्म साक्षात्कर करना। बड़े बड़े योगीन्द्र मुनीन्द्र सामने प्रसाद रखकर ध्यान करते हैं कि किसी प्रकार प्रभु पा लें तो हम उस प्रसादको पाकर कृत कृत्य हो जायं; पर वाहरे भारतके कव्वे, उल्टा ब्रह्मके हाथसे माखन रोटी छीनकर चम्पत हो गया। ब्रह्म साक्षात्कार तो किया ही और ब्रह्मकी खूब लीलायें भी देखीं पर ब्रह्म का जूंठा माखन रोटी खानेका मजा भी लूटा। देवी देवता भी इस कव्वेके भाग्यको देखकर धन्य धन्य कह उठे। भारतकी अहीरकी छोरियां ब्रह्म साक्षात्कार ही नहीं करतीं ब्रह्म श्रीकृष्णको, उस श्रीकृष्णको जिसे शेष महेश गणेश दिनेश दिन रात स्मरण करते हैं फिर भी दर्शन नहीं पाते, क्या कहती हैं जरा सुनिये ध्यानसे रसखानके मुखसे—

शेष महेश गनेश, दिनेश,
सुरेशहु जाहिं निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनन्त अखण्ड,
अछेद अभेद सुवेद बतावैं॥
नारद से सुक व्यास रटैं,
पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीरकी छोहरियां,
छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं॥
गावैं गुनि गनिका गंधर्व औ,
सारद सेस सबै गुन गावैं।
नाम अनंत गनंत गनेस ज्यों,
ब्रह्मा त्रिलोचन पार न पावैं॥
जोगी जती तपसी अरु सिद्ध,
निरंतर जाहि समाधि लगावैं।
ताहि अहीरकी छोहरियां,
छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं॥

देखा! यह है मेरी भारतकी हिन्दूललनाओंकी विशेषता जो ब्रह्मको भी सामने खड़ा करके नाच नचाती है। क्या है किसी भी देशमें ऐसी ललनायें, ऐसी माताएँ, ऐसे पशु पक्षी जो ब्रह्मका साक्षात्कार ही नहीं अपने सामने नाच नचायें। तभी तो भारतमें आकर मुसलमान संत नूरुद्दीन अपने देश पर, मजहब पर थूक कर और निराकार खुदाके झंझटसे बचकर कह उठा—

शवरी भिलनी जानि कै जूँठे खाये बेर।
नाविक जन सरणे रख्यो कहा यवन सौं वैर॥
कहा यवन सौं वैर जटायु खग थे प्राणी।
वानर और किरात उबारे जाण अजाणी॥
नूर फ़कीर जानैं नहीं जात वरन एक राम।
तुव चरनन में आयके अबतो कियो विश्राम॥

मियां कह रहे हैं, मेरे राम! जब तूने शवरी भीलनी, केवट, बानर, किरात सबको तार दिया तो मुझ यवन मुसलमानसे तेरा क्या वैर है, मुझे भी तार मैंने तो तेरे चरणोंमें ही विश्राम ले लिया है। इतना ही नहीं जब मुसलमान संत हुसैनखांको अपने देश मत मजहब कहीं पर भी श्रीभगवत्साक्षात्कार नहीं हुआ तो अंतमें वह भी भारतके सनातनधर्मकी शरणमें आकर पुकार उठा—

बालमुकुन्दा माधवा केशव कृष्ण मुरार।
यवन उधारन आइयै निर्लज नन्दकुमार॥
निर्लज नंदकुमार नाथ छोड़ो निठुराई।
दूध दही घृत खाय यादव तेरी चतुराई॥
हुसैन तेरा हो गया गिरधर गोविन्दा।
केशव कृष्ण मुरार माधवा बालमुकुन्दा॥

ऐ नंदकुमार यवनके उद्धार करनेके लिए आ। याद रक्खो जिस समय सारा विश्व घोर अंधकारमय था, और विदेशी लोग जंगली जैसी दशामें थे, तो मेरा धर्मप्राण जगद्गुरु भारत देश ही ऐसा अद्भुत दिव्य देश था, कि जिसने सारे विश्वको प्रकाश दिया था और यही एक ऐसा देश था, कि जिसके घरोंमें ब्रह्म लाला बना खेला करता था और समस्त देवी देवता अपने देवलोकोंको छोड़ छोड़कर भारतमें लालाकी लीला देखनेके लिये उतर आया करते थे। यही तो वह दिव्य भूमि है कि जहाँ पर ब्रह्म

कारक सूत्र विवेचन

[श्रीनारायण शास्त्री चुलेट]

[फलित ज्यौतिषमें कारक विचारका प्रमुख स्थान है। कारकोंका विचार शास्त्रोंमें अनेक प्रकारसे किया गया है। प्रस्तुत लेखमें श्रीचुलेटजीने इन्हीं कारकोंका विवेचन उपन्यस्त किया है। लेख ज्योतिष प्रेमियोंके लिये उपयोगी एवं लाभकारी सिद्ध होगा। —सम्पादक]

प्रकृत २४ सूत्रोंका स्पष्टीकरण करनेके पूर्व यह बताना उचित होगा कि यह कारक प्रणाली पूर्वाचार्योंका अनुकरण मात्र है। इसमें जातक ताजिक और जैमिनीय आदि आचार्योंकी प्रणालीका सम्मिश्रण किया गया है। यह प्रणाली जन्म, प्रश्न, और वर्षमें सर्वत्र उपयोगी है। इस प्रणाली द्वारा ग्रहोंके फल प्रतिशत प्रमाणमें स्पष्ट किये जाते हैं। ग्रहोंके आपसीय संबंध द्वारा अनेक फलोंकी विद्वान् ज्योतिषीको कल्पना करनी पड़ती है। प्रणालीमें ऐसी क्रियाको स्थान प्रायः नहीं दिया गया है, जो शास्त्र विरुद्ध एवं तथ्यहीन हो। प्रस्तुत प्रणालीकी उपपत्ति "कारक सूत्र सूत्र विवेचन" नामक लघु आलेखके स्वरूपमें दिखाई जा रही है। सूत्रोंकी व्याख्या इतनी महत्व का विषय नहीं है जितना उक्त प्रणालीकी उपपत्तिको समझना है। इस पर भी सूत्रोंका स्पष्टीकरण होना आवश्यक विषय हो जाता है। अतः सोदाहरण सोपपत्ति संमिश्रित प्रस्तुत प्रकृति २४ सूत्रोंकी क्रमशः व्याख्या की जायगी। आशा है विद्वज्जन इस लेखको ध्यानमें लानेका अवश्य प्रयत्न करेंगे।

सूत्र—"अथ कारकावलिः" ॥ १ ॥

चन्द्रिका—सूत्रकारने अथ इस मंगल वाचक शब्दका आरंभमें उच्चारण करते हुए अपने उद्देश्य विषयका भी दिग्दर्शन करा दिया है। यहां सूत्रमें "अवलि" इस पंक्ति-वाचक शब्दसे किसी मुख्य संख्या क्रमसे आशय है। सूत्र-कारका विषय द्वादश भाव और उनके फलोंकी उपपत्ति है। यहाँ द्वादश भावोंके अर्थमें सूत्रकारने द्वादश कारकोंका पंक्तिकरण किया है।

प्रथमादि भावोंके अर्थमें कारकत्व

(१) आत्मकारक, (२) अमात्य (अर्थ) कारक, (३) बंधुकारक, (४) मातृ कारक (५) विद्या (संतति) कारक, (६) व्याधा (स्वास्थ्य) कारक (७) स्त्री (व्यापार) कारक, (८) अरिष्ट (आयु) कारक, (९) भाग्य कारक, (१०) राज्य (पितृ) कारक, (११) आय कारक, (१२) व्यय कारक।

उपपत्ति भाष्य—

जैमिनी तथा पूर्वाचार्योंने सात अथवा आठ कारक कहे हैं। इन कारकोंका नामकरण उस अवस्थामें किया गया था, जब सात पश्चात् राहु सहित आठ ग्रहोंकी गतिविधिका

रामका विवाह तक हुआ है और समस्त देवी देवता बाराती बने हैं। यदि श्री भगवत्साक्षात्कार करना है तो एक दम विदेशोंकी ओर ताकना बन्द करो और व्यर्थ ही इंग्लैंड में जाकर खाक छानना बन्द करो और धर्मप्राण भारतमें रहकर ही धर्ममय जीवन व्यतीत करो और अहर्निश प्रभु का चिन्तन गुणगान करो। अरे उन देशोंमें क्या रक्खा है, खाली पशु जैसे नारकीय कीड़े रहते हैं जो माँस मछली खाना और शराबें पीना डांस करना, मर जाना ही जानते हैं और कुत्ते पालते हैं उनसे तुम ऋषियोंकी संतानोंका क्या काम? एक मुसलमान तभी तो कह उठा—

झोंपड़ी ब्रजमें बना ली जायगी।
आँख कावेसे हटा ली जायगी॥
मैं तो पूजूं कृष्णकी तस्वीरको।
खाक अब जन्नत पै डाली जायगी॥

बस भगवत्साक्षात्कार करनेका एक मात्र स्थान भारत है, बस इसीकी शरणमें रहकर सनातनधर्मानुसार चलकर भगवत्साक्षात्कारका प्रयत्न करो यही सबसे सुन्दर मार्ग है। भारतमें जन्म लेकर और मनुष्य योनि पाकर भी यदि हमने श्रीभगवत्साक्षात्कार नहीं किया तो हमारा मनुष्य जीवन व्यर्थ ही गया, इससे क्या लाभ प्राप्त किया।

शास्त्रकारोंको ज्ञान था। सात अथवा आठ ग्रह मात्र ही उस समयकी अवस्था थी। सात ग्रह ही साधन मात्र थे। आचार्योंका उद्देश्य उस अवस्थामें अपूर्ण रहा है। कारण आचार्योंको क्रमशः भावोंके प्रति कारक निश्चित करनेका किसी भी प्रकारका साधन नहीं था। जैमिनी सूत्रमें "आत्माधिकः कलादिभिर्नभोगः सप्तानामष्टानां वा" कहा है। आगे चलकर आचार्यने क्रमसे अमात्यकारक, भ्राताकारक और मातृकारकका उल्लेख किया है। यहां स्पष्ट है, आत्मकारक प्रथम भावका बोधक माना जायगा तथा अमात्यकारक अर्थभावका वाचक है। इसी प्रकार भ्रातृ और मातृकारकके अर्थ तृतीय चतुर्थ भावसे संबंधित हैं। अधिक ग्रहोंके अभाव में आचार्यने पिता, पुत्र, जाति और दारा नामक कारक संज्ञाएं देकर लीपापोती करते हुए अपने विषयको अंकुरितमात्र किया है। संभव है आचार्योंने द्वादश ग्रहोंकी संख्या परिपूर्तिके अर्थ ही अन्य अन्तरित्त, अदृश्य, भाव होरा और घटी लग्नोंका ग्रहोंके आशयमें ग्रहण किया हो। अनेक प्रकारकी आशंकाएं और भी उठ सकती हैं, किन्तु हमें यहां यह मात्र समझ लेना है कि द्वादश भावोंके अर्थमें द्वादश कारक निर्वाचनका आचार्योंका आशय था।

अस्तु, हमें यह समझ लेना चाहिये, पूर्वाचार्योंके आत्मादिकारक-प्रथमादि भावोंके-अर्थोंमें कहे गये हैं। अन्यथा आचार्योंके सात अथवा आठ कारकोंका कुछ भी अर्थ नहीं होगा। पूर्वाचार्योंने स्थिर और तात्कालिक स्वरूपमें दो प्रकारके कारकोंका वर्णन किया है। इस आशयसे प्रकृति सूत्रोंमें भी नित्य और अनित्य (तात्कालिक) भेदसे दो प्रकारके कारक कहे गये हैं।

सूत्र २—"तत्र द्विविधं कारकत्वं नित्यमनित्यं च" ॥
चंद्रिका—"तत्र" प्रस्तुत कारक प्रणालीमें नित्य और अनित्य भेदसे दो प्रकारके कारक होते हैं।

सूत्र—"नित्यं रव्यादि क्रमेण,
तात्कालिकं कलादि परिमाणम् "

चंद्रिका :—नित्य कारकके हेतु सूत्रकारने प्रथमादि भावोंके अर्थमें रवि आदिका स्वतंत्र रूप (अलग) से क्रम निश्चित किया है, तथा सूत्रके उत्तरार्धमें कारकत्व निर्णयके लिये कलादिके परिमाणका संकेत दिया है। यहां कला आदि से अंशोंका बोध होता है। परिमाणसे अंश विशेषका ज्ञान स्पष्ट है। राशिसहित अंशादिकी विशेषता पर ग्रह प्रथम भावका अर्थ वाचक "आत्मकारक" नामसे कहा जाएगा। इसी प्रकार आत्मकारकसे कम परिमाणकी न्यूनताके आश्रय पर द्वितीयादि भावोंके अर्थमें शेष कारक होंगे।

सूत्र ४—"निसर्गात्तात्कालिको विशेषः"

चंद्रिका:—ऊपर नित्य और अनित्य भेदसे दो प्रकारके कारकोंका सूत्रकारने मत दिया है तथा सूत्रमें पर्यायवाचक निसर्ग और तात्कालिक शब्द स्वरूपका उच्चारण करते हुए नित्य, अनित्य कारकमें अनित्य (तात्कालिक) कारक ग्रहको विशेष महत्ववान माननेका आदेश भी दिया गया है।

उपपत्ति—यों सर्वत्र जातकाचार्योंने भी नित्य अनित्य (निसर्ग तात्कालिक) अर्थ विशेषमें "तात्कालिक भावेश" आदि ग्रहको ही प्रधान माना है। तथा रविका राज्यकारकत्व, गुरुका विद्याकारकत्व, निसर्ग फलसे किसी भाव के आधिपत्य आदि अर्थसे गौण हैं। सूत्रमें दो प्रकारके कारक माननेमें सूत्रकारका विशेष अर्थ है। कारण जहां अंशादि स्पष्टीकरण न किया जाय, केवल राशिस्थ ग्रहोंके आधार पर ही सामान्य फल कथन किया जाय, इस अवस्था में निसर्ग कारक ग्रह कार्यसाधक स्वरूपमें होगा। किन्तु अंशादि स्पष्टीकरण द्वारा लाया हुआ भावार्थ वाचक कारक ग्रह निसर्गकी अपेक्षा प्रधानता रखता है। यों निसर्ग फल सर्वत्र उपादेय कारण अवश्य रहेगा। यह नियम सर्वत्र पूर्वाचार्योंने भी इसी प्रकार माना है। वास्तवमें यह निर्विवाद विषय है।)

सूत्रः—"रव्यादि क्रमस्तु...आ, चं, भौ, भू, जी, रा, बु, श, इ, शु, व, य, एवं सर्वत्र ॥५॥

चन्द्रिकाः—सूत्रांक तीनमें रव्यादि क्रमका संकेत था। सूत्रकारने रव्यादि क्रम" "अपनी स्वतंत्र युक्ति दी है। इसका उल्लेख अन्यत्र नहीं मिल सकता है। कारण राहु सहित आठ ग्रहोंसे अन्य ग्रहोंका भी सूत्रकारने अपनी प्रणालीमें समावेश किया है, अतएव उनकी व्यवस्था नवीन ही हो सकेगी। प्राचीनमें उनका प्रचलन नहीं हो सका था। अस्तु, सूत्रमें रविको आत्मकारक स्वरूपमें तथा चन्द्रादिकोंको द्वितीयादि भावोंके अर्थमें नित्य (निसर्ग) कारक स्वरूपमें माना है।

निसर्ग कारकत्व—

(१) रवि—आत्मकारक, (२) चन्द्र— अर्थकारक (३) मंगल—बंधुकारक (४) पृथ्वी (लग्न) मातृकारक (५) गुरु—विद्याकारक (६) राहु—व्याधिकारक (७) बुध-स्त्रीकारक (८) शनि—अरिष्टकारक (९) इन्द्र (हर्शल) भाग्यकारक (१०) शुक्र—राज्यकारक (११) वरुण (नेपच्यून) आयकारक (१२) यम—(प्लूटो) व्ययकारक स्वरूप, में हैं।

उपपत्ति—रवि, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, इन्द्र (हर्शल), वरुण (नेपच्यून) यम(प्लूटो) राहु (चन्द्रपात)पृथ्वी (लग्न)उक्त १२ ग्रहोंमें रविको प्रधानता देते हुए प्रथम आत्मकारकके स्वरूप माना है। इसी प्रकार चन्द्र स्वयं अर्थोत्पत्ति का कारण ग्रह है। मंगलको साहसी बंधुत्वका वाचक पूर्वाचार्योंने कहा है। आगे सूत्रकारने पृथ्वीको मातृकारक अर्थमें पोषण साधन संपन्नतामें युक्तियुक्त माना है। गुरुका विद्याकारक माना जाना स्पष्ट है। शनि-यमकी अपेक्षा दूषित क्रियामें राहु अल्प है, इसी आधार पर विकारोंका कारक स्वरूप व्याधाकारक इस राहुको मान लिया गया है। स्त्री, व्यापार, व्यवहार समाज–व्यवस्थादि विषय क्रियाओंका उद्‌बोधक ग्रह बुध ही माना जा सकता है। कारण शुक्रको राज्य, पितृकारकके अर्थमें मानना अधिक उपयुक्त होगा। अतएव व्यवहार वृत्तिका बुध पूर्वाचार्योंकी स्वयं ही मान्यता है। उसे यहां सप्तम भावके अर्थोंमें स्त्रीकारक स्वरूपमें माना गया है। शनिको अरिष्टकारक स्वरूपमें मान लेना निर्विवाद सा है। तथा इन्द्र(हर्शल) को भाग्यका अधिकारी उसके स्वयंके महत्व पर निश्चित किया गया है। शुक्र एक प्रधान और शासनप्रणालीका गुरुतर ग्रह है। वरुण एकीकरण संग्रह वृत्तिके अर्थमें नामसे ही प्रसिद्ध है। यहाँ यम (प्लुटो) को क्षति क्रियाके अर्थमें निश्चित किया गया है। सूत्रकारने जहां तक पूर्वाचार्योंके ग्रह अर्थोंका ग्रहण किया है तथा शेष ग्रहोंका युक्तिवाद द्वारा तात्विक अर्थमें समावेश किया है, ग्रहको नाम और गुणके आश्रयसे भावोंके अर्थोंमें निश्चित किया है। यों यह एक निर्विवादास्पद विषय बन जाता है।

उदाहरण :—

जन्म संवत १९९० शक १८५५ आश्विन शुक्ल पक्ष ८ बुधवार तदनुसार ता० २७-९-३३ अक्षांश २१ रेखांश ७७ पर सायं ४।२ बजे पुत्रका जन्म। प्रस्तुत समयमें उदय से इष्ट २४।३० पर प्रभाकर ग्रहगणित कोष्टकों द्वारा संशोधित सायन ग्रह निम्न प्रकारसे हैं :—

राश्यादिस्पष्ट ग्रह :—

रवि राश्यादि ६।३।५०।३५, चंद्र ९।२३।५७।५४, मंगल ७।२०।२७।३९, बुध६।१५।२।२०, गुरु ६।३।३२।४५, शुक्र ७।१७।५६।३५, शनि १०।१०।४१।५६, इन्द्र ०।२६।५८।२६, वरुण ५।१०।४४।५६, यम ३।२५।६।५०, राहु १०।२६।३७।८, पृथ्वी (लग्न) १०।२३।४२।७,

ग्रहगति कला :—

र.५८.३ चं. ८६७ मं. ३९.५ बु. ८८.४,गु.५.८ शु.-६१.१ श.३.९ इ. २.३ व. ३.२ य.१.२ राहु ३.२ पृथ्वी ३६० अंश स्वरूपमें है।

सूत्रार्थ—"तात्कालिकं कलादि परिमाणम्" के आश्रय से प्रस्तुतमें प्रथमादि भावोंके अर्थमें आत्मादिकारक ग्रह निम्न हैं :—

कारक निर्वाचन :—

(१) आत्मकारक—इन्द्र अंश २६·९७४
(२) अर्थकारक—राहु अंश २६·६१९
(३) बंधुकारक—यम अंश २५·११४
(४) मातृकारक—पृथ्वी अंश २३·७०२
(५) संततिकारक—मंगल अंश २०·४६१
(६) व्याधिकारक—शुक्र अंश १७·९४३
(७) जायाकारक—बुध अंश १५·०३९
(८) अरिष्टकारक—चन्द्र अंश १३·९६५
(९) भाग्यकारक—वरुण अंश १०·७४९
(१०) राज्यकारक—शनि अंश १०·६९९
(११) आयकारक —रवि अंश ३·८४३
(१२) व्ययकारक—गुरु अंश ३·५४६

[क्रमशः]

ज्योतिष-शास्त्र और रोग-चिकित्सा

[लेखक—श्री प्रो० पृथ्वीधराचार्य (रिसर्च आस्ट्रोपामिस्ट)]

[भारतीय शास्त्रोंकी यह विशेषता है कि वे परस्पर एक दूसरेके पूरक हैं इसीलिये बड़ी ही आलंकारिक भाषामें वेदरूपी पुरुषके अवयवोंके रूपमें उनका वर्णन किया गया है। आयुर्वेद और ज्योतिष शास्त्र भी इसी प्रकार एक दूसरेसे सम्बद्ध हैं। किसी भी व्यक्तिका रोगी होना, ठीक हो जाना तथा अमुक अवधि तक रोगी रहना यह सब इसके प्राक्तन कर्मोंके फलसे बहुत कुछ सम्पृक्त वा सम्बद्ध है। ज्योतिष शास्त्र उस कर्मफल (जिसे दैव वा प्रारब्धके अपर पर्यायसे भी पुकारा जाता है) का ही ग्रहोंकी गति स्थिति आदिसे निदर्शन कराता है। यह एक विलक्षण किन्तु ध्रुव सत्य है कि ग्रहोंकी अनुकूलतामें ही औषधोपचार भी सफल होता है। अतः दोनों शास्त्रोंको इसी हेतु परस्पर सम्बद्ध रहना पड़ता है। प्रस्तुत लेखमें विद्वान् लेखकने सुदृढ़ प्रमाणों एवं संगत युक्तियोंसे यह सिद्ध करनेका प्रयास किया है कि रोगोंके होने मिटने एवं बने रहनेमें ग्रहोंका कितना एवं कहां तक प्रभाव रहता है। लेख सुन्दर एवं युक्तिपूर्ण होनेसे पठनीय है। —सम्पादक]

आजके संसारमें अनेक रोगोंकी उत्पत्ति दिन-प्रतिदिन हो रही है, उसको दूर करनेके अनेक उपाय उत्पन्न किए जा रहे हैं। यदि रोग उत्पत्तिके कारण ही ज्ञात हो जाए तो उसके विरुद्ध अपना आचरण मनुष्य रखे तो रोग शरीरमें कैसे प्रवेश कर सकता है और इसका ध्यान कौन व्यक्ति रख सकता है या नहीं, यह बात ज्योतिष शास्त्र ही बता सकता है। कई हजार वर्ष पूर्व बनस्पति तथा भूगर्भकी धातु आदिका उपयोग तथा ज्योतिषशास्त्रसे रोगोंका निदान करनेके लिए प्रत्येक घर अवगत था और जो कम समय व कम खर्चमें हो जाती थी। आज हम सब कुछ भूल गये हैं और आजकल जिन रोगोंके नाम हम सुनते हैं उनका पूर्वमें हमें पता तक नहीं था, इन रोगोंको कौन और कब इस संसारमें लाया यह हमें केवल ज्योतिषशास्त्र ही बता सकता है। प्राचीन कालमें प्रत्येक व्यक्ति यथोचित समयमें उपयुक्त वनस्पतियोंको लाकर अपने पास रख लेता था और समय पड़ने पर उनका उपयोग करता था। आजकल जितने डाक्टर, वैद्य और दवाखाने आदि हैं उतने प्राचीनकाल में नहीं थे, इसका कारण देखनेसे यह ज्ञात होता है कि मनुष्यके रहन-सहनमें अन्तर व आचरणमें दोष हो गये हैं। पूर्वमें प्रत्येक डाक्टर, वैद्यको ज्योतिष शास्त्रका ज्ञान होना आवश्यक था। "Hundreds of years ago any one studying medicine was obliged to pass an Astrological examination. If found deficient, he was deemed unfit to pass for medical profession."

[हजारों वर्ष पूर्व आयुर्वेदके अध्ययन करने वाले प्रत्येक व्यक्तिके लिए एक ज्योतिष सम्बन्धी परीक्षामें उत्तीर्ण होना अनिवार्य था। इससे प्रतीत होता है कि उस समय बिना ज्योतिष ज्ञानके कोई भी व्यक्ति आयुर्वेद सम्बन्धी व्यवसायके अयोग्य समझा जाता था।]

इस प्रकारकी जानकारी पाश्चात्य विद्वानोंने अपने ग्रन्थों में दी है, जो मैंने यहां उन्हींके शब्दोंमें कही है। आज आयुर्वेद, हौमियोपैथी या बायकोमिक शास्त्र कोई भी हो उसे ज्योतिष शास्त्रकी आवश्यकता प्रतीत ही नहीं होती। अपितु इसे पाखण्ड मानते हैं। मेरा यह मत है कि जो डाक्टर या वैद्य ज्योतिषशास्त्रको पाखण्ड मानते हैं इसमें उनका कोई दोष नहीं है, यदि दोष हैं तो केवल उन लोगों का जो कि ज्योतिषशास्त्रका अध्ययन करते हैं, क्योंकि उनका कर्तव्य था कि वे ज्योतिषशास्त्रकी उपयुक्तता आयुर्वेद आदि समान शास्त्रोंको बताकर स्पष्ट कर देते तो आज इस शास्त्रको वह लोग इस दृष्टिसे न देखते। अब हमने इस प्रकारका प्रयत्न संशोधन करके किया है और हम दावा

करते हैं कि आगामी समयमें प्रत्येक वैद्य, डाक्टर इस शास्त्र की उपयोगिताके कारण अवश्य अध्ययन करेंगे।

हमारा विश्वास है कि प्रत्येक जीव चराचर ग्रहोंके प्राधान्यसे उत्पन्न हुए हैं, उनकी ही शक्तिसे नष्ट होने वाले हैं, यह सिद्धांतिक बात है। जिस प्रकार ज्योतिष शास्त्र मनुष्यके शरीरके प्रत्येक भाग पर प्रभाव रखनेका दावा करता है, ठीक उसी प्रकार हर बनस्पती तथा खनिज पदार्थ पर ज्योतिष शास्त्रके ग्रहोंका प्रभाव पूर्णरूपसे विराजमान है इस बातको आगे सिद्ध करेंगे। "Diseases caused by a planet can be cured by herbs ruled by the planet which is antipathetic."

यही सिद्धांत ग्रह तथा बनस्पतिके अन्योन्य सम्बन्धमें है : Culpepper writes "First consider what planet causes the disease, second consider what part of the body is afflicted by the disease and whether it lies in flesh, blood or bones, third consider by what planet the afflicted portion of the body is governed."

[Culpepper लिखते हैं, "पहले यह देखो कि किस ग्रहके कारण रोग उत्पन्न हुआ, उसके पश्चात् यह देखें कि शरीरका कौनसा भाग रोगग्रस्त है और रोग रक्तमें है, हड्डियोंमें है अथवा मांसमें है। अन्तमें यह देखना चाहिए कि शरीरका रोगाक्रांत भाग किस ग्रह द्वारा शासित है।]

यही सिद्धान्त ग्रहोंसे संबंधित शरीरके रोगों पर देखे जाते हैं। शस्त्रक्रिया करने वालों को ज्योतिष शास्त्रके सिद्धान्तोंको देखना अधिक उपयोगी होता हैं, कारण कि उनके शस्त्रक्रियाके बुरे परिणामोंका उत्तरदायित्व किसी पर न होगा, केवल रोगीकी मौत असामयिक हो सकती है। एक पाश्चात्यने अपना मत स्पष्ट किया है, वह लिखते हैं—

"It would be well for surgeons to study astrology and the planets in relation to their patients, when possible in operations, success would be theirs in very many cases. As the physical condition, strength and state of health of each person are denoted by the sign which is rising at birth, also the planets born under, at the hour and exact time of birth which is also very important to note."

["शल्य चिकित्सकोंके लिए अपने रोगियोंके उपचारके सम्बन्धमें ज्योतिष व ग्रहों का अध्ययन अति उपयोगी है, और आपरेशनमें सफलता तभी संभव है, जब प्रत्येक व्यक्तिकी शारीरिक स्थिति और शक्तिका ज्ञान उसके निश्चित जन्म समयकी राशि और ग्रहों द्वारा होता है। अतः ठीक जन्म समयका नोट करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।"]

उक्त शब्दोंसे यह प्रतीत होता है कि पाश्चात्य लोग आज भी ज्योतिष-शास्त्र को आयुर्वेद या डाक्टरीके दृष्टिसे कितना अधिक उपयुक्त मानते हैं। इन बातोंका ज्ञान इन लोगोंने भारतवर्षसे ही प्राप्त किया है और इसका प्रमाण पाश्चात्य ग्रन्थकार ऐलन-लिओ तथा रफैलके ज्योतिष वैद्यक ग्रन्थोंको देखनेसे प्रतीत होता है, और आज भारतीय ही उनके ज्ञानसे प्रभावित हुए हैं। परन्तु जो वस्तु हमारे पूर्वजोंके ज्ञान द्वारा प्राप्त हुई है उनको प्रयोगमें लानेसे हम लोग हिचकिचाते हैं या उसे पाखंड कहते हैं, यह बड़े दुख की बात है।

यह स्मरण रखना चाहिए कि बहुतसे रोगोंका कारण मनुष्यके रहन-सहन चरित्र तथा मानसिक स्थिति पर अवलम्बित है, इस कारण डाक्टर या वैद्य किसीको भी रोगी का उपचार करनेसे पूर्व रोगीकी उपयुक्त स्थितियोंका सर्वप्रथम पूर्णरूपसे अध्ययन करना चाहिए। मनका महत्व शरीर पर अधिक होता है और मनका स्वास्थ्य आत्माके स्वास्थ्य पर निर्भर रहता है। मन, शरीर, आत्मा इनका सम्बन्ध अन्योन्य है इस कारणवश रोगीका उपचार करनेसे पूर्व इन तत्वोंको अनिवार्य रूपसे देखना चाहिये। यहां एक बात कह देना असंगत न होगी कि एक औषधि एक ही रोगके लिए अलग-अलग व्यक्तियों पर एकसा प्रभाव नहीं करेगी, इसका कारण प्रकृति ही है। शरीरमें रोग उत्पन्न होनेके प्रमुख कारण निम्नलिखित हो सकते हैं :

१. अशुद्ध पोषण, पचन-पाचन तथा विसर्जन।

२. मानसिक और मज्जा तंतुकी विकृति।

३. रक्तकी कमी तथा रक्तदोष।

रोगीके शरीरकी स्थितिके साथ उसके प्रकृति एवं स्वभाव का विश्लेषण करनेके बाद ही रोगके लिये उपयोगी औषधियोंकी योजना करना चाहिये और इन्हीं सब कारणोंको देखनेसे यह प्रतीत होता है कि आयुर्वेद आदि शास्त्रोंके साथ ज्योतिष शास्त्रका अध्ययन उतना ही महत्व रखता है जितना कि ये शास्त्र। आयुर्वेदमें ज्योतिषशास्त्रके लिए सबसे पहले ग्रहोंकी जानकारी होनी चाहिए फिर ग्रहोंकी प्रकृत तथा शरीर पर उनके प्राप्त परिणामों इसके पश्च शरीरके विभागों पर होने वाले ग्रहोंके अस्तित्वके साथ परिणाम और अन्तमें उक्त ग्रहोंके आधीन बनस्पति एवं उससे तैयार की गई औषधियोंकी योजना। इतना अभ्यास आयुर्वेद शास्त्रके लिए बड़ा उपयोगी होगा। आयुर्वेद शास्त्र तथा मानव शरीरके रोगोंका निदान करनेके लिए सर्वप्रथम पुरुष की कुंडलीमें सूर्यकी स्थिति तथा स्त्रीकी कुंडलीमें चंद्रमा की स्थितिका अवलोकन करना आवश्यक होता है। हमने जब हास्पीटलमें रोगियोंका अध्ययन चार वर्ष तक किया तो हमारे अनुभवमें ज्योतिष-शास्त्रके सिद्धांतोंसे एक ही बात आयी कि मनुष्य अपनी भूलके ही कारण रोग ग्रस्त हुआ और इसी कारणसे हमारा ध्यान मानवके प्रकृति एवं उसके चरित्रको समझ लेनेके लिये बाध्य हुआ तथा यह लक्षण मनुष्यके समझ लेनेके लिए संसारमें एक ही शास्त्र है वह ज्योतिषशास्त्र है। मनुष्य नियत समय पर प्राकृतिक क्रियाओंको कार्यान्वित होने दे तो कभी रोगग्रस्त नहीं हो सकता। मानव स्वयं ही भूलके कारण रोगोंका शिकार होता है। उदाहरणार्थ समय पर भोजन न करना, पेशाव न करना, न सोना आदि। स्थितिकी सही जानकारी मनुष्यके ग्रह स्थिति पर ही निर्भर होती है। ग्रह जैसे मनुष्य पर प्रभाव रखते हैं यह बात सबको विदित है। इसके साथ ग्रहोंका प्रभाव बनस्पति पर भी होता है और यह बात बहुत कम लोगोंको ज्ञात है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि कुछ बनस्पति विशेष ग्रह योगोंके उदय या अस्त होनेके मध्यमें ही उत्पन्न होती है। इसी प्रकार ग्रहोंकी रश्मियोंसे खनिज धातु आदि उत्पन्न होते हैं। आप कहेंगे कि धातु क्यों प्रभाव करती है? इसकी सत्यतामें एक उदाहरण आपके समक्ष रखता हूं—किसी व्यक्तिके पास जब एक खोटा धातुका रुपया आ जाता है तो वह धूर्ततापूर्वक उसे हर प्रयत्नसे चलानेका प्रयास करता है। वह व्यक्ति तब तक चैन नहीं लेगा जब तक कि वह खोटा रुपया चला न ले। मेरे कहनेका तात्पर्य यह है कि खोटी धातु हाथमें आ जानेके कारण व्यक्तिके मनकी स्थिति बदल जाती है वैसे ही किसी रोगीके शरीरमें सच्ची धातु किसी औषधिके रूपमें दी जाये तो इसका विशेष प्रभाव शरीरमें क्यों न होगा। इसी प्रकार मनकी स्थिति पर इन ग्रहोंसे उत्पन्न धातुओंका प्रभाव पड़ सकता है। बनस्पती पर जो प्रभाव ग्रहोंके होते हैं उनके उदाहरण हम यहां देते हैं—गुरु ग्रहके स्वामित्वमें धनिया, लहसुन, प्याज आदि अनेक हैं। शनिग्रहके स्वामित्वमें बच नाग आदि, शुक्र ग्रहके स्वामित्वमें बड़ी हरड़, अंजीर आदि. इस प्रकार अनेकानेक बनस्पतियां प्रत्येक ग्रहके तत्वों के आधीन हैं, और उन बनस्पतियोंमें ग्रहोंके तत्व विद्यमान हैं। इस विषयको आगे चलकर आपके समक्ष प्रस्तुत करूंगा।

अब मैं ज्योतिष वैद्यककी भूमिकाकी ओर आपका ध्यान आकृष्ट करता हूं। इस भूमिकाको स्पष्ट रूपसे समझने के लिए हमको राशि ग्रह आदिके बारेमें आवश्यक ज्ञान होना चाहिए। यह ज्ञान पूर्वमें ही प्रत्येक वैद्यको कर लेना चाहिए। केवल इसके पश्चात् ही वैद्य अपने रोगीकी सही स्थिति, सही रोगकी परीक्षा कर सकता है। इसके पश्चात् ही यह जाना जा सकता है कि कौनसे ग्रहोंके परिणाम शरीरके टीशुज पर प्राप्त हैं और उन टीशुजके सम्बन्धी औषधियां जो कि वैद्यक या होमियोपैथी या बायोकीमिक आदि शास्त्रोंमें बताई गई है उसका यथोचित योजना करने का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए। इतना ज्ञान प्राप्त होने पर वैद्य रोगीकी चिकित्सा भली प्रकार करने योग्य हो सकता है। वैद्यको राशि ज्ञानके अलावा निम्नलिखित बातोंकी भी जानकारी चाहिए। (१) षष्ठ स्थान एवं षष्ठेश परसे रोगका निदान समझा जा सकता है। (२) चतुर्थ स्थान व चतुर्थेश परसे रोगकी शक्तिका विचार किया जा सकता है। (३) लग्न या लग्नस्वामी परसे रोगका पहचानना सुलभ होता है। इस प्रकार इन तीन बातोंका विचार रोगीकी जन्म-कुंडलीसे वैद्यको करना पड़ेगा।

अवयव तथा शरीरकी बाह्य रचना

ज्योतिष-शास्त्रमें मानव शरीरके विभागों पर राशियों का प्रभुत्व माना गया है उसका विचार वैद्योंके लिए ज्योतिष दृष्टिसे करते हैं। इस जानकारीसे यह पता चलता है कि शरीरके प्रत्येक अवयव पर प्राप्त ग्रहोंका प्रभाव बहुत महत्व का पाया जाता है। मुख तथा सिर पर मेष राशिकी सत्ता होती है, इस राशिका अधिपति मंगल ग्रह है। गर्दन व गला इन पर वृषभ राशिका प्रभुत्व होता है और इस राशि का स्वामी शुक्र होता है। कन्धा, हाथ पर मिथुन राशिकी सत्ता एवं प्रभाव होकर इस राशिका स्वामी बुध है। पीठ पर सिंह राशि सूर्यका प्रभाव रहता है। पेट पर कन्या राशिका प्रभाव होकर स्वामी बुध ग्रह है। कमर, चमरी पर तुला राशिका प्रभाव और स्वामी शुक्र ग्रह होता है। जननेन्द्रियोंके गुह्यांगों पर वृश्चिक राशिका प्रभाव होकर इस राशिका स्वामी मंगल ग्रह होता है, पृष्ठ भाग तथा बरगडियों पर धनु-राशिका प्रभाव होकर इस राशिका स्वामी गुरु है। घुटने पर मकर राशिका प्रभाव होकर स्वामी शनि रहता है। पैर अंगुलियों पर कुम्भ राशिकी सत्ता होकर इसका स्वामी शनि ग्रह है, पैरके तलवे एवं पैरकी अंगुलियों पर मीन राशिकी सत्ता होकर स्वामी गुरु है। किसी भी रोगका प्रभाव या उत्पत्ति शरीरके किस भाग पर हुई है वह किस राशि तथा ग्रह स्वामीसे सम्बन्ध रखता है यह देखनेके पश्चात् उस राशि तथा स्वामीकी जन्म कुण्डलीमें प्राप्त स्थिति, उसके पश्चात् कौनसे टीशुज रोगका कारण है, उन को जानकर उन टीशुजके प्रभावके ग्रह समझकर उस परसे उस स्थानकी कार्य स्थितिका परीक्षण करके रोगकी स्थिति व साध्य असाध्य एवं उस दृष्टिसे उसका विचार करके औषधियोंकी योजना करनी चाहिए। इस प्रकार आगामी लेखमें हम इस विषयमें आगेकी चर्चा करेंगे, जिससे ग्रहोंसे प्राप्त रोग तथा उनको दूर करनेकी योजना, बनस्पती शाक भाजियों एवं अन्य खाद्यसे वाचकोंको परिचित करेंगे, हमें आशा है कि भारतीय वैद्य होमियोपैथी एवं बायकैमिक तथा डाक्टर इस योजनाका सहर्ष स्वागत करेंगे, और मुझे प्रोत्साहित करेंगे, जिस प्रोत्साहनसे मैं और भी अधिक संशोधन इस विषयमें करने हेतु आगे बढ़नेका प्रयास करूंगा।

अनभूत-योगमाला

[लेखकः—राजगुरु ज्योतिषालंकार श्री पं० तारादत्त राजज्यौतिषी]

(गताङ्कसे आगे)

१. जिसके जन्म समयमें उच्चाभिलाषी सूर्य नवम-स्थानमें होता है वह राजा या प्रधान पुरुष होता है।

२. जिसके जन्म समयमें उच्चाभिलाषी सूर्य पञ्चम स्थानमें होता है वह भी राजा या प्रधान पुरुष होता है।

उच्चाभिलाषी सविता त्रिकोणे—
स्थितो भवेद्यस्य स भूपतिः स्यात्। (मानसागरी-पद्धति)

उपपत्ति—सूर्य और चन्द्रमा राज-ग्रह हैं।

राजानौ रविशीतगू (बृहज्जातक) चन्द्रमा सूर्यके प्रकाशसे प्रकाशित होता है। इसलिए प्रधान राज-ग्रह सूर्य है। दशम स्थान राज्य-स्थान है, इसलिए नवम स्थान में स्थित प्रधान राज-ग्रह सूर्य राज्य स्थानाभिलाषी होनेसे राज्य दानोत्सुक होता है।

उच्चाभिलाषी प्रधान राज-ग्रह सूर्य भी राज्य-दानोत्सुक होता है। क्योंकि उच्चस्थ ग्रह उच्च-पदवी देता है। इस प्रकार नवम स्थानमें स्थित उच्चाभिलाषी सूर्य विशेष रूपसे राज्य-दानोत्सुक प्रतीत होता है। अतएव वह राजयोग कारक सिद्ध हुआ।

त्रिकोणत्वसे पञ्चम-स्थान, नवम-स्थानका सजातीय होता है। उसके सजातीयत्वसे उच्चाभिलाषिणी पञ्चम स्थान में स्थित सूर्यकी शक्तियां नवम स्थानमें व्याप्त होकर विशेष रूपसे राज्य-दानाभिलाषिणी होती हैं। इसलिए पञ्चम स्थान में स्थित उच्चाभिलाषी सूर्य भी राजयोग कारक सिद्ध हुआ।

एक व्यक्तिका जन्म-लग्न कर्क है। नवम स्थानमें मीन राशिस्थ सूर्य है, उसने प्रधान पुरुषत्व प्राप्त किया है।

इस लेखका सार रूप मानसागरी-पद्धतिके श्लोकके पूर्वार्द्धसे सहित स्वनिर्मित श्लोकार्द्ध—

राज्यास्पदं मुख्य नृप-ग्रहस्य
गन्तुं च तुङ्गालयमुत्सुकत्वात्।
उच्चाभिलाषी सविता त्रिकोणे
स्थितो भवेद्यस्य स भूपतिः स्यात्॥

उज्जयिनी पर्वान्त (कुम्भ पुष्कर) स्नान निर्णय

[लेखकः—श्री पं० चन्द्रकान्त शर्मा राजज्यौतिषी]

[गत वर्ष सं० २०१३ के 'श्रीविश्वविजय-पंचांग' में हमने 'सिंहस्थगुरुमें कुम्भपर्व और अर्ध-कुम्भी' शीर्षक निबन्धमें बताया था कि बार्हस्पत्य संवत्सरानुसार कुम्भपर्वका निर्णय बृहस्पतिके मध्यम राशिभोग गणनानुसार ही शास्त्र-सम्मत है—तदनुसार हरिद्वार अर्धकुम्भी स्नान और उज्जैनका सिंहस्थ पर्व-स्नान सं० २०१३ में ही होना चाहिए। और यही हुआ भी। प्रस्तुत लेखके विद्वान् लेखक महोदयने कुम्भपर्व पर शास्त्रीय दृष्टिसे पर्याप्त अन्वेषण किया है। इन्होंने जो कुछ लिखा है वह युक्ति प्रमाण एवं तर्ककी कसौटी पर ठीक प्रतीत होता है। कुम्भपर्व चरराशिस्थ गुरुके स्थान पर स्थिरराशिस्थ गुरुमें कबसे क्यों होना आरम्भ हुआ, इसका वास्तविक इतिहास जानना कठिन है, परन्तु एक बार जो भूल हो गई हो उसी पर चलते रहना तो उचित नहीं। 'तातस्य कूपोऽयमिति ब्रुवाणा क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति'। उज्जैनका कुम्भ तो वास्तवमें होता ही नहीं, वहां तो सिंहगत गुरुमें पुष्कर स्नान वा 'सिंगत मेला' कहाता है। सर्वसाधारण ग्रामीण जनता तक भी उज्जैनके पर्वस्नानको कुम्भपर्व न कहकर 'सिंगत स्नान' ही कहती है। लेखकका यह आग्रह नहीं है कि जो कुछ उसने लिखा है वही सर्वथा ठीक है। सहृदय विद्वान् निष्पक्ष दृष्टिसे इस पर विचार करें और यदि कुछ त्रुटि वा दोष हो तो वह भी बतानेकी कृपा करें। इस विषयमें विद्वानोंका विचार विमर्श होकर एक निर्णय हो जाना अत्यावश्यक है। जो सज्जन इस सम्बन्धमें गवेषणात्मक विचार भेजेंगे उन्हें भी हम 'श्रीस्वाध्याय' में प्रकाशित करेंगे। —सम्पादक]

अपि पौरुषमादेयं शास्त्रं चेत् युक्ति-बोधकम्।
अन्यत् त्वार्षमपि त्याज्यं भाव्यं न्याय्यैकसेविना ॥
युक्तियुक्त वचो ग्राह्यं न ग्राह्यं गुरु गौरवात्।
धर्मशास्त्र विरोधे तु युक्तियुक्तो विधिः स्मृतः ॥
कारणात् धर्ममन्विच्छेत् न लोकचरितं चरेत्।
बुद्धिमास्थाय लोकेस्मिन् वर्तितव्यं कृतात्मना ॥

अयि महाभाग ! भारतीय ज्यौतिषाचार्यो !! अब समय आ गया है, उपेक्षारूप तन्द्रा त्यागिये, आपके पूर्वजोंने अनेक सिद्धांत निर्माण किये हैं'ब्रह्मार्यसौरादिकाः'त्रिप्रश्नका हल किया, आकाशीय नक्षत्र ग्रह उपग्रहों द्वारा वर्षमास तिथियें प्रतिष्ठित की, नलिका एवं तुरीय आदि यन्त्राविष्कार द्वारा वेधशालायें निर्माण की। आज उनकी ही सन्तानोंके विद्यमान रहते उनकी मर्य्यादा भंग एवं अपमान कब तक सहन करते रहोगे ? अज्ञानियोंके आक्षेप सीमोल्लंघन कर चुके हैं, कब तक उपेक्षा ? लगधादि ऋषि सन्तानों ! आपको यह सम्बोधन अवश्य कटु लग रहा है, किन्तु किसी प्रकार आपमें जाग्रति एवं संगठन हो और आप विपक्षियोंका उचित समाधान कर सकें।

क्या सांहितिक संवत्सरके विषयमें भारतेतर भूभाग वाले आपको कुछ सिखानेका दावा कर सकते हैं ? बार्हस्पत्य संवत्सरके आविष्कारक सांहितिक आर्येतर कौन है ? क्या आपको इसका गौरव नहीं ? यदि है तो उसकी रक्षाका साधन क्या ? सौर चान्द्रकी अपेक्षा आपके सावन वर्षके निकट तो गौरव वर्ष ही है, अतः उसकी रक्षार्थ "कुंभपर्व" की प्रतिष्ठा कर स्थिरत्व प्रदानार्थ धार्मिक कर्मोंमें परिगणित कर केवल निःश्रेयसके उपासक त्यागशील साधु महात्माओं को उसकी रक्षाका अधिकार समर्पित किया, वे ही आज मर्यादा नाशक बनते जा रहे हैं, उनका दोष नहीं, उधर उनमें कुंभ-काल निर्णय करनेकी योग्यता नहीं, तो इधर हम जागरूक नहीं।

हमारे ज्यौतिषाचार्यों एवं धर्माचार्योंमें मतैक्य न होना ही इस विप्लवका कारण है। उदाहरणार्थ—

(१) "कुंभनिर्णय" सम्पादक श्रीनागेश उपाध्याय एम्. ए. हृषीकेश पंचांग संपादक काशीके पृष्ठ १० में—

बहुमत गणाग्र—श्री रामव्यास पाण्डेय ज्यौ. आ. हि. वि. वि. काशी ११।१७ की सम्मति वि. सं०

२०१३ में उज्जयिनी स्नान हो

अलमतगणाग्र—श्रीसीताराम झा ज्यो० आ० सं० सं० का० काशी ३।१७ की सम्मति वि० सं० २०१४ में उज्जयिनी स्नान हो ।

(२) उक्त पुस्तकके पृष्ठ १० पंक्ति ६ में—'सिंहराशिस्थ गुरुः मेषस्थःसूर्यः चन्द्रश्च एतेषां समवधाने कुम्भ (?) योगः–इस प्रकार मुद्रित है, जिसका अर्थ है कि—अमावस्याको उज्जयिनी कुम्भ हो, किन्तु उसी पुस्तकके पृष्ठ १२।१६ में सं० १३ वै. शु० १५ गु० को कुंभ हो, ऐसा मुद्रित है, यह वदतो व्याघात कैसा ? ।

(३) उक्त पुस्तकके पृष्ठ ११ पंक्ति ९ में—सभास्थिरीकृत निरुक्त सप्तदश पण्डित समितिम् अनाकार्य अद्यापि "वि. सं. १४ तमे भविष्यति उज्जयिन्यां कुंभपर्वः" इति निर्णयः जोघुष्यते पूज्यपादैः स्वामिमहाराजैः । इत्यादि ।

(४) 'श्रीमार्तण्ड-पंचांग' सं० २०१३ संपादक श्री पं० मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्यो. कुराली (पंजाब) के पृष्ठ ४ में "इस वर्ष (२०१३) में वैशाखी १५ को सिंहका गुरु तो है किन्तु मेषका सूर्य न होनेसे यह कुंभपर्व नहीं होगा·· आगामी सं. २०१४ में··यह पर्व उज्जैनमें होगा, साथ ही अर्धकुंभी हरद्वारमें भी सं० २०१४ में ही होगी···"इ० ।

'श्रीविश्वविजय-पंचांग' वि. सं. २०१३ संपादक श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिषाचार्य (सोलन) के ४-५ पृष्ठमें... 'सं. २०१३ की वै. पूर्णिमाको ही उज्जैन कुंभ होना चाहिये, यह आवश्यक नहीं कि वै. १५ को मेषका सूर्य होना ही चाहिये··हरद्वारमें अर्धकुंभी भी सं. १३ में ही हो' इ० । ये दोनों सुप्रसिद्ध पंचांगकर्त्ता एक ही पंजाब निवासी, दोनोंके प्रकाशक दिल्ली ही में, पर एकके मतसे १३ में तो अन्यके मतसे १४ में उज्जैन स्नानका निर्णय है ।

बस इसी लिये आपको सम्बोधित करना पड़ा । इसी आपकी अनिश्चितताके कारण सरल धर्मप्राण जनताको मार्ग भ्रष्ट करनेका कुछ पल्लवग्राही धूर्तोंको अवसर मिलता है ।

विक्रमी संवत २०१३ में ही सिंहस्थस्नान शास्त्र संमत काशीस्थ प्रमुख ज्योतिषाचार्योंके निर्णयको विद्वत् परिषद् की १०१ प्रख्यात विद्वानोंकी साक्षी मिलने पर श्रीकरपात्री जी एवं श्रीशंकराचार्य-द्वय एवं रामानुजाचार्य आदि द्वारा पूर्णता प्राप्त हो चुकी, फिर भी रूढीवादी जमातमें "शाही-स्नान वस्तु स्थिति दिग्दर्शन" नामक ४६ पृष्ठ की पुस्तकके लेखक श्री माखनचौरदास बताये जाते हैं जिसमें पूजनीय संन्यासियों एवं विद्वानोंको अनेक अनर्गल शब्दोंसे अपमानित चेलेंज दिये गये हैं । यथा—

पृष्ठ २३ "··ज्योतिषाचार्य पं० सूर्यनारायण व्यास पं० संकर्षण व्यास पं० पुरुषोत्तमजी जोशी गोपीकृष्णजी शास्त्री श्रीधर्माधिकारी शास्त्री प्रभृतिमें ऐसा कौन माईका सपूत लाल है जो सन् ५६ में वै. पूर्णिमाके दिन पूर्ण वह योग बतला दें ? है, किसीमें साहस ? ।"

पृष्ठ २५ "स्वयं स्वामीजी (करपात्रीजी) या कोई पंचांगों को देखें सं० १३ में कुंभके लक्षण नहीं, सं. १४ में प्राप्त है, इस स्थितिमें सं० १३ में कुंभ कहना हठ या मतिभ्रम नहीं तो क्या है ?··कोई भी किसी पंचांगमें कुंभका योग दिखा दे उन्हें हम १०१) पुरस्कार देंगे ! करपात्रीजी भूतके आवेशमें"··बाबाजी ही तो ठहरे न पढ़दा है न रखना जानते···"इत्यादि ।

हे ! वसिष्ठ पराशर गर्गके वंशज ज्योतिषाचार्यों ? क्या यह चेलेंज आपको स्वीकृत है ?

स्वस्था देवापमानेपि देहिनः तद् वरंरजः ।
पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति ॥
इयमिष्ट गुणाय रोचतां रुचितार्था भारती ।
ननु वक्त्रविशेष निस्पृहा गुणगृह्या वचने विपश्चितः ॥

सं० २०१३ की बैशाखी १५ को मेषका सूर्य न होने मात्रसे ये अनी अखाड़े वाले १०१ का पुरस्कार देने चले हैं, किन्तु इनको ज्योतिषकी परिभाषा एवं धर्मशास्त्रका ज्ञान नहीं । परिभाषा यह है—

जो कार्य चान्द्रमासान्तमें हो वही कार्य चान्द्रमासादि में भी होता है, यथा—बैशाख, कार्तिक, माघादि स्नान कार्य चैत्री, आश्वयुजि, पौषीपूर्णिमासे आरम्भका विधान है, इसी प्रकार महालय कृष्णपक्ष ही में करनेका विधान है, तथापि शुक्ला प्रौष्ठपदीको महालयारम्भ माना जाता है ।

वि० सं० १३ चैत्री १५ बुधे चान्द्रवैशाखादौ (सौर बैशाखे) पंचयोगात्मक पुष्कर योग बनता है, यथा—

(१) सिंह संवत्सरे गुरुः (२) मेषराशौ सूर्यः (३) तुलाराशौ चन्द्रः (४) स्वाति नक्षत्र (५) सिद्धियोग ।

प्रमाण— सिंहसंवत्सरे जीवे, मेषस्थे च दिवाकरे ।
तुलाराशिगते चन्द्रे स्वाति नक्षत्र संयुते ॥१६॥
सिद्धियोगे समायाते पंचात्मा योगकारकः ।
अवन्तिकायां क्षेत्रे हि तीर्थे क्षिप्रातटे शुभे ॥२०॥

हरिद्वारात् कुरुक्षेत्रं काश्याश्चैव प्रभासकम्।
पुष्करादिषु तीर्थेषु भ्रममाण इतस्ततः ॥५०॥
तेषामवन्तिका नाम शुभं क्षेत्रं महाफलम्।
सिंहे गुरुगते वापि मेषे चैव दिवाकरे ॥५२॥
(अवन्तिका सिंहस्थ महात्म्ये, नारदः)

यही बात मेदपाटीय-पंचांग सं० १३ के पृष्ठ ६ के फुट नोटमें मुद्रित है, तथा यही बात व्यास-बन्धुओंने दैनिक 'हिन्दुस्तान' दिल्ली दिनांक २५-४-५६ में प्रकाशित करा दी है। अतएव श्री करपात्रीजीने भी इस मास निमित्त यज्ञकी पूर्णाहुति शास्त्रविहित वैशाखान्तमें कराई।

अब वि० सं० २०१४वैशाखी १५ चन्द्र "अवन्तिका सिंहस्थ महात्म्य" के श्लोक ३९-४१ के अनुसार तथाकथित दशयोग वस्तुतः नहीं बनते। कारण कि "स्वात्युडु" पाठ चिन्तनीय है, "विशाखा" मास नक्षत्र होना उचित है—

शास्त्रं विप्रतिपद्येत धर्मन्यायेन केनचित्।
न्याय्यस्तत्र प्रमाणं स्यात् तत्र पाठो हि नश्यति ॥

एवं चन्द्रग्रहण भी है, सब कुछ होने पर भी सिंहसंवत्सरमें सिंहस्थ गुरु भोग नहीं। 'मूलं नास्ति कुतः शाखा।' इसको समझ लेवें।

यही प्रश्न करपात्रीजी भी कर रहे हैं—"विचारणीय विषय तो यह है कि अनेक शुभ योगोंका सम्मान क्या सिंहस्थ बृहस्पतिके साथ है? या सिंहस्थके बिना भी शुभ योगोंके कारण उज्जयिनीस्नान मान्य होना चाहिए? सिंहस्थ बृहस्पतिका होना ही अनिवार्य है।"

"शाहिस्नान दिग्दर्शन" में श्रीमाखनचौरदास स्वयं मानते हैं कि सन् १८२१ (सं० ७८) में उज्जैन स्नान वृषभ संक्रान्तिमें हुआ। (पृष्ठ २९ पंक्ति १४) फिर भी इस वर्ष २०१३में वृषभ संक्रान्तिमें स्नान स्वीकार नहीं करते।

श्री माखनचौरदासकी पद्धतिसे ही उज्जैन-स्नान सं० १३ में ही बनता है। किन्तु इसी कौटिल्यको छिपानेके हेतु वे संवत्के स्थान पर सन्का प्रयोग करते हैं। (देखो पृष्ठ २९ पंक्ति १४) "ययोरेव समोदोषः परिहारस्तयोः समः।"

श्रीमाखनचौरदास पृष्ठ २९ पंक्ति १६ में स्वयं मानते हैं कि ११ वर्षका स्नान भी बनता है, इ०। तब आप ही बतावें कि ११ वर्ष किस नियमसे आते हैं? उसी नियम से सं० १३ में आप क्यों नहीं मानते?

श्रीमाखनचौरदास–सिंहराशिगते सूर्ये, " मेषराशिगते सूर्ये, " माधवे धवलेपक्षे "', आदि श्लोकोंको बार बार प्रमाणमें प्रस्तुत करते हैं। किन्तु उनको पता नहीं कि ये श्लोक कुंभ विषयक नहीं, ये तो पुष्कर योगके प्रमाणमें है, देखो "अवन्तिका सिंहस्थ माहात्म्य" श्लोक ५०-५२ में नारद स्वयं कहते हैं—जो ऊपर प्रदर्शित है।

नारद कहते हैं कि—हरद्वारसे कुरुक्षेत्र, और काशीसे प्रभास आदि तत्तत् प्राप्त योगात् पुष्कर संज्ञक तीर्थोंमें घूमता हुआ अब इस अवन्तिका क्षेत्रमें आया हूं जहाँ सिंहके गुरु मेषके सूर्यमें पुष्कर तीर्थ बनता है, इत्यादि। उक्त पुस्तकमें "कुम्भपर्व" का नाम तक कहीं नहीं, प्रत्युत उसमें तो यह संकेत मिलता है—

कार्तिके चैव बैशाखे नीचे चोच्चे दिवाकरे।
क्षिप्रास्नानं प्रकुर्वीत क्लेशदुःख निवारकम् ॥१८॥

अर्थात्—कार्तिक मासमें जब नीच राशिस्थ सूर्य हो तब क्षिप्रास्नान (कुम्भ पर्व निमित्त) किया जाय।

तथा—बैशाख मासमें जब उच्च राशिस्थ सूर्य हो तब क्षिप्रास्नान (पुष्कर निमित्त) किया जाय।

इससे अधिक स्पष्ट और क्या हो सकता है?

अब भी ये लोग सदाचारानुगृहीत, शिष्टानुमोदित, परम्परा आदि कहकर, अशास्त्रीय हठ दुराग्रह रूढ़ीको नहीं छोड़ना चाहते तो इनको अपने मार्ग जाने दिया जाय। जैसे मुहम्मदके अनुयायी १२ चान्दका वर्ष मानते चले जा रहे हैं—उसी प्रकार ये भी १२ वर्षका कुम्भ मानते रहें, जो लोग इतिहास, पुराण, धर्मशास्त्र आदिमें विश्वास नहीं रखते वे यथेच्छ कहें एवं करें।

कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्ट मूर्खजन चित्त समाराधयेत्।
इति ते स्पष्टमाख्यातं गुह्यात् गुह्यतरं मया।
विमृश्यैतत् अशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥

किन्तु, श्रद्धावान् विद्वानोंको तो अपने लिए शास्त्रीय निर्णय कर लेना उचित है।

यः शास्त्रविधि मुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परांगतिम् ॥

(क्रमशः)

———

दैवज्ञकी दृष्टिमें संसारचक्र

भारतीय गणराज्यके आठवें वर्ष और भावी चुनावका भविष्य विवेचन

[श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्यौतिषाचार्य]

प्रकृतिकी प्रतिकूलता

ज्यों-ज्यों संसार आध्यात्मिक शक्तियोंकी अवहेलना करते हुए भौतिक साधनोंकी ओर आगे बढ़ उन्हें अपनानेकी प्राणपणसे चेष्टा करता जाता है त्यों-त्यों प्रकृति भी उससे असहयोग करती जा रही है। प्राचीन समयमें सर्वत्र प्राकृतिक यज्ञोंके प्रभावसे शस्यश्यामलता थी, गहरे गभीर वन थे, सर्वत्र शान्तिका साम्राज्य था, हव्य-कव्यसे दिशाएँ धूसरित रहती थीं, ऐसे समयमें उचित अवसर पर वर्षा होती थी, धन धान्यकी वृद्धिसे लोग सन्तुष्ट रहते थे। मध्य कालसे ज्यों-ज्यों इस आश्रमपरक आरण्य संस्कृति एवं प्राकृतिक यज्ञोंका ह्रास होने लगा त्यों-त्यों धन धान्यकी न्यूनता होने लगी—और अब जब हमने उस समयसे कहीं अधिक (तथाकथित शिक्षित समुदायकी प्रचलित मान्यताओंके अनुसार) भौतिक प्रगति कर ली है, देशमें जीवनोपयोगी वस्तुओंका अभाव होता जा रहा है। एक ओर हम भौतिक साधनोंको जुटानेमें इतने व्यावृत-मनस्क हो गये हैं कि कुछ दूसरी बात सोच ही नहीं सकते। दूसरी ओर हमसे प्रकृति भीषण असहयोग कर बैठी है। यह सब क्यों हो रहा है? अकाल-वृष्टि अतिवृष्टि अनावृष्टि युद्ध रोग महामारी आदिसे जनपदोध्वंस क्यों होता जा रहा है? इसका उत्तर अथवा—

संसारके इस राजरोगकी औषधि भारतके ही पास है—

प्रकृति-प्रकोप और जनपदोध्वंसके मूल कारणकी खोज भारतके तत्वदर्शी महर्षियोंने की थी और उसके प्रतिकारका उपाय (औषधि) भी उन्होंने बताई है। परन्तु संसार आज तो विनाशकी ओर अग्रसर हो रहा है। मोहमदिराने उसे उन्मत्त बना दिया है—"पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत्"। इन सबका मूल कारण भगवान् आत्रेयने 'चरक-संहिता'के 'जनपदोध्वंसनीय-विमान'में अधर्मको बतलाया है, उस अधर्मका मूल कारण अपने पहले किये असत् कर्म और इन दोनोंका मूल कारण प्रज्ञापराध (बुद्धिका बिगड़ जाना) बताया है; यथा—

"तमुवाच भगवानात्रेयः—सर्वेषामग्निवेश, वाय्वादीनां यद् वैगुण्यमुत्पद्यते तस्य मूलमधर्मः, तन्मूलं चासत्कर्म पूर्वकृतम्। तयोर्योनिः प्रज्ञापराध एव।"

इस सम्पूर्ण विषयको विस्तृत रूपसे आजसे ७ वर्ष पूर्व हमने 'श्रीस्वाध्याय'में प्रकाशित किया था। परन्तु उस ओर किसीका ध्यान नहीं, कलियुगका प्रभाव ही ऐसा है और अब तो यह अपहार वा संहार-युग चल रहा है। बार्हस्पत्य मानेन प्रभवादि संवत्सर गणनासे भी इस सम[य] 'रुद्रविंशति' चल रही है, संहार करना ही इस विंशति[का] धर्म है। सर्वत्र प्राकृतिक यज्ञोंका संहार हो रहा है, वन जंगल नष्ट हो रहे हैं। यों तो कहनेको प्रतिवर्ष व[न] महोत्सव मनाये जाते हैं, नेतागण वृक्षारोपण करते हैं, प[र] उन लगाये गये वृक्षोंमेंसे १० प्रतिशतका भी पालन पोषण नहीं हो पाता। पशु पक्षियोंका संहार हो रहा है। पंचशीलका प्रचार किया जा रहा है पर शील और सदाचारका समूलोन्मूलन हो ता जा रहा है। युद्ध रोगादि द्वारा जनसंहारके छोटे छोटे दौर भी प्रारम्भ हो गये हैं। संसार अनार्यताकी मोह-मदिरामें उन्मत्त हो राजरोग ग्रस्त हो चला है। उन्माद, श्वास आदि रोगियोंको पहले छोटे-मोटे दौरे आते हैं, कभी महीने दो महीने ६ महीने वा वर्ष बाद भी आते हैं, पर रोग वृद्धिकी दशामें पहले दौरसे आगेके दौर अधिक भयानक होते हैं। इसी प्रकार विश्वविनाशक तृतीय महायुद्धके अभी छोटे दौरे कोरिया और मिश्रमें आ चुके हैं। अब आगेका दौर इससे भी भयानक होगा इसमें सन्देह नहीं। इस राजरोगको भारतीय आर्य पद्धतिसे उचित चिकित्सा करके न रोका गया तो विश्व

विनाशके मुखमें जानेको प्रस्तुत तो है ही । रूस और अमेरिकाके पास संसारके राजरोगकी औषधि नहीं है । यह औषधि तो केवल भारतके पास है और वह है पंचशीलका पालन, और 'आत्मवत्सर्वभूतेषु'की उदार भावनासे प्राकृतिक यज्ञोंका प्रचलन ।

आत्मसाक्षात्कारी महापुरुषोंका अनुभूतिपूर्ण ओजस्वी शब्दोंमें यह कथन है कि यज्ञ ही एक ऐसा उपाय है जिससे संसारकी रक्षा हो सकती है। छोटा यज्ञ छोटी और बड़ा यज्ञ बड़ी रक्षा करनेमें समर्थ होगा ही । यज्ञका छोटापन व्यष्टि हितसे ही मापा जाता है और यज्ञकी विशालता का मानदण्ड समष्टि यज्ञ ही हो सकता है । 'व्यष्टि' 'विकृति' है और समष्टि 'प्रकृति' । समष्टिके सुधारके बिना व्यष्टिका सुधार वास्तविक नहीं हो सकता । समष्टि सुधार प्राकृतिक यज्ञसे ही सम्भव है । आजकल इस संघवादी, विशेषतः व्यक्तिवादी युगमें प्राकृतिक यज्ञोंका रहस्य न तो लोग जानते हैं और न ही उन्हें जाननेकी इच्छा है। किन्तु संसारके कल्याणकी इच्छा रखने वाले पुरुषोंको प्राकृतिक यज्ञोंका रहस्य जानना ही पड़ेगा, अन्यथा वे संसारका तो क्या अपना वैयक्तिक हित साधन भी न कर सकेंगे । "यज्ञ क्या है ?" इस सम्बन्धमें महर्षियोंने बहुत कुछ लिखा है । साधारणतः व्यावहारिक आगमें लकड़ी घी आदि पदार्थोंको कुछ अक्षरात्मक मंत्र पढ़ कर आहुति देनेको ही यज्ञ समझा जाता है, किन्तु केवल इसी कृत्यको वास्तविक यज्ञ मान लेना भी यज्ञकी व्यापकतामें बाधक है। यज्ञ तो एक बहुत विशाल भावको रखता है। संक्षेपमें कह सकते कि ज्ञानवान् पुरुष जिस वस्तुको जिस स्थानमें वास्तविक हित-कर समझते हैं उसे वहां पहुँचाना ही यज्ञ है । अन्न और वस्त्र यह प्रत्येक मनुष्यको अत्यधिक आवश्यक इस समयके मनुष्य समाजमें माना गया है, उस अन्न और वस्त्रका समुचित व्यवस्थापन सारे मनुष्य समाजका हितकारक एक महान् प्राकृतिक यज्ञ है । जिस पदार्थके बिना जो पदार्थ जीवित न रह सके उस पदार्थको उसके पास पहुँचाना ही यज्ञ है । इस यज्ञका जो पालन नहीं करता उसको भगवान् ने अपनी गीतामें—

एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः ।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ ! स जीवति ॥

इस प्रकार वर्णित किया है । इस भौतिकवादी युगमें संसारके बड़े राष्ट्र छोटे राष्ट्रों और बड़े व्यक्ति छोटे निर्बल प्राणियोंको 'मात्स्यन्यायेन' उदरसात् करनेकी धुनमें हैं, इसी कारण संसारमें घोर अशान्ति व्याप्त है । श्रीमद्भागवत-में वर्णित भगवान् व्यासके—

उदारम्भ्रियते यावत्तावत्स्वत्वं हि देहिनाम् ।
ततोऽधिको यो मन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति ॥

इस आदर्श भारतीय आर्य साम्यवाद एवं उपर्युक्त प्राकृतिक यज्ञोंके द्वारा ही विश्व शान्ति सम्भव है ।

१९५७ (सं० २०१४) घटनापूर्ण वर्ष

सन् १९५७ और सं० २०१४ वि० संसारके लिए विशेष घटनापूर्ण वर्ष सिद्ध होगा । सन् ५७ गत कई शताब्दियोंमें जब भी आया है घटनापूर्ण ही रहा है । इसका विशद विवेचन हमने २ वर्ष पूर्व सं० २०१२ के पंचाङ्गमें किया था । गत वर्ष सं० २०१३ के पंचाङ्गमें पृष्ठ ३३ पर 'अन्तर्राष्ट्रीय जगत्' में स्पष्ट लिखा था कि — "कई जगह शासन बदलनेके लिए सशस्त्र क्रांन्तियां आश्विनसे आगे होंगी ।......पश्चिमी कूटनीतिज्ञों द्वारा फिर कहीं आश्विनसे आगे कोरिया जैसी स्थिति उत्पन्न की जावेगी ।" तदनुसार ठीक अश्विनसे आगे कार्तिक कृष्णपक्षमें ही दो पश्चिमी राष्ट्र ब्रिटेन और फ्रांसके द्वारा आक्रमण होकर मिश्रमें कोरिया जैसी स्थिति उत्पन्न की गई । इसी समय हंगरीमें सशस्त्र कान्ति हुई और सारे विश्वकी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति सहसा अशान्त बन गई । कार्तिक कृष्ण पक्षमें पचाङ्गके पृष्ठ २४ पर पाक्षिक फलमें भी हमने स्पष्ट लिखा है—".. गुरु शुक्र युद्ध होनेसे अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति अशान्त बनेगी ।...'गुरुशुक्रौ यदैकस्थौ नर युद्धं तदा भवेत् ।' इस वचनानुसार एक वर्षमें युद्धकी भयानक तैयारी होगी ।" ज्योतिर्विज्ञानके आधार पर एक वर्ष पूर्व लिखी गई भविष्य-वाणीने ठीक उसी समय (कार्तिक कृष्ण पक्षमें) अक्षरशः सत्य सिद्ध होकर भारतीय ग्रहगति विज्ञानके महत्वको बढ़ाया है ।

इस वर्ष सं० २०१४ का राजा चन्द्रमा और मंत्री शनि है, राजा आर्यनीति प्रधान शान्तिप्रिय है, किन्तु प्रधानमन्त्री अनार्य प्रकृतिका अशान्ति उत्पात चाहने वाला है और जगल्लग्न कुण्डलीमें शत्रु राशिस्थ होकर सुखभाव

में विराजमान है, दशमस्थ मंगलसे शत्रु दृष्टि सम्बन्ध कर रहा है, यह संसारकी सुख शांतिको भयप्रद बना रहेगा "युद्ध-दौ शनिसाहेयौ" अनैतिकता और षड्यंत्र घातप्रतिघातादि बहुत होंगे। संसारमें अनेक अकल्पित घटनाएं घटेंगी। अनार्य-नीति-प्रधान पश्चिमी राष्ट्रों और पश्चिम एशियामें गृहयुद्ध महामारी राज्यक्रांति आदिकी घटनाएं अधिक होंगी। जगल्लग्नमें मंगल बलवान् होकर राज्यस्थ है अतः आर्य नीति प्रधान क्षात्रबल-सम्पन्न शासक वर्गकी विजय होगी। अनेक स्थानोंमें सैनिक संरक्षण ही जनत्राण कर सकेगा।

भारतीय कांग्रेस और भावी चुनाव

भारतीय कांग्रेसकी स्थापना (जन्म) सं० १९४२ पौष कृष्ण ७ ता २८ दिसम्बर १८८५ ई० को इष्ट घट्यादि १२।५० पर मीनलग्न और धनुर्नवांशमें हुई थी, उस समय की ग्रहस्थिति निम्न है—



कांग्रेस नवांश लग्न



ता० २८ दिसम्बर १९५६ से कांग्रेसको ७२वां वर्ष प्रवेश हुआ है। गोचरमें शनि राहु और गुरुकी स्थिति अनुकूल है और बुध महादशामें बुधका ही अन्तर १३ जुलाई १९५८ तक रहेगा। बुध सुखेश सप्तमेश होकर भाग्यस्थ है और भाग्येश मंगलके साथ अन्योन्याश्रित राशि सम्बन्ध है। इसके अतिरिक्त अन्य भी कई राजयोग बन गये हैं इसी कारण भारतीय स्वतन्त्रताका श्रेय एवं शासन का गौरव सर्वप्रथम कांग्रेसको ही प्राप्त हुआ है। प्रधान-मंत्री श्री नेहरूजीका लग्न और राशि कर्क है, यह कांग्रेस जन्म कुण्डलीसे त्रिकोणस्थ और लग्नेशकी परस्पर परम-मैत्री है। अतः ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे यह स्पष्ट भासित होता है कि कांग्रेस रूपी विराट् शरीरके प्राण श्रीनेहरूजो हैं। मार्च १९५७ के चुनावमें कांग्रेस दलको ही कहीं स्वल्प तो कहीं विशेष बहुमतसे सफलता प्राप्त होगी। मार्च मास में शनि मंगलका प्रतियोग है और दोनों घोर शत्रु भी, अतः चुनावमें भयङ्कर संघर्ष और अनैतिकता अधिक होगी। यह हमने गतवर्ष संवत् २०१३ के पंचागमें पृष्ठ ३६ पर स्पष्ट लिखा था कि—"सन् ५७ के भावी चुनावमें भी बहु-मत कांग्रेसके पक्षमें ही रहेगा और केन्द्र तथा कई प्रान्तीय मन्त्रिमण्डलोंमें पुनः कांग्रेस ही पदासीन होगी।" महा-राष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, मद्रास, बिहार और बंगालमें कांग्रेसदल बहुत स्वल्प बहुमतसे सफल हो सकेगा।

गणराज्यका आठवां वर्ष और सन् ५७

गत वर्ष सं० २०१३ के पंचांगमें हमने गणराज्यके सातवें वर्षका विस्तृत भविष्य विवेचन किया था। उसमें आश्विनसे आगे पश्चिमी संसारके लिए अशान्ति कारक समय बताया था, भारत द्वारा विश्वशान्तिके प्रयत्नोंमें विशेष योगदान एवं श्री नेहरूकी विश्वव्यापी प्रतिष्ठा व लोकप्रियतामें वृद्धिका योग भी बताया था। वह सब यथार्थ घटित होता जा रहा है। सन् ५७ का इतिहास गत कुछ शताब्दियोंसे रक्तरञ्जित ही रहा है, अतः जनताका आशंकित होना स्वाभाविक है। परन्तु गत वर्ष सं० २०१३ के पंचांग और 'श्रीस्वाध्याय' में हमने इस भयको निरस्त किया था और वहीं लिखा था कि—फरवरीसे अक्टूबर १९५७ तक ग्रहयोग दूषित बनते हैं वहां यत्रतत्र राजनैतिक संघर्ष षडयन्त्र गतिरोध मंत्रिमंडलोंमें परिवर्तन, आधिदैविक आधि-भौतिकक उत्पात प्रकृति प्रकोपसे हानिका उल्लेख किया था। वही मत हमारा अब भी है। विश्वकी सुख शान्तिक ग्रसनेके लिए इस समय अमेरिका और रूस रूपी दो महा-

दानव (राहुकेतु) विश्वरंगमंच पर खड़े हुए हैं। जगल्लग्न कुण्डलीमें इस वर्ष शनि सुख स्थानमें शत्रु राशिस्थ होकर भौमसे दृष्ट है और शनि देव ही इस वर्षके प्रधानमंत्री हैं। वैशाख कृष्णा ३० ता० २९ अप्रैलको मेषराशिमें पंचग्रही योग है और वर्षारम्भसे श्रावणान्त तक शनि वक्री रहेगा, तथा पौषसे फाल्गुन तक वृश्चिक राशिमें शनि-मंगलका योग रहेगा। इस अवधिमें अनेक अवाञ्छनीय अकल्पित घटनाएं घटेंगी। कहीं सशस्त्र क्रांति और रक्षा-पंक्ति पर सैनिक आक्रमण होगा, आधिदैविक आधिभौतिक उत्पात भी अधिक होंगे। चोर डाकुओंका उपद्रव एवं हत्याकाण्ड होंगे। पश्चिमी एशियामें तृतीय विश्व युद्धकी ज्वाला भड़कती दिखाई देगी, परन्तु यहाँ पंचग्रही पर गुरुदेवकी मित्र दृष्टि है और जगल्लग्नेश सूर्य भाग्यमें उच्चराशि नवांशका पूर्ण बली है, एवं भारतीय गणराज्यके अष्टम वर्षका लग्नेश गुरु बलवान् होकर राज्यस्थ है, अतः शांतिप्रिय उदार राष्ट्रोंके सहयोग एवं भारतके अथक प्रयत्नसे विश्व विनाशके मुखमें जानेसे बच जायेगा। तृतीय विश्व युद्धसे विश्वका भयानक रूपमें विनाशकारक योग सं० २०१८ सन् १९६२ ई० में बनेगा। वहां माघ कृष्णामावास्या रविवारको मकरराशिमें आठ ग्रह एकत्र होनेसे भयानक कालकूट योग बनेगा। वह समय विशेष चिन्ताकारक होगा। ग्रहोंके बलाबलका विशेष विवेचन हम तात्कालीन पचांग और 'श्रीस्वाध्याय' में करेंगे।

२६ जनवरी १९५७ से प्रविष्ट होने वाले भारतीय गणराज्यके आठवें वर्षकी कुण्डली यह है—सं० २०१३ माघ कृष्णा १० शुक्रवार इष्ट घट्यादि ५५।१७। सूर्य ९।१२ ल० ८।१३।



वर्षके सम्राट् चन्द्रमा और महामात्य शनि दोनों व्यय स्थानमें राहुसे पीड़ित हैं अतः इस वर्ष राष्ट्रपति और प्रधान मंत्रीको घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं शांतिसे नहीं बैठने देंगी। दो राज्योंमें राष्ट्रपति शासन लागू होगा। धनेश व्ययमें है और धन भावमें सूर्य, अतः राष्ट्रीय सम्पत्ति का दुरुपयोग एवं अपव्यय होनेसे जनतामें क्षोभ होगा। गबन और दुराचारमें कुछ अधिकारी दण्डित होंगे। पड़ौसी राष्ट्र पाकिस्तानकी ओरसे सन्धियां भंग होकर आक्रामक स्थिति बनेगी। लग्नेश सुखेश गुरु राज्यभावमें है और राज्येश बुध मुंथेश शुक्रके साथ लग्नमें तथा मुंथा ११वें भावमें है, यह भारतीय गणराज्यके लिए विशेष शुभाशाप्रद उत्तम प्रगतिकारक योग बन गया है। कांग्रेस और भारतीय गणराज्यका जन्मलग्न मीन है और इस अष्टम वर्ष प्रवेशका लग्न धनुः है, एवं महामहिम राष्ट्रपति श्री डा० राजेन्द्रप्रसादजीका जन्मलग्न भी धनुः ही है, इनका स्वामी गुरु राज्यभावस्थ है, अतः नये वर्षमें भी केन्द्रीय शासनकी बागडोर कांग्रेसके शांतिप्रिय चरित्रवान् इन्हीं महापुरुषोंके हाथोंमें जाकर भारत उन्नतिके पथ पर अग्रसर होगा इसमें सन्देह नहीं। विज्ञान और नवीन अन्वेषणोंसे भारत विशेष उन्नति करेगा। चतुर्थ गुरु बलवान् है, अतः कृषि, भूमि सुधार, उपज, खाद और यातायातके साधनोंमें आशातीत प्रगति होगी। भूगर्भसे तेल, कोयला और मूल्यवान् धातुएं प्राप्त होंगी। भारतीय गणराज्यके अष्टम वर्ष लग्नकी ग्रहस्थितिको देखते हुए हमें विश्वास होता है कि भारत विश्वविनाशक अनार्य तत्वोंसे अलग रह कर अपना पथ प्रशस्त बनाता जायगा। लिखा भी है—

> यदा सवीर्यो मुथहाधिनाथो
> लग्नाधिपो जन्मविलग्नपो वा।
> केन्द्रत्रिकोणाय धनस्थितास्ते
> सुखार्थहेमाम्बरलाभदा स्युः॥

सप्तमेश बुधके साथ शुक्र लग्नमें है, अतः विदेशोंसे मैत्री सम्बन्ध बढ़ेगा और स्त्रियोंका वर्चस्व सर्वत्र स्थापित होगा। चन्द्रमा नीचस्थ और शनि राहुसे पीड़ित है, अतः सर्वसाधारण जनताका मानसिक स्वास्थ्य समाधानकारक नहीं रहेगा। आर्थिक संकट, करोंके बोझ और अनावश्यक व्ययभार तथा आवश्यकताओंकी पूर्ति न होनेसे गृहकलह बढ़ेगा। राष्ट्र, प्रान्त, नगर, कुटुम्ब परिवारमें कहीं वास्तविक स्नेह सद्भावना दिखाई नहीं देगी। पति-पत्नी, पिता-

सन् १९५७ ई० का भविष्य

[श्री० बी० व्ही० रमन सम्पादक एस्ट्रालाँजिकल मेगज़ीन]

[सन् ५७ के लिए जनतामें बड़ा आतङ्क फैला हुआ है. हमने गतवर्षके पंचांग और 'श्रीस्वाध्याय' के द्वारा इस भयको निरस्त किया और २०१४ के पंचांगमें भी स्पष्टीकरण कर दिया है । अभी-अभी 'एस्ट्रालॉजीकल मेग्जीन' के जनवरी विशेषांकमें श्री रमन महोदयने सन् ५७ का भविष्य दिया है—उसका हिन्दी अनुवाद हम यहां पाठकोंके लाभार्थ दे रहे हैं । —सम्पादक]

१९५७ का प्रारम्भ उस समय हो रहा है, जबकि शांति का भविष्य अन्धकारपूर्ण प्रतीत हो रहा है । महायुद्धकी ज्वाला प्रज्वलित होते-होते रुक गई है। लोकतन्त्री राष्ट्रों का नैतिक पतन हो गया है । उनके सामने एक विराट् नैतिक संकट है, क्योंकि वे अनुभव करते हैं कि वे न तो युद्ध हारनेकी स्थितिमें हैं और न वे शांति ही स्थापित कर सकते हैं । 'आरोह' शनिके प्रभावसे फैसिज्मका सिर कुचल दिया गया था । अब ऐसा प्रतीत होता है कि 'आरोह' शनिके ही कारण सर्वंकस अधिनायक सत्ता लोकतन्त्रको पराजित करेगी । इहलौकिक घटनाओंको प्रभावित करने वाले दो ग्रह हैं, शनि और राहु, तथा शनि और मंगल । अक्टूबर १९५६ में कन्याके 'नवमांश' में शनि-राहुकी युति हुई । इन दोनोंकी युतिके कारण अचिन्तनीय एवं अकल्पनीय घटनायें घटित हो चुकी हैं, जिनकी सालभर पहिले किसीको कल्पना तक नहीं थी—(१) राष्ट्रवादकी उठती प्रचण्ड लहर—हंगरी और पोलैंडने रूसकी अधिसत्ताको चुनौती देनेका साहस किया । (२) ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस सदृश देशोंने संयुक्त राष्ट्रकी अवहेलना की । यद्यपि संयुक्त राष्ट्रमें संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस सदृश राष्ट्रोंका सर्वाधिक प्रभाव है । इस स्थितिमें यदि मिस्र और हंगरीमें जली युद्धाग्नि शान्त न हो, तो साधारण व्यक्ति भी कह सकता है कि युद्धके बादल सिर पर मंडरा रहे हैं । परन्तु प्रश्न तो यह है कि ग्रह-नक्षत्र क्या कहते हैं ।

इस वर्षका मंत्रिमंडल अद्भुत है । सनकी चन्द्र इस वर्षका राजा है । स्त्रैण एवं भौतिकवादी शुक्र प्रधान सेनापति है । शोक-दुःखका नियंत्रक और श्रमका शासक शनि प्रधानमंत्री है । लोकोपकारी ग्रह बृहस्पतिको कम महत्वपूर्ण पद दिया गया है । व्यापारके स्वाभाविक स्वामी बुधका इस मंत्रिमंडलमें कोई स्थान नहीं है । इसका परिणाम इस प्रकार होगा :—चन्द्र राजा होनेके कारण, शासकगण प्रजा की महत्वाकांक्षाओंके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करेंगे। मंगल कार्य होंगे, वर्षा अच्छी होगी, अन्न-धान्य अच्छा होगा, जनता सन्तुष्ट रहेगी । शनिके प्रधानमंत्री होनेके कारण—घमण्ड और अन्यायकारी कानूनोंके कारण शासकगण दुःखग्रस्त होंगे; वर्षा कहीं अधिक और कहीं कम होगी; फसल नष्ट हो जायगी; जनता सामान्यतः असन्तुष्ट रहेगी ।

पुत्र और भाई-बन्धुओंमें झगड़े बढ़ेंगे । अनाचार फैलेगा । कई स्थानों पर शिक्षा-संस्थाओं और मिल आदि कारखानों में हड़तालादि उपद्रव होंगे । हर्शल अष्टम स्थानमें सूर्य मंगलसे केन्द्रयोग बना रहा है और नेपच्यूनसे भी मंगलका प्रतियोग है, यह किसी आकस्मिक दुर्घटनाका द्योतक है। कोई अभूतपूर्व रोग महामारी आदि फैले अथवा विचित्र प्रकार का कोई नवीन आविष्कार होगा ।

पाकिस्तान, काश्मीर, गोवा, नेपाल और भारतके सभी प्रान्तोंका भविष्य, धार्मिक सामाजिक संगठन और द्वितीय पंचवर्षीय योजना, वायुमंडल वर्षारोगोत्पातादि, व्यापार व्यवसाय और अन्तर्राष्ट्रीय जगत् (रूस अमेरिकादि)में आगामी वर्ष सं० २०१४ वि० में घटित होने वाले शुभाशुभ भविष्य का विस्तृत विवेचन आगामी "वसन्तांक"में प्रकाशित होगा ।

—

वित्तीय दुर्लभताके कारण व्यापार और व्यापारी चौपट हो जायेंगे।

वनस्पति अधिपति मंगलके कारण—तापमान बढ़ेगा; चौर भय, अग्नि भय और शस्त्र भय रहेगा; मानव-समाज साधारणतः खिन्न रहेगा; पशुओंका विनाश होगा। शस्त्राधिपति सूर्यके कारण—फसल अच्छी होगी; गन्ना, धान, गुड़ और स्नेह पदार्थ प्रचुर मात्रमें प्राप्त होंगे। मेघाधिपति शुक्रके कारण—वर्षा और फसल अच्छी होगी; जनता सुखी, प्रसन्न और सन्तुष्ट रहेगी। रसाधिपति बृहस्पतिके कारण—चन्दनकी लड़की, कपूर और मैंथलका मूल्य कम होगा। जनता अधिक धार्मिक प्रवृत्तिकी होगी। पशुओंके लिए चारा विपुल प्रमाणमें प्राप्त होगा। धातु अधिपति चन्द्रके कारण—चांदी, पारा और सूती वस्त्र, सदृश श्वेत पदार्थोंकी दुर्लभता रहेगी। व्यापाराधिपति शुक्रके कारण—देशमें साधारण व्यापार और रसीले पदार्थों, कपास, धान और गेहूंके भावोंमें हेर-फेर। शुक्रके प्रधान सेनापति होनेके कारण—शस्त्रीकरणमें वृद्धि; लोग अधिक विषयी होंगे।

इस वर्षके मंत्रिमंडलमें उल्लेख योग्य बात यह है कि अस्थिर वृत्तिके चन्द्र, शूद्र एवं चापलूस शनि और स्त्रैण शुक्रके पास तीन महत्वपूर्ण विभाग हैं। राजाके नाते चन्द्र नरेशों और कुलीनों पर अपनी कलाकी बढ़ती-घटतीके अनुसार कृपा रखेगा। शनि और शुक्र श्रमिक और महिला वर्गका प्रतिनिधित्व करते हैं और इस कारण इनका प्रभुत्व बढ़ेगा। किन्तु यह विश्वशांतिके अनुकूल न होगा। १९५७ भ्रामक, चिन्तन, असपूर्ण संकेतों, गलतफहमियों और विचित्र बाधाओंका वर्ष होगा। शनि साधारणतः लोकतन्त्रीय शक्तियोंके साथ रहता है, अतः समस्त संसारमें सर्वंकस अधिनायक सत्ता और संकीर्ण राष्ट्रवादकी ओर प्रवृत्ति दिखाई देगी और प्रत्येक देश विश्व-हितका ध्यान न कर अपने स्वार्थकी सिद्धिमें ध्यान देगा। कम्युनिज्म आगे और उदार होगा, किन्तु लोकतन्त्री स्वाधीनताएं आगे और अधिक प्रतिबन्धित होंगी। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें उथल-पुथल मचाने वाली घटनायें घटित होंगी। धनुमें शनिके प्रवेश करने पर संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस का प्रभाव घट जायगा और शक्तियोंके नये गुट्ट बनेंगे। २४ मार्चको शनि पीछे हटेगा और वृश्चिकमें ११वें अंश पर होगा। १२ अगस्तको भी वह १६ अंशमें होता हुआ यही चिह्न यह बनाएगा। जनवरी १९५८ के अन्तिम सप्ताहमें शनि पुनः धनुःमें प्रवेश कर रहा है। शनिकी गतिविधि वृश्चिकमें जब तक रहेगी, तब तक अंतर्राष्ट्रीय जगत्‌में गड़बड़ रहेगी। सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि सम्पूर्ण १९५७ के वर्षमें शनि और मंगल कभी नहीं मिलेंगे। मंगल वृश्चिक राशिमें १२ दिसम्बर १९५७ को प्रवेश करेगा। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि विश्व में युद्धाग्निके प्रज्वलित होनेका भय तो सदा बना रहेगा, किन्तु विश्वके सौभाग्यसे रूस और अमेरिकामें इस वर्ष लड़ाई न ठनेगी। राहु ७ मार्च १९५७ को तुलामें प्रवेश करेगा। इसके कारण मार्चसे अगस्त तक अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अत्यधिक गड़बड़ी रहनेकी सम्भावना है, और कोई भी बात किसी समय हो सकती है। विद्यमान मैत्रियां और सैनिक पैक्ट ठुकरा दिये जाएंगे और संयुक्त राष्ट्रकी उपेक्षा कर नए-नए मेल होंगे और नए गुट्ट पैदा होंगे। विश्वके सौभाग्यसे इसी समयमें बृहस्पति कन्यासे जायगा और अमेरिका व रूसके राजनीतिज्ञ युद्धाग्निमें न कूदनेकी दूरदर्शिता दिखायेंगे।

ता० १४ मईका चन्द्र-ग्रहण विशाखा नक्षत्रके मण्डलमें पड़ता है। इस दिन सोमवार होगा और वृश्चिकमें प्रथमांश होगा। इस ग्रहणका कुप्रभाव पाकिस्तान, मिश्र, ब्रिटेन और भारत पर पड़ेगा। इस अवसर पर भारत-पाक सम्बन्ध अच्छे न होंगे। साधारण जनके लिए भी यह प्रतिकूल है। जनों और पशुओंका बड़ा नाश होगा। चूंकि मंगल इस ग्रहणका स्वामी है, अतः जनतामें भारी असन्तोष रहेगा, सेनाओंकी गति-विधि बढ़ेगी, अग्नि-प्रकोप और ज्वर-प्रकोप होगा और महामारी फैलेगी। ता० ७ नवम्बर ५७ के चन्द्रग्रहणके फल-स्वरूप चट्टानें गिरने, खानोंमें विस्फोट होने, नौ-दुर्घटनाएं होने, तटवर्ती नगरोंमें समुद्री आंधी आने, जहाजोंके टकरानेसे सर्वहारा वर्गको भारी क्षति पहुंचेगी। इन ग्रहणोंके आस-पास भारतके पूर्वी भाग, गुजरात, दक्षिणी तुर्की, दिल्ली और मध्य मेक्सिकोमें भूकम्प आएंगे।

चांद्र वर्षकी दूसरी महत्वपूर्ण घटना है कि मंगल वक्री न होगा। यह एक बात इस बातकी द्योतक है कि अन्तर्राष्ट्रीय जगत्‌में भारी तनाव होने पर भी शान्ति बनी रहेगी।

यकृत रोगकी अनुभूत चिकित्सा

[लेखकः—श्री विश्वनाथ वैद्य]

प्राचीन ग्रन्थोंमें यकृत रोगके विषयमें अत्यन्त सूक्ष्म विवरण है। प्राचीनकालमें यह रोग अर्वाचीन कालकी भांति नहीं था, बहुत ही अल्प यकृत रोगी होते थे, वर्तमान समयमें यह रोग बहुत ही बढ़ गया है। बहुत कम लोगों का यकृत जैसा काम करना चाहिए वैसा नहीं करता। प्राचीन कालमें ग्रामीण लोग परिश्रमी जीवन व्यतीत करने वाले थे। उस समय शुद्ध आहार, शुद्ध जल, शुद्ध वायु मिलती थी, परन्तु इस वाणिज्य युगमें न तो शुद्ध जल है न ही शुद्ध आहार न शुद्ध वायु। आजका भोजन यकृतादि रोगोंकी ओर खींचकर ले जाता है। मानव-शरीरमें यकृत जैसा बड़ा उपयोगी यन्त्र दूसरा नहीं है। शरीरमें बांए भागकी पसलियोंके नीचे प्लीहा (तिल्ली) होती है, उसी प्रकार दाहिने भागमें पसलियोंके नीचे यकृत होता है। यकृत रोग प्रारम्भ होते ही कम्प देकर ज्वर आने लगता है, फिर ज्वर तो शांत हो जाता है पर यकृत रोग बना रहता है, रोग धीरे धीरे पुराना आकार धारण कर लेता है। यकृत कठोर होने लगता है, कुछ बड़ा भी हो जाता है, परन्तु तिल्लीकी तरह बहुत बड़ा नहीं होता।

यकृत स्थानको दबानेसे दर्द सा होता है, परिश्रम करने से यकृतमें वेदना होती है। गरम-गरम शरीरका रहना, मूत्र कम होना, कई बार होना, शिर दर्द, सफेद मैलसे ढकी हुई जीभ, रक्तकी कमी, दुर्बलता, मंदाग्नि, दाहिने स्कन्धमें वेदना, कीचड़ जैसा आंव युक्त मल, मुंहका स्वाद खराब, नेत्र पीले, कब्ज रहना, पेटमें वायुका जमा होना ये इस रोगके खास लक्षण हैं। पुराना मलेरिया ज्वर वा कुनाईन वा पारेका व्यवहार, अधिक मद्य पान, अधिक गर्मा-गर्म चायका पीना, सड़ा गला जूठा बासी अनियमित भोजन, अशुद्ध पदार्थ, चरपरे मसाले, बहुत अधिक तेलकी चीजें वैजिटेबिल घृतका सेवन, असमय कुसमय भोजन करने आदि कारणोंसे यकृत रोगकी उत्पत्ति होती है। आजकल बड़े नगरों में ही नहीं अपितु गाँव और कस्बोंमें भी शुद्ध खाद्य पदार्थ का मिलना कठिन है, अनियमित जीवन ही यकृत रोग की उत्पत्तिका कारण है। २ तथा ३-५-७ वर्षकी अवस्था के भीतरके बच्चोंका यकृत खराब हो जाता है, जिससे बालक हृष्ट पुष्ट नहीं होते, उनके चेहरेका रंग पीत और बदहजमी, पेट बड़ा हुआ होता है। शरीरमें खून कम होता है, बच्चों का बढ़ा हुआ यकृत भी औषधोपचारसे ठीक हो जाता है। परन्तु बहुत बढ़ने पर बड़ी आयु वाले मनुष्यका ठीक नहीं होता। प्रायः करके मैं देखता हूं डाक्टरी दवा खाते-खाते बहुत सा समय बीत गया है, रोगी उदास हो जाता है, किसीको तो यकृतकी डाक्टरी दवा खाते-खाते अभी ज्ञान ही नहीं है कि मुझे यकृत रोग है. क्योंकि दूसरे अन-भिज्ञ डाक्टर दूसरी ही बीमारी बताते रहे। मेरे पास आने

अक्तूबरके अन्तमें मंगल तुलामें प्रवेश करेगा और यहां यह दिसम्बरके मध्य तक रहेगा। लगभग २५ दिसम्बरको राहु-शनिका मंगलसे संक्रमण होगा। ग्रहोंकी इस स्थिति का जगत्‌के घटनाचक्र पर भारी प्रभाव पड़ेगा। पश्चिमी एशियाकी समस्या बहुत अधिक पेचीदी हो जायगी। युद्ध और रक्त पातका भय सूचित हो रहा है। प्रचण्ड अग्नि काण्ड और महान् जन-विनाशकी आशंका है। मिश्र और इजराइलके मध्य सशस्त्र युद्ध होनेकी आशंका है। भारत और पाकिस्तानके मध्य सम्बन्ध तनाव बढ़ेगा। ब्रिटेनमें घरेलू संकट उत्पन्न होगा। राष्ट्रोंके पारस्परिक सम्बन्धोंमें परिवर्तन होगा। २४ दिसम्बरको मंगल वृश्चिकके ६ पर स्पर्श करता है और लगभग १६ दिसम्बरको इस मण्डलमें प्रवेश करता है और इस मासके अन्तमें इस मण्डलसे बाहर आयगा। यह अवधि काल भारतके लिए बहुत प्रतिकूल है। व्यापारमें भारी उथल-पुथल होगी। विदेशोंमें राजनैतिक विफलताएं मिलेंगी, हड़तालें होंगी, अग्नि काण्ड होंगे, रेलवे दुर्घटनाएं होंगी, जन-विनाश होगा, और लोगोंकी मनोभावनाएं उत्तेजित होंगी। यह समय हमारे प्रधानमंत्री के लिए अन्तर्राष्ट्रीय और घरेलू राजनीतिमें विकट होगा।

———

वाले दीर्घ रोगियोंको जो कई जगह फिर चुके थे और उनकी यकृत सम्बन्धी बीमारी देखकर अनुभव करके देखा गया तो यकृतका ही मर्ज था, और तो उपद्रव थे। ७० प्रतिशत रोगियोंका पहला मर्ज यकृत होता है, उपद्रव खांसी श्वास ज्वर कामला कई प्रकारके मर्ज समझकर रोगी उनकी औषधि खाता रहता है, जिससे उपद्रव शांत न होकर बीमारी बढ़ जाती है, जहां तक मेरा अनुभव है, पहले खूब जांच कर लेनी चाहिए कि निदान क्या है क्योंकि यकृत रोग बहुत किस्मसे होता है, यह पहिले कहा जा चुका है, यकृत बहुत बड़ा यन्त्र होता है।

मूलभूत पित्तकी उत्पत्ति यकृतसे होती है, यह उदर गुहाके उर्ध्व भागमें दक्षिण और महा प्राचीरोंके नीचे स्थित है, आमाशय दोनों आते पक्वाशय प्लीहाका दूषित रक्त वहन करने वाली प्रतिहारणी शिरा यकृतमें प्रविष्ट होती है, सर्व शरीरमें संचार करते हुए रुधिरमें जो धातुपाकादि जन्य मल सञ्चित हुए होते हैं वे इस प्रकार यकृतमें आते हैं—प्रतिहारणीके परम सूक्ष्म आंतें यकृतके अणु इन मलोंका निर्हरण कर इनके विघटन और घटनसे पित्त निर्माण करते हैं, यकृतसे पित्तकी स्रुती प्रतिक्षण होती रहती है, स्वस्थ मनुष्यके प्रतिदिन कोई १०० तो० यकृतसे पित्त निकलता रहता है। पित्तकोष अमरूदके समान एक छोटा सा आशय होता है जो यकृतके अधोभागमें एक गर्त्तमें रहता है, यकृत कई प्रकारके कार्य करता है, कुछ वर्णन यहां किया जाता है, जिससे पाठकोंको इसके विषयमें ज्ञान होगा।

१. प्रथम कार्य पित्त उत्पन्न कर यथोक्त कार्य कराता है।

२. पित्तकी उत्पत्तिके लिए निर्जीव रक्त कणोंका विनाश करता है।

३. निर्जीव अणुओंमें स्थित किया आहार द्वारा प्राप्त आवश्कयतासे अधिक प्रोटीनका विघटन कर युरिआकी रचना करता है।

४. शरीरमें जरूरी शर्करा पैदा करता है।

५. अनेक विकारी जीवाणु जन्य विषोंको नष्ट करता है, इत्यादि और भी कार्य करता है, लेख बढ़नेके भयसे और नहीं लिखे गए। पुराने यकृत रोगमें पेटमें बहुत वायु सञ्चय होती है, जब तक वह गुदा मार्गसे निकल नहीं जाती है, बड़ी बेचैनी होती रहती है, यदि वह डकारोंके रूपमें निकलती है तो सर्व स्थानोंको दूषित करती हुई और भी खराब है। सबसे प्रथम इस रोगमें प्रकृतिकी शरण लेनी चाहिए। प्रातःकाल ४-५ माइलका अल्पवेगसे भ्रमण स्वास्थ्यके लिए अनमोल औषधि है, यकृत रोगीको प्रातःकालमें अमृतवेला की वायु बहुत ही श्रेयस्कर है। साधारणतया बैठा हुआ मनुष्य ४८० घन इंच वायुको खैंचता है। ४ माइल प्रति घण्टेके हिसाबसे चलता है वह २४०० घन इंच वायु श्वासमें खींच लेता है, इससे ५ गुना लाभ होता है। अरुणोदयकी (अमृत वेला) वायुमें ५ गुना पान करनेसे कितना अच्छा स्वास्थ्य बनेगा पाठकों आप ही अन्दाजा लगाइए। बड़े २ रईसोंकी तरह मोटरमें घूमनेसे लाभ नहीं होता है, दिमागी काम करने वालोंको अवश्य ही प्रातःकाल घूमना चाहिए। जैसे घड़ीकी एक सूई सैकिंड वाली घुमानेसे औरोंको बन्द रखनेसे घड़ी बिगड़ जाती है उसी प्रकार शरीरके ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय सभीसे काम लेना चाहिए। भावार्थ यह है कि परिश्रम भी अवश्य करना चाहिए। प्रातःकाल सर्वाङ्गासन, उर्ध्वाङ्गासन करने और थोड़ा २ बढ़ाते रहनेसे ५ मिनट करनेसे बड़ा आश्चर्यजनक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। मेरा निजका अनुभव है कि इन आसनोंके करने वाला नियमपूर्वक प्रकृतिकी शरण लेनेसे बिना औषधि ठीक तन्दुरुस्त हो सकता है। शरीरमें खूनका दौरा स्वाभाविक रीतिसे ऊपरसे नीचेकी तरफ होता रहता है, किन्तु इन आसनोंसे खूनकी गतिमें स्वाभाविक ही परिवर्तन होने लगता ह, वह नीचेसे ऊपरकी ओर होने लगता है। इन क्रियाओंसे खूनकी तमाम बीमारी ठीक हो जाती है। यकृत प्लीहा अपना कार्य ठीक करने लगते हैं, भूख बढ़ी लगती है, कब्ज कतई नहीं रहती। चेहरा लालसुर्ख हो जाता है यह स्वप्नदोषकी रामबाण दवा है, नेत्रोंकी ज्योती बढ़ानेमें अकसीर है, स्वास्थ्य ठीक हो जाता है। पहले कहा गया है यकृतमेंसे पित्त निकलकर भोजन पचानेमें सहायता करता है। यकृतकी शक्ति कम होनेसे भोजनका पाक अच्छी तरह नहीं होता इसलिए मन्दाग्निका भोजन करना चाहिए, गरिष्ठ पदार्थ बिल्कुल नहीं खाने चाहिए, यूं तो अनेक विद्वानोंने अनेक औषधियां बताई हैं। पश्चिमी लोगोंने अनेक औषधियां चला दी हैं। प्रकृतिके नियम बिना एक भी औषधि अपना चमत्कार नहीं दिखाती है, जितनी डाक्टरी दवाएं हैं वे स्थायी आराम नहीं करतीं, औषधि बन्द होते ही फिर

नवीन रोग हो जाता है। मेरे जो २० वर्षके अनुभवमें औषधि आई है वह गुप्त औषधि चिकित्सकोंके ज्ञानार्थ श्रीस्वाध्यायके पाठकोंके लाभार्थ लिखता हूं, जिन रोगियोंने १०० लीवर एकस्ट्रेक्ट एमीटोन लीवरजन आदि औषधि पीते बहुतसा समय बीत गया था वा डाक्टरोंने जिन्हें असाध्य बता दिया वह रोगी भी प्रकृतिका सहारा लेकर यह औषधि सेवन करके आरोग्य हो गए हैं। औषधि शास्त्रोक्त है, आज के नवीन समाजकी तरह नाम बदलकर मैं ऋषि मुनियोंकी आविष्कार की हुई वस्तुका और नाम नहीं रखना चाहता। परोपकारी ऋषि मुनियोंको अपयश देकर हम स्वार्थी क्या कर सकते हैं। प्राचीन वैद्योंने सब मार्ग बता दिया है, केवल हमारा यही काम है कि यह औषधि यहां पर फिट बैठेगी। उन पूर्वज ऋषि महर्षियोंकी शरणमें जाकर मुझसे अल्पज्ञ जीव भी कुछ करनेका साहस करते हैं, यह सब उनकी कृपा है।

औषधि इस प्रकार है—

शंख भस्म ४ रत्ती, कपर्द भस्म ४ रत्ती, प्रवाल चन्द्र पुटी २ रत्ती, मुक्ताशुक्ती ४ रत्ती, सूत शेखर रस सुवर्णयुक्त २ रत्ती, द्राक्षासव ५ तोला, पंचसकार चूर्ण ६ माशा, सरपुंखा क्षार १ माशा, यह सब एक दिनकी औषधि है। द्राक्षासव और पंचसकार चूर्ण बचाकर तीन पुड़ी खरलमें पीसकर बना लेनी चाहिए,प्रातःसायंकाल मध्याह्नकाल तीनों पुड़ी ३-३ समय पानीके साथ ले लेनी चाहिए,सन्ध्या समय वालीमें पंचसकार मिलालेना चाहिए। भोजनके १० मिनिट पीछे २॥तोला जल मिलाकर दो बार प्रतिदिन दोनों समय द्राक्षासव लेकर बाईं करवट कुछ समयके लिए लेट जाना चाहिए, परन्तु शयन नहीं करना चाहिए। खट्टे गर्म पदार्थोंसे बचना चाहिए, गौ दुग्ध दोनों समय पान करना चाहिए।

सूत शेखर रस सुवर्णयुक्त बनानेकी विधि—

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, सुवर्ण भस्म, रौप्य भस्म, शुद्ध सुहागा, सौंठ, मिर्च, पीपल, शुद्ध धतूरेके बीज, ताम्र भस्म, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, शंख भस्म बेलगिरी, कचूर, शुद्ध मीठा तेलिया समभाग मिलाकर कृष्ण भृंगराजके रसमें ६० दिन तक भावना देकर प्रत्येक दिन ६ घण्टे रगड़ाई अवश्य होनी चाहिए, छायामें शुष्क कर गोली २ रत्ती प्रमाण बना लेनी चाहिए। बहुतसी कम्पनी प्रायः करके एक ही दिन भृंगराजमें खरल करके रख लेती हैं, वह इतना उत्तम नहीं होता है, परिपूर्ण विधि विधानसे बनाने पर अपूर्व चमत्कार दिखाता है। पाठक बनानेमें असमर्थ हों वह हमसे मंगवा लें।

———

तीन मासका व्यापार भविष्य

[लेखक—प्रोफेसर श्री वी० सी० महता एम० आर० ए० एस०]

राहु-शनि का साथ मार्च ७ तक बराबर रहता है और फिर यह दोनों बड़े ग्रह एक दूसरेसे अलग होते हैं तथा राहु तुला राशिमें प्रवेश करता है और वृश्चिक राशिमें अकेला शनि रह जाता है, अकेला शनि मारकेटों पर इतना तेजीका असर नहीं करता, राहु शनि इस समय इकट्ठे होनेसे ही जनरल ट्रेण्ड तेजीका बना रहता है और मन्दी के बड़े योग भी बड़ी मन्दी नहीं ला सकते।

राहु शनिका खास तौरसे तैलवाना, जिसमें अलसी, अरण्डा, कपासिया, सिंगदाना, सरसों तथा तिल व इनके तैल सम्मिलित हैं, जिस दिनसे यह योग प्रारम्भ हुआ है (अर्थात् नवम्बर १९५५) जब से शनि राहु वृश्चिक राशि में एकत्रित हुए हैं तबसे तैलवानामें बराबर तेजीका फोर्स रहा है, अन्य छोटे मोटे मन्दीके योग आजानेसे समय २ पर मन्दीके रिएक्शन आये हैं परन्तु वह मन्दीका वातावरण स्थाई नहीं रहा।

कन्या राशिमें गुरुका प्रसार बड़ी मन्दीका द्योतक है और जब-जब यह ग्रह इस राशिमें आता है बराबर मन्दी का वातावरण पैदा हो जाता है, परन्तु गत १२ वर्ष पहले जब यह आया था तब राहु और शनि मिथुन राशिमें प्रसार कर रहे थे इसलिये जब तक यह योग चालू रहा बड़ी मन्दी इस ग्रहके प्रभावकी नहीं आई, किन्तु ज्यूंहि ६ जून १९४९ को शनि कर्क राशिमें प्रवेश हुआ और सारे बाजारोंमें मन्दीकी एक लहर सी दौड़ गई। चांदी, सोना, रुई कपास, गुड़, गुवार, मटरा आदि जनरल बाजारों में बहुत अच्छी मन्दी आई।

इस वर्ष भी गुरुका प्रसार कन्यामें चल रहा है, परन्तु यह अपने मन्दीके प्रभावको पूरी तरह जब तक नहीं बना सकता तब तक यह राहु शनि एकत्र हैं फिर भी राहु शनि की भयंकर तेजी भी अब नहीं हो सकती, जिस प्रकार गुरु की बड़ी मन्दीको राहु शनिने समाप्त कर दी है इसी प्रकार राहु शनिकी बड़ी तेजीको इस गुरुने समाप्त कर दी है, इसीलिये व्यापारियोंको बहुत सावधानीसे अपना धन्धा करना चाहिये। इकतरफी लाइन इस वक्त कोई नहीं है, केवल इस बातका ध्यान रखकर धन्धा करना चाहिये कि उछालेमें बेच कर लेवें, यानि उछालेमें बेचें और मन्दीमें वापिस खरीद लें। पोतेके धन्धेकी हमारी सलाह कम है।

मंगल ग्रह जो तूफानी घटाबढ़ी पैदा करता है वह भी इस समय गुरुकी राशि मीनमें चल रहा है, ता० ३० नवम्बरको यह सही रूपमें मीनमें आया है, गत छः माससे यह कुंभ राशिमें चल रहा था, यदि हमारा शरदंकके पहलेका गत 'ग्रीष्माङ्क' पढ़ा होगा तो आपने अवश्य देखा होगा कि हमने इस अतिचारी कुम्भमें मंगल तथा वृश्चिकके शनि राहुको भयंकर तेजीका योग बतलाया था, क्योंकि इन दोनों ग्रहोंका राशि परिवर्तन योग बनता है, जिसको शास्त्रों में 'अंगार योग' माना गया है, इसका प्रभाव प्रत्येक बाजार पर पर्याप्त हुआ तथा जब तक मंगल कुंभ राशि में रहा बराबर प्रत्येक वस्तुमें तेजी का फोर्स रहा। इस समय कुछ पंचागोंमें मंगलके मीन प्रवेशकी तारीखमें फरक पड़ा, किसीमें यह २२ नवम्बरको मीनमें प्रवेश हुआ, किसीमें २७ को हुआ किन्तु एक दो पंचाग ऐसे भी थे जिनमें मंगल तारीख ३० नवम्बरको मीन राशिमें प्रवेश हुआ। हमारा विचार है कि यह मंगल तारीख ३० को ही इसमें प्रवेश हुआ क्योंकि ता० दि० १ से ही तेलवानामें झटके की मन्दी आई तथा शेयर व अन्य मारकेटमें मन्दीका वातावरण प्रारम्भ हुआ। शेयरमें भी इसका विशेष प्रभाव दृष्टि गोचर हुआ। गुड़, गुवार, मटरा, सरसों आदिमें भी इसका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहा। चूंकि राहु शनि एक राशिमें चलते हैं इसलिये जैसी चाहिये थी वैसी मन्दी नहीं हुई, फिर भी बाजारोंका ट्रेण्ड इस ग्रहके कारण मन्दीका ही समझना चाहिये। जनवरी ता० १७ को यह मंगल मेष में प्रवेश करता है।

इस समय भी मंगलके मेष राशिमें प्रवेशकी तारीखमें अन्तर है, किसीमें ता० १७ को होता है, किसीमें ता० २० को होता है, और किसीमें ता० २२ को होता है, ता० २२

जनवरीके बाद तो किसी पंचागमें नहीं देखा गया, इसलिये इस जगह भी व्यापारियोंको बहुत सावधान रहना चाहिये, क्योंकि हमारा ऐसा अनुभव है कि जब मंगल बदलकर मेष राशिमें प्रवेश करता है उसके ७ दिन पहले एक मन्दी का झटका आना शुरू होता है और मंगल मेषमें प्रवेश होते ही वह मन्दी समाप्त हो जाती है. इससे व्यापारियों को विशेष सुभीता रहेगा, यदि ता० १८ को तेजी शुरू हो जावे तो मंगलका १८ जनवरीको हो ही प्रवेश समझना चाहिये और २२ ता० तक तेजी शुरू नहीं होवे तो २२ तारीखको ही तेजीका व्यापार चालू करना चाहिये। यह मंगल ता० ३ मार्च १९५७ तक इसीमें रहेगा और फिर वृष राशिमें प्रवेश करेगा, उधर उन्हीं दिनोंमें राहु शनि भी एक दूसरेसे अलग होवेगें, इसलिये यह समय भी व्यापारियोंके लिये अत्यन्त सावधानी रखनेका है, यहां प्रत्येक बाज़ारमें एक मन्दीका अच्छा झटका आ सकता है सो सावधान रहें। यह जनरल ग्रहोंके बाजारों पर प्रभावका हमने दिग्दर्शन किया है, नीचे हम विस्तृत रूप से मासिक व्यापार भविष्यका दिग्दर्शन कराते हैं।

तीन मासका विशेष विचार

यह अंक पाठकोंके सम्मुख १३ जनवरी ५७ तक पहुंचेगा। उस समय सूर्य बुध और शुक्र ग्रह धनुराशिमें प्रसार करेंगे, मंगल मीनराशिमें, गुरु कन्यामें तथा राहु और शनि वश्चिक राशिमें। सूर्य बुध और शुक्रका धनुः राशि में प्रसार मन्दीका द्योतक है और गुरु मंगलकी इन पर स्क्वायर दृष्टि भी मन्दी बतलाती है। केवल राहु शनिका योग तेजी बतलाता है, इसलिये विशेष जोर मन्दीका ही रहेगा। हर उछालेमें बेच कर लेना चाहिये।

तारीख १५ जनवरीको गुरु कन्या राशिमें वक्र होता है, यह उन चीजोंमें मन्दी लावेगा जो तारीख १५ के पहले तेजीके फोर्समें होगी, तथा जिन चीजोंमें ता० १५ के पहले १० दिनमें मन्दी आवेगी उसमें तेजी कर देगी, इसलिये पूरा ध्यान रखना चाहिये। हमारा ऐसा ख्याल है कि चांदी सोना, तेलावना आदिमें यह योग मन्दी लावेगा, तथा रुई कपास, गुड़, गुवार मटरामें तेजी सूचक होगा, सो बहुत ध्यान से व्यापार करें।

ता० २१ जनवरीको सूर्य बुधकी युति होगी तथा सूर्य का गुरुसे Trine बनेगा इसका प्रभाव तेजीका होगा।

ता० २५ जनवरीको सूर्य हर्शलका अपोजिशन योग बना है यह झटकेकी मन्दी शेयर चांदी सोनामें लावेगा, तथा इसका प्रभाव उत्तम मध्यम प्रत्येक बाजार पर पड़ेगा। तारीख २८ जनवरीको मंगल प्लूटोका ट्रायन बन रहा है इसलिये वापिस ट्रेण्ड तेजीका हो जावेगा तथा प्रत्येक बाजारमें तेजीका उछाला आ सकता है।

फरवरी १९५७

इस महीनेमें शनि मकरके नवांशमें प्रवेश करता है तथा गुरु वक्री अवस्था मीन तथा कुंभ नवांशमें चलेगा तथा नेपचून व हरशल ग्रहोंके साथ स्क्वायर व अपोजिशन योग बनावेगा। इसी मासमें गवर्नमेण्टका बजट भी आऊट होगा इसलिये इस महीनेमें प्रत्येक बाजारमें विशेष घटाबढ़ी की संभावना है सो सावधानी रखनी चाहिये।

गुड़ मारकेट:—प्रथम दो दिन तेजी फिर मन्दीका रिएक्शन, तारीख ५ से १३ तेजी और ता० १४ से १[illegible] तक मन्दीके रिएक्शन घटाबढ़ीके साथ, १९ से २२ फिर तेजी और फिर २३ से घटाबढ़ीके साथ बाजार नर्म रहेगा। विशेष विगत व दैनिक घटाबढ़ीके लिये हमारी फरवरी मार[illegible] की "स्पेशियल व्यापार भविष्य रिपोर्ट' केवल ५) रु० में मंगवाइये।

गुवार मटरा, दालवाना:—तारीख ३ से २३ फरवरी तक घटाबढ़ीसे मन्दीकी लाईन, ता० १४ से २४ तेजी का अच्छा रिएक्सन और फिर नर्म वातावरण अन्य बाजारों का खास तौरसे रुई कपास व तेलवानाका भी यही भविष्य रहेगा सो ज्ञात रहे।

मार्च १९५७

यह महीना विशेष महत्वका है, इस महीनेमें राहु-शनि १। वर्ष बाद अलग हो रहे हैं, ता० ७ मार्चको यह अलग होते हैं, आपको ५-७ दिन पहले ही अपना प्रत्येक व्यापार बराबर कर लेना चाहिये और जिन जिन बाजारोंमें ता० ७ मार्च के पहले तेजी आवे उसमें मन्दीका तथा मन्दी आवे उसमें तेजीका व्यापार बेधड़क चालू कर देना चाहिये, यह एक लम्बी लाइन बताता है।

त्रैमासिक व्यापार भविष्य

[लेखक—श्री पं० कृष्णदत्त शर्मा ज्योतिषरत्न]

ज्योतिष-शास्त्र एक ऐसा विज्ञान है जो प्रत्यक्षदर्शी है, प्राचीन आचार्योंने अपनी अथाह साधना द्वारा मंदी-तेजीके ऊपर सूत्र रूपसे संकेत किया है, उन मूल सूत्रोंके विशद विवेचनकी परमावश्यकता है, क्योंकि सूत्र रूप होनेसे सर्व-साधारण उस परमोपयोगी तथ्योंसे लाभ उठानेमें असमर्थ हैं, अतः विद्वत्समाजका कर्तव्य हैकि उन सूत्र रूप सिद्धान्तोंको सर्वोपयोगी बनाकर प्रकाशित करना चाहिए जिससे ज्योषित शास्त्रमें रुचि रखने वाले जन साधारण भी यत्किंचित् हृदयङ्गम करनेमें समर्थ हो सकें; साथ ही व्यापारी वर्गका कर्तव्य है कि ऐसे साहित्य सृजनके लिए ज्योतिष शास्त्रके प्रतिष्ठित पत्रोंको आर्थिक रूपसे प्रोत्साहन देकर उनके कार्य-क्षेत्रको विस्तृत करनेमें सहायक हों, क्योंकि वर्तमान युगमें जनताके सहयोग द्वारा ही किसी वस्तुको उन्नतिकी ओर अग्रसर किया जा सकता है। मुझे आशा ही नहीं विश्वास है कि व्यापारी बन्धु इस ओर ध्यान देकर ज्योतिष शास्त्रके अनमोल सिद्धान्तोंको प्रकाशित करने वाले 'श्रीस्वाध्याय' पत्रको अपना आर्थिक सहयोग देकर मार्ग प्रशस्त करने में सहयोग देंगे।

चांदी सोना गुड़ गुवारमें तथा तेलवानेमें हमारे ख्याल से अच्छी मन्दी आवेगी, हमने व्यापारी मित्रोंके खास आग्रहसे "सन् १९५७ का व्यापार भविष्य" दर्शाने वाली पुस्तकका इस वर्ष हिन्दीमें प्रकाशन किया है, हमारा विश्वास है कि ऐसी पुस्तक आपको कहीं नहीं मिल सकती मूल्य भी केवल १०) रु० है और 'श्रीस्वास्वाध्याय' के ग्राहकोंके लिये एक महीने तक आधे मूल्यमें यह अद्वितीय पुस्तक देनेका हमने निश्चय किया है। यदि आपको हमारे व्यापार भविष्य सम्बन्धी लेख जो इस 'श्रीस्वाध्याय'पत्र में वर्षोंसे प्रकाशित होते हैं पसन्द है तो यह पुस्तक अवश्य मंगवाइये।

—

आगामी तीन मासोंमें महत्वपूर्ण योग ग्रहचाल द्वारा घटित होते हैं, जिनका विवेचन प्रस्तुत लेखमें किया जा रहा है।

ता० ७ जनवरीको दिनके १० बजकर १४ मिनट पर कुम्भ लग्नमें बार्हस्पत्य मानसे साधारण सम्वत्सरका प्रवेश होता है। लग्नमें चन्द्रमा है उससे अष्टममें गुरु, धन भावमें मंगल, तथा चतुर्थ भावमें केतुका होना और लग्नेश शनैश्चरका निर्बली होना कपास, पाट, सोना, अन्न और गुड़में तेजीकी प्रतिक्रियाको करते हैं।

इस कुण्डलीमें एक योग मन्दी कारक भी घटित होता है, जिसका फल सम्वत्सरारम्भ होने पर और सम्वत्सरके नवम माससे एकादश मास तक अधिक होगा। योग—दशम शनैश्चर और राहुका विराजमान होना तथा एकादशमें सूर्य-बुध शुक्रकी स्थिति मंदेकी आगाही कारक होती है।

गगने एकादशे स्थाने मंदा क्रूराः शुभग्रहाः।
वस्तु जातं समर्घत्वं निश्चयेन वदेद्बुधः॥

इस सम्वत्सरमें दोतरफा योग घटित हो रहे हैं अतः यह सम्वत्सर दोतरफा घटा बढ़ीका द्योतक है। वैसे इस सम्वत्सर का नाम भी साधारण ही है। साधारण सम्वत्सरमें वर्षा, अर्घ (भाव) और भय साधारण ही रहते हैं, किन्तु प्रजा स्वस्थ मन और राजकोष परिवर्धित होता है। यथा—

साधारणाब्दे वृष्ट्यर्घं भयं साधारणं मतम्।
सस्यसम्पद्धराधीशाः प्रजासु स्वस्थ चेतसः॥

ता० १३ जनवरीको रात्रि दश बजे सिंह लग्नमें मकर संक्रान्ति प्रवेश हो रही है, लग्नेश सूर्य षष्ठ भावमें है जिस पर गुरुदेवकी पूर्ण दृष्टि है, मकर राशि पृथ्वी तत्वात्मक और मिश्रराशि है, वहां सहस्ररश्मीका प्रवेश होना उस पर कन्या राशि पृथ्वी तत्वात्मिका वन्ध्या राशिमें गुरुका विराजमान होकर पूर्ण दृष्टिपात करना पूर्ण फलको नहीं देगा। किन्तु फिर भी उपक्रमसा-

त्मिका दृष्टिके रहते मंदीके वातावरणके लिए सहायक सिद्ध होगा। संक्रमण कालमें मृगशिर नक्षत्र है, यह नक्षत्र सूर्य और भौमसे विद्ध है, किन्तु सूर्य गुरुदेवकी दृष्टिमें है, तथा भूमिपुत्र दैत्याचार्यसे विद्ध है, इसलिए वस्त्रों, जलसे उत्पन्न होने वाली वस्तुओं व रत्नों तथा लाखादि निर्यासों, को—द्रवादि अन्नों और चांदी व रुई आदि वस्तुओंके मूल्योंमें केवल एक सप्ताहके लिए मंदीकी प्रतिक्रियाको देगा अतः व्यापारी वर्गको सतर्क रहना चाहिए।

पौष शुदी एकादशीको कृत्तिका नक्षत्र है, जो लाल वस्तुके संचयसे भविष्यमें लाभकी आगाही करता है।

पौष शुदी एकाकशी कृत्तिका नक्षत्र होय।
लाल वस्तुसे लाभ हो संशय करो न कोय॥

इस वर्ष पौषकी संक्रान्ति शनिवारी तथा माघकी रविवारी और फाल्गुनकी संक्रान्ति भौमवारी होनेसे खर्पर योग बनता है, जो कष्ट व तेजी विशेषतः खाद्यान्नों व तेल बीजोंमें करता है। यथा—

शनिः स्यादाद्य संक्रान्तौ द्वितीयायां प्रभाकरः।
तृतीयायां कुजे योगः खर्पराख्येतिकष्टकृत॥

ता० १७ जनवरीको दिनके पौनेदश बजेके आसन्न अग्निरूप मंगलका अग्नितत्वात्मिका मेष राशिमें प्रवेश होनेसे सामूहिक तेजीके वातावरणको उत्पन्न करनेमें सहायक सिद्ध होगा, किन्तु मंगलको गुरुदेव त्रिपाद दृष्टि द्वारा २३से ३१ जनवरी तक देखेंगे, परन्तु गुरु देवका वन्ध्या राशिसे दृष्टिपात करना प्रबल समर्थक नहीं है, अतः यह केवल मंदीके अस्थायी झटकोंके रूपमें ही सिद्ध होगा।

ता० २७ जनवरीसे सूर्यको शनैश्चर अपनी पूर्ण दृष्टिपात द्वारा देखेंगे। जो ता० ९ फरवरी तक दृष्टिपात चालू रहेगा उस कालमें एक सामूहिक तेजीकी प्रतिक्रिया करता है। माघ वदी तृतीयाका क्षय तथा माघ शुक्ल द्वितीया व तृतीयाको क्रमशः शुक्र और शनिचारका आना अन्न और तिलहनमें तेजीकी प्रतिक्रियाके सूचक हैं। ता० १ फरवरीको चन्द्रोदय शतभिषा नक्षत्रमें हो रहा है, यह चन्द्रोदय १५ मुहुर्त्ती तथा भौमसे एक पाद दृष्ट और शनैश्चरसे त्रिपाद दृष्टि द्वारा दृष्ट होनेसे तैल बीजों-तैलों कोद्रवादि अन्नों, ऊन, मूंग, मोठ, उड़द, मक्की, व सोना, तांबा और रुईमें तेजीकी प्रतिक्रियाको करता है।

ता० ८ फरवरीसे मंगल शनैश्चरको अपनी पूर्ण दृष्टि द्वारा देखेगा किन्तु यह दृष्टि उतनी अधिक सफल नहीं होगी क्योंकि शनैश्चर जलतत्वात्मिका राशिमें परिभ्रमण कर रहा है, अग्निका जलसे सम्पर्क स्थापित करना पूर्ण प्रभावमें बाधक बनेगा, यह योग ता० १ मार्च तक चलता है। ता० १२ फरवरीको कुम्भ संक्रांति भौमवारी मेष लग्नमें प्रवेश हो रही है, उस दिन पुनर्वसु नक्षत्र ४५ मुहुर्त्ती वाला है; वक्रावस्थामें चलनेसे गुरु द्वारा क्रोधित है, किन्तु गुरु ग्रह बन्ध्या राशि और राशि परत्व अस्त राशिमें होनेसे यह मंदीके तो एक रीएक्शन मात्रको ही देगा, किन्तु स्थायी रूपसे सोना, चांदी, कपास, ज्वार बाजरा मक्की, चावल, गेहूं आदि धान्यों खांड, गुड़ तैलादि रसोंमें और रेशमी वस्त्रोंमें तेजीके वातावरणको बनानेमें प्रबल समर्थक होगा।

फाल्गुन वदी षष्ठीको स्वाति नक्षत्र है, यह दुर्भिक्ष सूचक है। ता० २६ फरवरीको राक्षसगण नक्षत्रमें शुक्रास्त हो रहा है, जो सर्व प्रकारके अन्नोंमें तेजी कारक है। यथा—

यदा फाल्गुनके मासे प्रयात्यस्तं भृगुसुतः।
धान्यादि सर्वसस्यानां तदा वाच्या महर्घता॥

ता० ३ मार्चको चन्द्रोदय रविवार उत्तराभाद्रपद नक्षत्र ४५ मुहुर्तमें हो रहा है, इस चन्द्र पर शनैश्चरकी आधी दृष्टि है, किन्तु गुरुदेवकी पूर्ण दृष्टि है, देवाचार्यकी दैत्याचार्य की त्रिपाद दृष्टि और बुद्धिके अधिष्ठाता बुधकी पूर्ण दृष्टि है, परन्तु शुक्र अस्त है और बुध अस्ताभिलाषी। निष्कर्षात्मक स्थिति यही है कि यह चन्द्रोदय सभी वस्तुओं में सामूहिक तेजीके वातावरण तीन सप्ताह तक चालू रखेगा। ता० ७ मार्च से १३ मार्च तक सूर्य पर राहुकी पूर्ण दृष्टि का होना भी तेजीमें सहायक सिद्ध होगा।

ता० ७ मार्चसे मंगल पृथ्वीतत्वात्मिका तथा फलवती राशिमें प्रवेश कर रहा है, उसे पृथ्वी तत्वात्मिका वक्रावस्थास्थित राशिपरत्व अस्त गुरुकी पूर्ण दृष्टि है, किन्तु गुरुदेव बन्ध्या राशिमें विराजमान होनेसे समर्थ नहीं है, अतः जो भी मंदी आवेगी अस्थायी रूपक ही होगी। फाल्गुन सुदी अष्टमीको रोहिणी नक्षत्र तथा साथमें शनिवारका होना खाद्यान्नोंमें तेजी कारक है।

ता० १४ मार्चको मीन लग्नमें तीसरे वार चौथे नक्षत्र में तथा सूती अवस्था और अपूपभक्षण क्षुधिता संक्रांति लग

ज्योतिषीकी दृष्टिमें तैयार और वायदे सट्टेकी तेजी मंदी

[पौष शु० १० ता० ११ जनवरीसे चैत्र शु० १० ता० १० अप्रैल तक]

[लेखकः—श्री पं० ओंकारप्रसाद शर्मा ज्योतिर्भूषण]

हम किसी बातका छिपाव न रखकर जनताके लाभार्थ साफ चांस इस लेखमें दे रहे हैं जो हमारे परीक्षित हैं, तैयारी वाले नोट करें। सं० २०१३ पौष शुदी दशमी ता० ११ जनवरी १९५७ से मिती चैत्र शुदि १० सं० २०१४ तदनुसार ता० १० अप्रैल १९५७ ईसवी इन तीन महीनोंके अन्तर्गत व्यापार पति बुध देवका रथ प्रथम तो भगवान् भास्करसे पीछे फिर २० मार्च १९५७ ई० से भगवान भास्करसे आगे चलता हुआ— दुर्भिक्ष और सुभिक्षका फल देगा, अर्थात् प्रथम तो २० मार्च तक दुर्भिक्ष फल देनेके फलस्वरूप तैयारीमें तेजीकी जनरल प्रतिक्रिया स्थिर रहेगी, पश्चात् २० मार्च से ९ अप्रैल तक मोटी मंदी तैयारी तथा सट्टे वायदोंके मार्केटमें सम्पन्न होगी। ये उपरोक्त धारणा जो हमने लिखी हैं यह पक्की और गारंटीकी है, इसलिए २० मार्चके बाद आई हुई तेजी एक रियक्शन मात्र ही जानना और तेजीके रियक्शनोंमें भारी मंदी आने की तारीखे नीचे लिखे लेखसे समझना। क्योंकि जनरल लाइन चाहे तेजीकी हो अथवा मंदेकी उनमें और भी पड़े योग अपने प्रभावसे तेजी मंदी अवश्य लाते हैं और जब लाइनके अनुसार ही फलकारी ग्रह योग बनते हैं तो वहाँ ही भारी चांस तेजी अथवा मंदेके सम्पन्न हो जाते हैं। ऐसा विचार बहुधा व्यापारी भी अब समझते हैं और यह होता भी है।

पर तैयारी वाले ये अवश्य ध्यान रखें कि उपरोक्त सुपीरियर लाइनमें किए स्टाक गेहूं चना, मटर, बाजरा, लाहा, तिलहन, अरंडा, रुई आदिसे अवश्य बेचकर साफ निकल जायें ताकि भविष्यमें मंदीका चांस आपको लाभ दे सकें। और भरमंदेमें किए स्टाक आगे आपको लाभ दें। यद्यपि ये लाइन मन्देकी आगे भी चलेगी और इसका फल काफी विस्तारमय है पर हम यहां सिर्फ चैत्र सुदी १० मीं ता० १० अप्रैल तकका ही लिखेंगे। आगेका लेख इस अंकसे आगे वसन्तांक 'श्रीस्वाध्याय'में छपेगा।

पौष सुदी १० मी ता० ११ जनवरीको सूर्य बुध का युद्ध तेजी चांदी, सोना, रुई, सूत, मटर, गुवार, चना, वाजरा, तिलहन, तेल, गुड़में करेगा, पर चावल यहां मंदे रहेंगे। यह योग सूर्य बुधका लम्बी लाइन तेजीकी बनाता है पर अन्य ग्रह योग मंदीके भी सम्पन्न होते रहेंगे। पौष

रही है, जिसका फल मिश्रित है। चतुर्थ वारी होनेसे दुर्भिक्ष से सुभिक्षकी स्थिति उत्पन्न करती है, सूती अवस्थासे सूत्र और कपासमें तेजी कारक है (सूती-सूत कपासेखा) क्षुधित होनेके कारण खाद्यान्नोंमें मूल तेजी सूचक है। अपूप भक्षण से हर प्रकारके रस (खांड-गुड़-घी-तैलादि) सोने और तांबेमें तेजी सूचक है। यथा—

अपूपं भक्षणं कुर्यात् रसाः सर्वे महर्घता।
हेम ताम्रं महर्घन्ति लोके व्यापारको भवेत्॥

चैत्र वदी प्रतिपदाको रविवार होनेसे अवृष्टि या ओले पड़नेसे खेतीकी उपजमें बाधा हो, संसारका राजनैतिक वायुमण्डल उत्तेजना पूर्ण हो।

ता० २२ मार्चको मंगल राहुका परस्पर वेध समाप्त हो जाता है, ता० २४ मार्चको सायं वृश्चिक राशिमें शनैश्चर वक्रावस्थामें चलना प्रारम्भ हो जावेगा। ता० २ अप्रैलसे १७ अप्रैल तक मंगल और शनिका प्रतियोग चलेगा जिसका पूर्व रूप ता० ११ अप्रैल तक, उत्तर रूप ता० १७ अप्रैल तक है, किन्तु यहां पर मंगलको बुध ता० २ अप्रैलसे ही वेधना प्रारम्भ कर देता है और इसी दिन रात्रिको बुधोदय भी हो जाता है जो ता० ७ अप्रैल तक मंगलको वेधता है, यहां पर प्रतियोग कर्त्ता भौम प्रबल है क्योंकि इसका पृथ्वी तत्वात्मिका और फलवती राशिमें संचार होना प्रबलताका सूचक है, ऐसे भौमकी बुद्धिके अधिष्ठाता अबुधका वेधना मंदे के वातावरणको उत्पन्न किए बिना नहीं रहेगा। विशेष चांस जाननेके लिए जवाबी पत्र द्वारा फीसका निश्चय करिए।

———

१२ मकरेऽर्कः पुनः १६ जनवरी पौष सुदी पूर्णिमा पर पूर्वोदयं बुधः एक बार मंदीका बोलबाला करके पश्चात् तेजी की चाल बनायेंगे। गुड़ इस महीनेमें सट्टा नीचा न रहकर १) रु० मन ऊंचा जायेगा। धारणा गुड़ जनवरीमें तेजी की है, ऊंचे भावमें तारुणी करना लाभप्रद होगा। चांदी सोना इस माह मंदेमें खरीदना, मटर चना लाहा जोरदार तेजी में बेचना।

माघ मास सं० २०१३ की तेजी मंदी

माघ महीना ता० १७ जनवरी १६५७को प्रारम्भ और १४ फरवरीको समाप्त होगा, इस माघमें ५ गुरुवार हैं और चांस मन्देकी अन्तिम दशामें माघ बदी एकमको समाप्त करके तेजीके चालू हो जायेंगे अतः मार्केटमें तैयारी लेकर वायदे बचकर और अगले वायदोंके खरीदार भविष्यमें कुछ दिन ठहरकर लाभ उठा जायेंगे अतः यहां गुड़के मंदेमें स्टाक करने वाले लाभ जरूर उठा जायेंगे और धातु पदार्थ भी लेना तथा आयरन शेयर लाहा और रुई भी मंदेके झटकोंमें खरीदते रहना, मटर चना गुवार बाजरामें समता मंदीमें तेजी आयेगी।

माघ बदी १ ता० १७ जनवरीसे २१ तक गुड़ मटर गुवार, तेल, चांदी, सूत रुई सब मन्दे होकर तेज होंगे। ता० २१ जनवरीसे २४ जनवरीमें प्रत्येक वस्तु तेजीमें मन्दी होगी, पश्चात् माघ कृ० १० ता० २५ जनवरी से २६ जन० में सूत ऊन तथा बारदाना जोरदार तेज होगा, पर गुड़ मन्दा होकर ता० २६ से २६ जनवरीमें तेजीमें। मटर गुड़ गुवार चना मन्दा होकर ३० जनवरीसे २ फरवरी तक मन्दा होकर गुड़ चांदी लोह पदार्थ कालीमिर्च तेज होंगी। ता० ३ फरवरी से ता० ५ फरवरी बसन्त ५ तक चांदी ब्लैड शेयर पीतल कपास रुई गुड़में मन्दा होगा। ता० ५ फरवरी माघ सुदी ५ से सुदी ७ तक जो भी वस्तु मन्दी रहे उसे ही खरीदें ४ या ७ दिन में लाभ उठाना (विपरीतमें विपरीत चाल जानें) हर वस्तुमें मन्दीमें तेजी का जोर रहेगा,

धारणा—फरवरी १६५७ में चांदीमें ७ से ११ टके, रुईमें १४ से १६ टके, तेलमें ३) रु०, लाहामें १॥।) से २॥) रु०, गुड़में १॥≡) से २≡) मन तककी लाइनें चलेंगी। अरंडा, सींगदाना, तोरियामें १॥।) से २≈) और बारदानामें ३) रु० की घटबढ़ होगी।

फाल्गुन सं०२०१३ की तेजी-मंदी

यह महीना १५ फरवरीको प्रारम्भ होकर १६ मार्चको समाप्त होगा। इस महीनेमें व्यापारपति बुधग्रहका सूर्यसे पीछे होना सामूहिक रूपसे तेजीकारक है। बदी १ ता० १५ से १८ फरवरी तक गुड़, मटर, गवार, चना, तेल सरसोंमें तेजी, औषध वस्तु ,उड़द, अरहर पंसारटके सामान और रुई ता० १६ वदी ५ से मंदे होंगे। ता० २१ फरवरी फाल्गुन वदी ७ से चांदी, सोना, गुड़, रस कसाय वस्तु, रोली, मौली, गुलालमें तेजी बढ़ेगी। ता० २४ से २७ में चांदी, रुई, रोला रंगमें अच्छी तेजी आयेगी। फाल्गुन वदी ३० ता० १ मार्चको लाइन परिवर्तन होगी, अतः प्रथम तीन दिवस मंदी बादमें सभी वस्तु तेजी पर जायेंगी। (यहां विपरीतमें—विपरीत चाल जानें) फाल्गुन शुदी ६-७ ता० ७-८ मार्चमें गुड़, तेल, ऊन, चांदी मंदी फिर इसके बाद जो भी लाइन अष्टमीसे चलेगी वो ही लाइन होली तक चलेगी।

धारणा—मार्च १६५७ में चांदीमें ६) से १४), रुईमें २०) अरंडा, तोरिया, लाहामें १॥) या ३) रु०, मूंग, उड़द, मूंगफलीमें १॥) से २॥≡) तक तथा गुड़में बैशाख सट्टा फाल्गुनसे पहिले तो ज्यादा फिर ॥≡) से ॥।) कम हो जायेगा और ये हमारी परीक्षित चेतावनी कि वायदा बैशाखमें मंदी तो हाजिरीमें स्टेडियन रहेगी और २–) या २॥–) की लाइन चलेगी ऊंचेमें बेचना।

चैत्र मासकी तेजी-मंदी

चैत्र कृष्ण पक्ष ता० १७ मार्चको आरम्भ होकर ३१ मार्चको समाप्त होगा। ता० ३१ को शुभ योगोंमें विक्रम सं० २०१३ का अन्त होगा, बदी १ से ३ तक जो वस्तु मन्दी रहें, उन्हें जरूर खरीदना। चांदी, गुड़, तेल, सींगदाना, अरण्डा, मटर, गेहूं ३ दिनमें तेज होगा, पर यहां ये नोट है कि अगर पहिले ही तेजी आई दीखे तो ये चांस मन्दीका बन जायेगा। सिर्फ ये विचार रख कर ही खुले दिलसे बेधड़क व्यापार करके लाभ उठाना। ता० २१ मार्च की बनी लाइन पर व्यापार बढ़ाना लाभप्रद होगा। चांदीमें ३ या ४), गुड़में ।≈) से ॥–), मटर ।–), ग्वार =)॥ से ≡)॥, सरसोंमें ।≡) से ॥।≡) तक यहां लाइन चलेगी।

त्रैमासिक व्यापारकी जनरल रूपरेखा

[लेखक—राजवैद्य डा० श्री भ्रमरदत्त मिश्र H. M. D.]

निरयन सिद्धांतोंके आधार पर जनरल रूपरेखाके रूपमें व्यापार भविष्य 'श्रीस्वाध्याय'के पाठकोंके सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें चांदी सोना, रुई गुड़, अनाज तेल आदि पदार्थोंमें ग्रहयोग-बलसे जो-जो परिवर्तन आवेंगे उनका नवांशके आधार पर जो फल संभवित एवं चांदी सोनेमें विशेष परिवर्तन आदिका विवेचन ग्रहोंकी दृष्टिके आधार पर उल्लिखित है—पाठक ध्यानपूर्वक पढ़ें और मनन करें तो इस पर आपको सही लाभ संभव है।

यह लेख फरवरी, मार्च, अप्रैलमें जो-जो नवांशके आधार पर परिवर्तन होंगे उनका ध्यान व्यापारी वर्गको दिलावेगा और व्यापारी वर्गका सही ध्यान जमेगा तो अवश्य ही लाभ निहित है। विषद रिपोर्ट जिन व्यापारियों को चाहिए वे सज्जन श्रीस्वाध्याय सदन सोलन द्वारा हमें ३७) रु० एडवांस प्रति जिसकी दरसे भेजकर मंगवा सकेंगे। बिना एडवांसके कोई रिपोर्ट नहीं भेजी जावेगी, यह ध्यान रहे, न वी० पी० से ही भेजनेका नियम है।

यही इस पक्षका खास चांस सम्पन्न होगा। ता० २४ मार्च वदी नौमी शनि वक्री एक लम्बी लाइन चलायेगा और इसका असर चैत्र सुदी १० तक रहेगा। प्रथम दो तीन दिन भड़की मार्केटोंमें आकर शनिकी अधिकृत वस्तुओंमें शनैः-शनैः पीछेसे मन्दी आने लगेगी, इसलिए यहां हर ऊंचे भावमें लेकर नहीं फंसना, बल्कि ऊंचेमें बेच कर ही लाभ उठाना।

धारणा—मार्च १९५७ में फाल्गुन मासकी तेजी-मंदी भविष्यके नीचे लिखे अनुसार है, क्योंकि अन्तिम मार्च चैत्र वदी अमावस्याको समाप्त होगा। यहां ये अवश्य ध्यान रखना कि २१ से २५ या २६ मार्च तक तेजी आने पर बेचनेसे गुड़, मटर, लाहा, सरसों और गेहूं व रुईसे जरूर लाभ उठाना, पहिले शुरू तेजी, बाद ॥=) आना मन्दी होगी।

—★—

अब ध्यान देवें माह फ़रवरी १९५७ में भी कई परिवर्तन आवेंगे, १२ फरवरी १९५७ तककी स्थिति ग्रहयोगसे तेजीकी टोनमें चले पुनः बाजार बदलेगा, गुरु १६ जनवरीसे वक्री होकर मीनके नवांशमें यह सब चीजोंमें मंदीका सूचक है, पर चांदी सोनेमें विशेष परिवर्तन होंगे। गुड़-गेहूँ मंदे रहें यह स्थिति २० फरवरी १९५७ तक रहेगी, रुईमें तो विशेष तेजीका झटका अवश्य ही लावेगा। पुनः गुरु कुंभके नवांशमें आ जाता है, तब पहिले जो वस्तुएँ तेज रही थीं वे सब तेज हो जावेंगी, पर तैलको यहां अवश्य ही तेज समझें। गुड़ गेहूं आदि पहिलेसे विपरीत रहेंगे। ३० जनवरीसे १ फरवरी तक श० सू० की सेक्सटाइलके प्रभावसे तिल, गुड़, सोना, काकड़ा आदिमें तेजीका झटका आवे, यदि यह झटका आया तो १ फरवरी १९५७ के स्टेण्डर्ड टाईम२बजेतक संभव समझें,पुन:विपरीत फलहोगा। एवं शनि भी ७ जनवरीसे १६ फरवरी ५७ तक गुरुके नवांशमें रहेंगे अतः १६ तक मंदीका संकेत करते हैं पर जो भी होगी घट-बढ़के साथ होगी। ऊपर हमने गुरुको भी स्वनवांशमें बताया है यह मीनके नवांशमें गुरु रुईमें विशेष असर करेगा, यदि तेजी आवेगी तो जोरदार लानेका संकेत है और चांदीमें मंदी लावे यह स्थिति गुरुके नवांश-वश रहेगी। मंगल २ से ८ फरवरी तक कर्क नवांशमें विराजेंगे अतः नीचस्थ नवांशके प्रभावसे चांदी सोनेमें मंदी अवश्य ही लावेगा, ८ फरवरीसे १४ फरवरी तक सिंहस्थ भौम नवांश वश सोनेमें तेजी अवश्य ही लावेगा। १६ फरवरीको स्वनवांशमें आवेगा तब तिल तैल गेहूं आदिमें तेजी करनेका है, यह सही ही समझें। गुरु भी २० फरवरी को स्वनवांश छोड़कर शनिके नवांशमें पधारेंगे, कुम्भमें—यह तिल तैल रुई आदिमें तेजी करेगा एवं रुईमें भी इसके प्रभावसे अवश्य ही तेजीकी आशा है। १६ फरवरीको मं० श० का १५० का ग्रहयोग बनता है इससे सराफेमें काफी परिवर्तन एक तरफा होगा, दिनके ५।२३ तक Bullion speciality Rise probebly. २४ फरवरीसे मंगल २ मार्च तक फिर स्वनवांशमें आ जाता है

वहां तिल तैल गुड़ सोना गेहूँ आदिमें तेजी लावेगा। पुनः गुरु नवांशमें चला जावेगा, चांदी सोना गुड़ आदिमें मंदी करेगा, यह फल ता० ५ मार्च तक सम्भव है। ५ मार्चको भौम राहु सप्तम हो रही है इसके प्रभावसे चांदी सोनेमें एवं सारे बाजारोंमें जोरदार मंदी संभव है, मध्याह्न तक। फिर ६ मार्च को बु० ह० की १५० की दृष्टि होती है यह चांदी सोनेमें तेजी लावेगी। २ मार्चसे १७ मार्चका समय Bullian market सराफेमें मंदीका द्योतक नहीं है। २० मार्चसे मंदीकी संभावना है १८ अप्रैल १६५७ के बीचमें। शनि २४ मार्च १६५७ से वक्री होता है अतः यह भी यहांसे व्यापारमें विशेष परिवर्तन लाने वाला है, यह ३० मार्च तक अपने ही नवांशमें रहेगा, यह वक्री भी ज्येष्ठामें होता है अतः सारे बाजारोंमें एक बार तूफानी परिवर्तन लावेगा। १८ अप्रैलसे गुरु वक्रावस्थामें सिंहमें प्रवेश करेगा, सूर्य मेषमें है, नवांशमें नहीं एवं राशिको पंचम दृष्टिसे देखता है—गेहूं गुड़ सोना आदिमें मंदी ले आवे और रुई आदिमें तेजी करेगा, यहां फरवरी और मार्च अप्रैलकी कुछ युतियोंके संक्षेप फलसे पाठकोंको जानकारी करा देते हैं—

१६ फरवरी १६५७ को भौम शनिकी १५० की दृष्टि चांदी सोनेमें विशेष तेजी लावेगी, ५ मार्च और ६ मार्चकी दृष्टियोंका फल ऊपर आ चुका है, १३ मार्च को मं० गु० की पंचम होती है रात्रिमें ११।३८ पर इसके प्रभावसे चांदी सोनामें अच्छी मंदी आवेगी और गुड़ गेहूं कपास रुईमें तेजी जानें। युतिकाल मुक्त होने पर विपरीत फल सभी स्थानोंमें समझें २ अंश तक। २ अप्रैलको भी चांदीमें तेजी आवेगी पुनः ६ को मं० गु० की सप्तम है यह चांदी सोनेमें मंदीकारक रहेगी, गुड़ गेहूं रुईमें तेजी होगी। १० अप्रैल को शु० रा० १५० अं० दृष्टि से चांदी सोनामें तेजी आवेगी एवं १३ अप्रैलको सू० गु० १५० के योगसे भी तदनुसार १८ अप्रैल को भी मं० रा० १५० के योगसे भी चांदी सोना तैल गुड़ गेहूं रुई मंदे रहेंगे। २३ अप्रैल को मं० गु० चतुर्थ होती है इसके प्रभावसे चांदी सोनेमें तेजी आवेगी और अन्य बाजारोंमें मंदीका प्रभाव होगा खुलते बाजारमें १०।४५ तक, पुनः सू० ह० की चतुर्थसे इस दिन ही २।२७ दुपहर तक चांदी सोनेमें अवश्य ही फिर तेजी आवेगी एवं सभी बाजार मजबूत रहेंगे, यह संक्षेपमें विवरण फरवरी मार्च और अप्रैल १६५७ का, मई जून जुलाईका आगामी अंकमें देखें।

तीन मासका साप्ताहिक भविष्य प्रकाश

[लेखकः—श्री पं० गंगाप्रसाद ज्योतिषाचार्य]

(१) दिनांक १६ से २३ जनवरी तक—

दिनांक १७ जनवरीको खुलते बाजार चांदी, सोना, गुवार, सरसों खरीदो। रंग लाल, पारा, गंधक, तिल, तेल, तेजाब, अरण्डा सींगदानाके भावोंमें मन्दी रहेगी। दि. २१ से २३ तक तेजी, बादमें मन्दी। किराना, लालमिर्च, काली मिर्च, घृत, चना, सरसोंकी खरीद दि. २३ तक नफा दे जायगी। इस सप्ताह जूट तथा जूटकी बनी वस्तुओंके भावोंमें एक खासी मन्दी आवेगी, गली लगाकर काम करने वाले लाभ उठा सकेंगे। शेष देखते रह जायेंगे।

(२) दि० २४ जनवरीसे ३१ जनवरी तक

इस सप्ताहमें चांदी, सोना, गुवार, मटर, दिना० २४ को १२ बजे बेचो, दि० २६ तक लाभ सामने होगा। दि० -- को २ बजेसे ३ बजे तक डबल खरीदो, दि० ३१ तक नफा मिल जायगा। पाट, कालीमिर्च टाटा आर्डनरीके भावोंमें अच्छी मन्दी आ सकती है। बुधवारी अमावस्याके योगसे तिल, तेल, अलसी, सरसोंके भावोंमें तेजी।

(३) दि० १ फरवरी से ७ फरवरी तक

इस सप्ताहमें चन्द्र दर्शन मु० १५ बुध मकर राशिमें होनेसे चांदी, सोना, गुवार, मटरमें अचानक आश्चर्य जनक तेजी। दि० १ से ५ तक—पांच दिनमें चांदी, में ३)-४) सोनेमें २) गुवार ॥) मटरमें ॥) ी तेजी दिखा रही है। व्यापारी सावधान चांसमें देरी भले ही हो जाय, अंधेर

नहीं है, दि० ४ को खरीद खुलते बाजार करो, अरहर, मसूर, सोने, चांदीमें दि. ७ तक २-२॥) की तेजी आ सकती है।

(५) दि० ८ फरवरीसे १५ फरवरी तक

दिनांक ८ को चांदी सोनेमें अचानक १-२) की मन्दी आकर पुनः इतनी ही तेजी आ सकती है कारण गुरुवारी पूर्णिमा भावोंका सुधार कर देती हैं। व्यापारी ध्यान दें। चांदी दि० ११ को घटे भाव २ बजे खरीद करके दि० १३ को ४ बजे तक नफा लेकर डबल बेचो। दि० १५ को डबल मुनाफा मिल जायगा। दि० ११ को एक दिन तेजीका रियेक्शन आकर पुनः मन्दी अच्छी आवेगी। इस चांसको लेनेके लिए दि० १२ को १ से २॥ बजे तक पूर्णमासीकी मन्दी लगाना ही लाभका कारण होगा। रुई, चांदी, मूंगफली, अरण्डा, जूट, बारदानेमें मन्दी रहेगी।

(६) दि० १६ फरवरी से २३ फरवरी तक

इस सप्ताह चं० श० युतिसे चांदी सोना, गुवार, जूट, टाटा आर्डनरीके भावोंमें तेजी आवेगी। दि० १६ को २ बजे से ४ बजे तक खरीद करो दि० २२ को २ बजे तक लाभ हो जायगा। दि० २२ को समय ३ से ४ बजे तक डबल बेचो, दिनांक २३ तक मंदी। इस मन्दीके नफेको सम्भाल कर लेना होगा। अलसी, सरसों, अरण्डा, मूंगफली, जूट इत्यादिके भावोंमें भी मंदीका झटका आवेगा, टाटा आर्डनरी आयरन शेयरोंमें खासा मंदी आनेकी सम्भावना है।

(७) दि० २४ फरवरी से २८ फरवरी तक

इस सप्ताहमें शुक्रका अस्त पश्चिममें चांदी सोना, गुवारके भावोंमें घट-बढ़ करेगा। दिनांक २५ से २८ तक २-२॥) की तेजी चांदीमें आकर पुनः उतनी ही मंदी आ सकती है। व्यापारियोंको थोड़े नफेमें खरीद किये मालको नफा लेकर बेचान करते रहना उपयुक्त होगा। दि० २५-२६-२७-२८ तेजीके समझें। तिलहनोंके बाजारोंमें पुनः तेजी आवेगी। घटे भाव खरीदनेकी राय है। सन, सुतली, बान मूंजका स्टाक अवश्य ही लाभ देगा। टाटा स्टील शेयरोंमें इकतरफा तेजी रहेगी।

(८) दि० १ मार्च से ७ मार्च तक

इस सप्ताहमें चन्द्र दर्शन मु० ४५ दि० ४ को होने से चांदी, सोना, रुई, गुवारके भावोंमें स्थिरता रहेगी। १,२ की घट-बढ़में बाजार रहेगा। निश्चित रुख मन्दीका रहेगा। दि० ४ को ठीक २ बजे चांदी सोना खरीदो। दि० ६ के ४ बजे तक नफा लेकर डबल बेचो दि० ७ तक लाभ होगा।

(९) दि० ८ मार्च से १५ मार्च तक

दि० ८ को खुलते बाजार चांदी, सोना, रुई, घृत खरीदो, दि० १२ के २ बजेसे ४ बजे तक डबल बेचो, दि० १५ तक दोतरफा लाभ हो जायगा। व्यापारी सावधान! फाल्गुन सुदी १५ के कट वायदेके व्यापारकी अन्तिम मिती होगी। इस दिन र० चं० का प्रतियोग बाजारको गिरा देगा, मंदी वालोंको नफा मिल जायगा। तेजी वाले देखते रह जायेंगे। अलसी, मसूर, गुवार, किराना, शेयर्स, टाटा, आर्डनरी, आयरनके भावोंमें तेजी रहेगी, घटे भाव खरीदो।

(१०) दि० १६ मार्चसे २३ मार्च तक

दिनांक १८ को २ बजे घटे भाव चांदी, सोना, जूट, रुई खरीदो। दनांक २३ इकतरफा तेजी। दिनांक २१ को चंद्र शनिकी युतिसे २४ घण्टेकी मंदीका झटका आवेगा. इस मन्दीमें माल पोते करना चतुर सटोरियाका काम होगा। अरहर, मसूर, गुवारमें इकतरफा मन्दी रहेगी। टाटा आर्डनरी आयरन शेयर्समें तेजी दिखाई देगी। सावधान! बाजार विपरीत जावें तो सामना करना ठीक नहीं हैं।

(११) दि० २४ मार्चसे ३१ माच तक

दि० २४ को वक्री शनिसे चांदी सोनामें तेजी आवेगी। दिनांक २४ को १२ से १ बजे तक चांदी, रुई, गुवार, पाट खरीदो, दि० ३० तक लाभ सामने होगा। टाटा आर्डनरी स्टील शेयर भी मन्दे जावेगे। बराबर बेचान करते रहें २४ घण्टेमें मिलता हुआ मुनाफा छोड़ना भूल हैं।

(१२) दि० १ अप्रेलसे ७ अप्रेल तक

दिनांक १ को १२ बजे चांदी, सोना, रुई, खरीदो, दि० ५ तक इकतरफा तेजीसे लाभ उठावें। सावधान, दि० ६ को १२ घंटेकी मन्दीका रियेक्शन देगी। इसमें घटे भाव माल पोते करना ही चांस है। टाटा आर्डनरी शेयर्समें जबरदस्त मंदी रहेगी। डबल बेचान करने वाले ही लाभ उठा सकेंगे, तिल, तेल, अलसी, मसूर, अरहरमें मंदीका स्टाक रखना हानिप्रद है, समयसे सचेत रहो।

रुई-चांदी-सोनेकी अनुभूत रिपोर्ट

[ले०—ज्योतिर्भूषण दै० र० श्री पं० गिरिधारीलाल शर्मा]

(१) प्रथम सप्ताह—

पौष शुक्ला १० शुक्रवार ता० ११ जनवरी सन् ५७ से १४ जनवरी तक सुवर्ण अवश्य तेज, रुई, चांदीमें साधारण तेजी। ता० ११ को दिनभर घटबढ़ रहेगी, ता० १२ को रुई साधारण, सोना चांदी तेज। ता० १४-१५ को तेजी खुलके १-१॥ बजेसे मन्दी। ता० १६ को २ बजेसे तेजी, यहां शेयरके व्यापारियोंको तेजी का स्वर्ण अवसर है।

(२) द्वितीय सप्ताह—

ता० १७ से २२ जनवरी तक रुईमें अच्छी घटबढ़ होगी, खंडीमें १५) २०) रु० या इससे ज्यादा भी घटबढ़ हो सकती है। पहिले १५)-२०) घटेगा पीछे बढ़ेगा। ता० २१ तक मंदी पीछे तेजी। सोनेमें ज्यादा घटबढ़ और तेजी, चांदीमें साधारण तेजी, ता० १७-१८ व २१ को नजराना लगावें। ता० २२ को अच्छी घटबढ़ होगी।

(३) तीसरा सप्ताह—

ता० २३ से ३१ जनवरी तक साधारण तेजी होगी, यहां विशेष ध्यान नहीं बनता, स्पेशल विचार किया जायेगा, ता० २५-२८-३१ को अवश्य मंदी होगी रुई चांदीमें।

(४) चौथा सप्ताह—

ता० १ से ९ फरवरी तक रुई, सोना, चांदीमें अचूक तेजी २) २॥) की। चांदी ता० ६ तक तो तेज रहेगी। यदि ता० ६ को भी तेजी रह जाये तो ९ तक भी अवश्य तेजी अन्यथा पूरा विश्वास मत करो, ता० १-२ को घटबढ़से तेजी। ता० ४-५ को गिरी हवासी रहेगी बाजारमें, ता० ६ से ९ तक शेयर रुई तेज, चांदी भी तेज जंचती है।

(५) पांचवां सप्ताह—

ता० १० से १६ फरवरी तक कुछ मंदी रहेगी। ता० ९ को तेज। ता० १०-११ को मंदी, ११ को सब वस्तु मंदी नहीं होगी, ता० १२-१४ को अवश्य मंदी, ता० १५ को घटबढ़से मंदी, ता० १६ को साधारण-सी तेजी।

(६) छठा सप्ताह—

ता० १७ से २३ फरवरी तक रुई घटबढ़से मंदी, चांदी तेज, हमारे ध्यानसे एकतरफा लेके बैठना अच्छा नहीं है। दैनिक कार्य करो, ता० १८ को तेज, ता० १९ को घटबढ़से मंदी, ता० २० को तेजी खुलके मंदी, २१ को अच्छी मंदी, २२ को घटबढ़से तेजी, २३ को तेजीमें बेचो।

(७) सातवां सप्ताह—

ता० २४ से २८ फरवरी तक अवश्य मंदी होगी ता० २५-२६ दोनों मंदी नहीं भी तो एक अचूक मं[illegible] होगी। ता० २७ को भी पहले तो बाजार मंदा रहेगा, [illegible] बजे सुधार होगा, ता० २८ को बड़ा उत्पात दिन है। ह[illegible] ध्यान मंदी खुलके तेजीका है।

(८) आठवां सप्ताह—

ता० १ से १० मार्च तक बड़ा उत्पाती समय बाजार बड़ा उथल-पुथल होगा। वैसे मार्चका मास सार ही स्पेशल विचार करनेका है, कार्यालयसे पत्र-व्यवहार करो, जिससे अच्छा लाभ हो सकता है। जनरलमें तेजी। ता० १ को घटबढ़से तेजी, ता० २ को भी तेजी, ता० ३-४ को साधारण मंदी। ता० ५ को १२ या २ बजे तक मंदी पीछे तेजी, ता० ६ को रुई मंदी, चांदी तेज, चांदी-सोना ता० ७ को तेज रहे तो १६ तक तेज मंदा रहे तो १६ तक मंदा। हमारा ध्यान मंदीका है। ता० ७-८ को रुई मंदी, ता० ९-१० को तेजी।

तीन मासका दैनिक व्यापार रुख

बाणवेध दृष्टि सम्बन्ध नवांशादि द्वारा अनुभूत चांस

[लेखकः—रमलाचार्य श्री पं० गणेशशंकर शर्मा दैवज्ञरत्न]

जनवरी १९५७ ई०

(१) ता० १० को दुपहर ३।२५ से ता० १३ को रातके ६॥ बजे तक सूर्य गुरुका बाण वेध होगा। यहां रुई, एरंडा, चांदी, गुड़, गुवार, मटर, बाजरा, चना, शेयर, सुवर्णमें तेजी ही रहेगी। बाजार घटते ही खरीदो और उछालेमें नफा लेते रहो भाव बढ़ते ही रहेंगे।

(२) ता० १७ को प्रातः से मंगल मेष राशि व मेष नवमांशमें रहेगा यह, इण्डियन-आयरन, टाटास्टील, मिल शेयर, गुड़, खांड, चना, बाजरा, चांदी सुवर्ण, पाट हैसियन तिलहन में अच्छी तेजी ले आयेगा।

(३) ता० २८ चंद्रवार आज फिर सूर्य गुरु वक्रसे बाण वेध होगा प्रथम ता० १० को जो बाण वेधके समय स्थिति है उससे विपरीत यहां समझो, समझदारको इशारा काफी होता है।

(४) ३० बुधवार—आज प्रातः ७ बजेसे ता० २ फरवरीको दुपहर ३।५० तक सूर्य केतुका बाण वेध होगा और इसीं समय सूर्य प्लूटोका बाण वेध है अतः यहां अच्छी घटा बढ़ी चलेगी नजराने द्वारा व्यापार करें करायें।

फरवरी १९५७ ई०

(१) ता० ४ बुध उत्तराषाढ़ा पर गुरु वक्र उत्तरा-फाल्गुनी धनुः मीन नवमांशमें वेध होगा यह वेध अच्छी मंदी सुवर्ण, चाँदी, शेयर, वारदाना, गुड़, गुवार, मटर, तिलहनमें ले आयेगा।

(२) ता० ५ को सूर्य धनिष्ठा, राहु विशाखा सन्मुख वेध ता० ५ को रातमें ८।४३ से ता० ८ को रात तक समस्त सट्टे मार्केटोंमें मंदीका रोला अचानक अच्छे रूपसे आयेगा, खास कर एरंडा, अलसी, सरसों, मूंगफली, बिनौला व तेलोंमें अच्छी मंदी व अन्य वस्तुओंमें साधारण मंदी आकर रहेगी।

(३) ता० १२ को प्रायः १०।४८ से ता० १३ को रात तक सूर्य-शुक्रका बाण वेध होगा यह रुई, कपास, सूत, बिनौला, पाट, हैसियत में मंदी, चांदी, सुवर्ण, शेयर, तिलहन, गुड़, बाजरा, चनामें तेजी कर देता है, इन एक आँख वाले ग्रहकी चाल बड़ी टेढी है अतः यहाँ नजराने द्वारा व्यापार करने वालोंको अवश्य सर्व वस्तुओंमें लाभ होगा।

(४) ता० १४ को प्रातः ७ बजेसे ता० १६ को सायं ३।५५ तक शुक्रके तुका मिथुन मकर नवमांशोंमें बाण वेध होगा यह भी सर्व मार्केटोंको मंदीका रास्ता बता देगा। साथ ही शुक्र प्लूटोका बाण वेध है, यह अच्छी घटा बढ़ी करनेका आदी है।

(५) ता० १५ को सायं ६ बजेसे ता० १७ को दुपहर २।४२ तक सूर्य बुधका बाण वेध मेष वृश्चिक नवमांशोंमें होगा यह प्रथम बाजारोंको तेजीकी तरफ लेजाकर मंदीमें ला देता है, यहां पहिले आधे समय तेजी पीछे आधे समय में मंदी रहती है।

(६) ता० १९ को प्रातः ७ बजेसे ता० २५ को सायं ४।३० तक मंगल केतुका वेध होगा, यहां आयरन, टाटा मिल शेयरोंमें अच्छी मंदी गुड़, गुवार, मटर, चने, बाजरा, पाट, वारदाना, हैसियन, रुई, बिनौला, कपासमें अच्छे उछाले खा खाकर बाजार मंदे रह जायेंगे।

मार्च १९५७ ई०

(१) ता० २ को प्रातः ७ बजेसे ता० ७ को प्रातः ८।२४ तक धनु-कर्क नवमांशमें मंगल राहुका बाण वेध होगा, फिर ता० ७ को सायंकाल ४ बजे मकर व मिथुन नवमांशमें बाण वेध होगा, ता० १२ को सायंकाल ४ बजे तक रहेगा इसमें केवल ७ तारीखको छोड़कर ता० २ से ता० १२ तक मंदीका समय है। यहां समस्त सट्टे मार्केटोंमें मंदी आकर रहेगी।

अप्रेल १९५७ ई०

(१) ता० ७ को प्रातः से ता० ९ को रात तक सूर्य गुरु वक्र से बाण वेध होगा अतः दुतर्फा बाजार सभी अच्छी घटा बढ़ीसे चलेंगे, नजराने सर्व वस्तुओंके निकल जायेंगे, ध्यान रखना।

तेजी मंदीकी रुख सब वस्तुओं पर

जनवरी १९५७ ई०

११ शु०—प्रत्तः १०।२४ से सायं ४ बजे तक शेयर, मिल शेयर, तिलहन, रुई, चांदी, पाटमें उछाला आयेगा ४ बजे पश्चात् बाजार अच्छे मंदे रहेंगे।

१२ श०—प्रातः १० बजेसे ४ बजे तक एरंडा, बिनौला, अलसी, सरसों, मूंगफली, पाट हेसियन, रुई, कपास, गुड़, गुवार, मटर, चने तेज अन्य वस्तु साधारण मंदीसे तेज होगी।

१४ चं०—प्रथम तेजी आकर १ बजेसे रुई, चांदी, शेयर, तिलहन धातु धान्य ंदे रहेंगे।

१६ बु०—प्रातः से १ बजे तक बाजारोंमें मंदीका बोलबाला रहेगा, फिर स्थिर बाजार रहेंगे।

१७ गु०—प्रातः ९ बजेसे ३ बजे तक शेयर, मिल शेयर, टाटा, एरंड़ा, अलसी, मूंगफली, तिल तेल, बिनौला में अच्छी तेजी आजायेगी। आज २॥ बजेसे मंगल मेष राशि व मेष नवमांशमें आया है और ता० २२ को रात तक रहेगा यह समस्त ग्रहोंके प्रभावको कम करके सर्व मार्केटोंमें अपने प्रभावको कायम करेगा और अच्छी तेजियां बाजारोंमें आ जायेगी सब बाजार इस समय तेज रहेंगे।

२४ गु०—आज दिन भर सर्व बाजारोंमें तेजी रहेगी, खासकर तिलहन व शेयरोंमें आयेगी अन्य वस्तु दुतर्फा चलते तेज हो जायेंगे।

२६ श०—आज दुपहर २॥ बजेसे रात तक बाजारोंमें तेजी खेलने वालोंको अच्छा लाभ होकर रहेगा।

२८ चं०—प्रातः से १२।४५ तक बाजारमें तेजी फिर सायं ६ बजे तक मंदी, रुई, चांदी, अलसी, गुड़, गुवार, मटर, बाजरा, बिनौला, चना, चाय, चमड़ा, पाट हेसियन में भी इसी प्रकारका रुख आई हुई तेजीमें हिम्मतसे माल बेच दो अच्छा लाभ होगा।

फरवरी १९५७ ई०

१ शु०—दिनभर सर्व वस्तुओंमें मंदी खेलने वालोंको अच्छा लाभ होगा।

२ श०—प्रथम तेजी चलेगी फिर दुपहर १।२१ से मंदी अच्छे रूपसे सर्व वस्तुओंमें आ जायें।

४ ं०—आज मंगल, सूर्य, राहु की कर्क नवमांशमें युति हैं और गुरुकी पंचमदृष्टि है अतः ता० ५ को सायं ३ बजे तक सर्व बाजारोंमें अच्छी मंदीका धमाका आयेगा, फिर तेजी आ जायेगी।

७ गु०—आज दुपहर १२ बजेसे सायं ६ बजे तक चांदी, रुई, अलसी, एरंडा, रुई, मूंगफली और गुड़, गुवार, मटर का चांस भी मंदीका है।

१४ गु०—प्रातः से १ बजे तक बाजारोंमें अच्छी तेजी।

१५ शु०—प्रातः से ३ बजे तक, गुड़, खांड, गुवार, मटर शेयर, रुई, चांदी, पाट हेसियनमें मंदी हैं।

१६ श०—आज दुपहर १२ बजेसे सायं ५ बजे तक गुड़ शेयर, चना, बाजरा तिलहन तेज रहेंगे।

१८ चं०—दुपहर १।१५ से सायं ४ बजे तक बाजा तेजी रहेगी, भाव सर्व वस्तुओंके बढेंगे।

१९ मं०—दुपहर १२।१५ बजेसे सायं ६ बजे त रुई चांदी आदि धातु गुड़ादि रस पदार्थ व तिलहन तै सर्व प्रकारके शेयरोंमें तेजी चलती रहेगी।

२१ गु०—दुपहर १२।४५ से सायंकाल तक स बाजार मंदीकी तरफ झुक जायेंगे।

२२ शु०—सायं २ बजे खरीदो, रातको ८॥ बजे तक सब बाजारोंमें तेजी रहेगी।

२३ श०—प्रातः ९ बजेसे ४ बजे तक तेजी चांदी, सुवर्ण, शेयर गुड़ धान्य, रुई तिलहन तेज।

२५ चं०—प्रातः ७ बजेसे २।४५ तक अच्छी तेजी फिर रात तक अच्छी मंदी सर्व बाजारोंमें रहेगी।

२६ मं०—प्रातः ११ बजेसे सायं ५ बजे तक शेयर तिलहन, व गुड़, बाजरा, गुवारमें तेजी।

२७ बु०—प्रातः ७ बजेसे दुपहर २ बजे तक मंदीमें सब बाजार रहेंगे।

मार्च १९५७ ई०

४ चं० –दिन भर समस्त वस्तुओंमें तेजी रहेगी, हर वस्तु घटे भाव खरीद कर ऊँचेमें नफा लेलो।

६ बु०—दुपहर ११।३० से सायं ५ बजे तक हर आये उछाले मालका बेचाण बोल दो। नफा होगा।

८ शु०—दुपहर १।३० से सायं ५ बजे तक तेजी, सर्व वस्तु घटे भाव खरीद कर नफा लेलें।

९ श०—दुपहर १२।३० से मंदी चालू, रुई चांदी अलसी, एरंडा मूंगफली आदिमें मंदी आयेगी, अन्य वस्तु हर उछाले बेचना चांस है।

११ चं०—दुपहर ११।५३ से तेजी चालू, गुड़, आइ-रन मिल, चपड़ा, चांदी, बाजरा, गुवार, मटरको आगे समझो। सायं ४ बजे तक नफा खाते रहना। सायं ५ बजे तक तेजी वाले जीतते रहेंगे।

१२ मं०—सायं ३॥ बजेसे बंद बाजार तक एरंडा गुड़, गुवार, मटर बाजरेमें तेजी आयेगी, चांदी, रुई, तिल-[illegible]न भी पीछे नहीं रहेंगे।

१३ बु०—दुपहर १ बजेसे शेयर इण्डियन, मिल, [illegible]ड़ा, अलसी, सरसों, मूंगफली बीयाँ बारदानासें तेजी [illegible]लू हो जाये, हर घटे भाव खरीदने वालोंको अच्छा लाभ [illegible]गा।

१४ गु०—प्रातः ७ बजेसे १० बजे तक मंदी, फिर [illegible]०॥ बजेसे ३।४२ तक तेज, फिर अचानक मंदी, गुड़, गुवार, [illegible]र, बाजरा, चना, मिलशेयर, गेहूं के भावोंमें खास लाइन [illegible]ठेगी, अन्यमें भी साधारण लाइन ऐसी ही चलें।

१९ मं०—आज प्रातः से ३।३० तक अच्छी तेजी सर्व [illegible] मार्केटोंमें आ जायेगी।

२२ शु०—प्रातः १०।३४ से सायं ४।३० तक सब बाजारोंमें तेजी खेलने वालोंकी जीत होगी।

२३ श०—आजका दिन भी तेजी खेलने वाले व्या-पारियोंके लिए शुभ रहेगा।

२६ मं०—प्रातः ७ बजेसे दुपहर १ जे तक हापुड़ मंडी व उत्तरप्रदेश मंडियोंमें मंदीका झटका आएगा, फिर धीरे-धीरे बाजार तेज हो जायेंगे। अन्य मंडियोंमें घटे भाव खरीद नफा हाथों-हाथ लेते रहें।

२७ बु०—प्रातः १० बजेसे सायं ४।२० तक सब मंडियोंका रुख मंदीकी तरफ रहेगा।

२८ गु०—आज १ बजे पीछे उत्तर प्रदेशमें दुतर्फा चांस बड़े मजेसे निकलेंगे। चांदी रुई तिलहनमें घटा बढ़ीसे समान नजराने हजम होंगे।

अप्रैल १९५७ ई०

४ गुरवार–दुपहर १२।५१ से सायं तक बाजारोंमें तेजी चलेगी।

हाजिरके सब मार्केटोंकी लंबी लाइन

ता० ११ से १६ जनवरी तक बाजार दोनों तरफ चलते मंदीका रुख पकड़ लें, ता० १७ से २२ तक तेजी रहेगी। ता० २३ से २६ तक बाजार समान भावोंमें रहेंगे। ता० २८ को सायंकालसे फिर तेजीका रुख आयेगा, लेकिन मामूली भयसा बना रहेगा। ता० २ फरवरीसे बाजारोंमें अच्छी मंदियां चालू हो जायें। मौसमी वस्तुएँ भी अच्छी मंदी ता० ८ को दुपहर १ बजे तक रहेगी फिर बाजार रुख बदलेगा, वैसे लंबी तेजी मंदी अब रुक गई है। ता० ८ फरवरीको १ बजेके करीब जो भी माल हिम्मतके साथ खरीदेगा उसको अच्छा लाभ होगा। ता० १३ फरवरी तक बाजार तेज रहेंगे, ता० १४ से १८ बक दुतर्फा चलते समान भाव, ता० १९ से २० फरवरी तक अच्छी तेजी दो दिन रहेगी, फिर दुतर्फा चलते समान भाव। ता० २५ से तेजी चालू हो जायेगी और २७ से रुईमें व उत्तरप्रदेश में मंदी चलेगी। अन्य वस्तुओंमें समान भाव रहेंगे। चांदीमें तेजी रहेगी। अन्य मंडियोंमें समान सा समय निकलेगा। ता० ७ मार्च से तेजी फिर चलेगी, ता० १३ तक तेजी रहेगी, ता० १४ से फिर बाजारोंमें समानता आ जायेगी अथवा कुछ मंदी भी आजाये, ता० १८ मार्चसे फिर तेजी वाली पार्टीका जोर लगेगा, ता० १९ को सायं-काल तक फिर समानता आ जायेगी, बाजार दोनों तरफ चलते अवश्य रहेंगे। ता० २८ मार्चसे बाजार मंदे होने लगेंगे, ता० २ अप्रेल तक मंदी चलेगी, ता० ३ अप्रेलसे फिर बाजार धीरे धीरे खड़े हो जायेंगे, ता० ६ अप्रेल तक तेजी ता० ७ से १२ तक दोनों तरफ चलते समान भाव, से बने रहेंगे।

———



आओ बहन भरलो पानी!

पानी पर हमारा जीवन निर्भर है, पानी ही हमारे शरीर को स्वच्छ करता है, हमारी प्यास बुझाता है। भगवान की यह देन हम सभी के लिए है।

आइये, बंधुत्व की श्रेष्ठ भावना से हम हृदय ओतप्रोत करलें। हम अपने भाई-बहिनों की तरह हरिजनों को भी प्यार से गले लगाएं।

> हिंदू शास्त्रों में अस्पृश्यता नाम की कोई चीज ही नहीं है:-
> **महात्मा गांधी।**

"छूतछात को छोड़ो,
दिल को दिल से जोड़ो।"

हमारे नये सिक्के



१ अप्रैल १९५७ से चालू ।

वर्तमान और नये दोनों ही सिक्कों में लेनदेन हो सकेगी। इन सिक्कों को लेने में कोई भी इतराज नहीं कर सकता।

परिवर्तन तालिका में दिए गये मूल्यों के अनुसार ही पैसे मिलेंगे। आप उस से ज्यादा पैसे न तो दीजिए न मांगिए।

आप नये, वर्तमान या नये पुराने सिक्के मिला कर (जो भी आप के पास हों) पैसे दे सकते हैं।

- *केवल पैसे देते समय ही इस तालिका का उपयोग कीजिए।*
- *ठीक ठीक हिसाब करने के लिए आप १०० नये पैसे बराबर १ रुपया या १६ आने, या ६४ पैसे या १९२ पाइयां इस दर से गिनिए। पैसे देते समय ही निकटतम नए पैसे तक हिसाब करना होगा; आधा नया पैसा या उससे कम को छोड़ देना होगा और आधे नये पैसे से अधिक को एक नया पैसा गिनना होगा।*

DA 56/122



सरलता से याद रखने के लिए।

१ रुपया	=	१०० नये पैसे
८ आने	=	५० नये पैसे
४ आने	=	२५ नये पैसे
३ आने	=	१९ नये पैसे
२ आने	=	१२ नये पैसे
१ आना	=	६ नये पैसे
आधा आना	=	३ नये पैसे

परिवर्तन तालिका

(एक ही भुगतान में चुकाए जाने वाले मूल्य का नये पैसों में परिवर्तन)

आने	पाइया	नये पैसे	आने	पाइयां	नये पैसे	आने	पाइयां	नये पैसे	आने	पाइयां	नये पैसे
०	३	२	४	३	२७	८	३	५२	१२	३	७७
०	६	३	४	६	२८	८	६	५३	१२	६	७८
०	९	५	४	९	३०	८	९	५५	१२	९	८०
१	०	६	५	०	३१	९	०	५६	१३	०	८१
१	३	८	५	३	३३	९	३	५८	१३	३	८३
१	६	९	५	६	३४	९	६	५९	१३	६	८४
१	९	११	५	९	३६	९	९	६१	१३	९	८६
२	०	१२	६	०	३७	१०	०	६२	१४	०	८७
२	३	१४	६	३	३९	१०	३	६४	१४	३	८९
२	६	१६	६	६	४१	१०	६	६६	१४	६	९१
२	९	१७	६	९	४२	१०	९	६७	१४	९	९२
३	०	१९	७	०	४४	११	०	६९	१५	०	९४
३	३	२०	७	३	४५	११	३	७०	१५	३	९५
३	६	२२	७	६	४७	११	६	७२	१५	६	९७
३	९	२३	७	९	४८	११	९	७३	१५	९	९८
४	०	२५	८	०	५०	१२	०	७५	१६	०	१००

इसे रखिए इसकी आपको जरूरत पड़ेगी।

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

['श्रीविश्वविजयपञ्चाङ्ग' से]

जनवरी १९५७ ई०

ता० १२ शनिवार—पुत्रदा एकादशी व्रत, लोहड़ी महोत्सव
१३ रविवार—मकर-संक्रान्ति रात्रि १० बजे मु० ३० ।
१४ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत मकर-संक्रान्ति पुण्य काल मध्याह्न तक ।
१५ मंगलवार—सत्यव्रत ।
१६ बुधवार—माघस्नान व्रतनियमाद्यारम्भ ।
१९ शनिवार—श्रीगणेश ४ संकष्टहरणी चौथ व्रत चंद्रोदय रात्रि स्टैं० टा० ९।३८ ।
२२ मंगलवार—श्री रामानन्दाचार्य जयन्ती ।
२६ शनिवार—गणतन्त्र स्थापनादिवस, एकादशी व्रत ।
२८ सोमवार—सोमप्रदोष व्रत ।
३० बुधवार—मौनी अमावस प्रयाग स्नान, श्रीमहात्मा गाँधी निधन दिन ।
३१ गुरुवार—श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती ।

फरवरी १९५७ ई०

१ शुक्रवार—चन्द्रदर्शन मु० १५ ।
३ रविवार—श्रीगणेश ४ तिल चौथ व्रत ।
५ मंगलवार—वसन्त पञ्चमी श्री ५ ।
७ गुरुवार—रथसप्तमी अचला ७ ।
८ शुक्रवार—भीष्माष्टमी ।
११ सोमवार—जया एकादशी व्रत ।
१२ मंगलवार—कुम्भ संक्रान्ति मु० ४५ पुण्यकाल सायं ५ बजे तक भीष्म १२ भौम प्रदोष व्रत ।
१४ गुरुवार—सत्यव्रत, माघी १५, माघ स्नान समाप्ति ।
१७ रविवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय ९।२८ ।
२१ गुरुवार—श्री सीता जन्म ८ ।
२५ सोमवार—विजया एकादशी व्रत ।
२६ मंगलवार—भौमप्रदोष व्रत ।
२७ बुधवार—श्रीमहाशिवरात्रि १४ व्र. (अर्धरात्रव्या.)
२८ गुरुवार—मेला शिवरात्रि १४ ।

मार्च १९५७ ई०

ता० १ शुक्रवार—अमावस्या ।
३ रविवार—फुलहरिया २ चन्द्र दर्शन मु० ४५ ।
९ शनिवार—होलाष्टकारम्भ ।
१२ मंगलवार—आमला एकादशी व्रत ।
१३ बुधवार—प्रदोष व्रत ।
१४ गुरुवार—मीन संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल मध्याह्नोत्तर १।२५ या० ।
१५ शुक्रवार—होलिकादहन रात्रिको स्टै० टा० ९।५१ उपरान्त, सत्यव्रत ।
१६ शनिवार—धूलिवन्दन श्वपचस्पर्श होला १ फाल्गुनी १५ आम्रकुसुम प्राशन ।
१९ मंगलवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय १०।५ ।
२० बुधवार—रंगपंचमी ।
२२ शुक्रवार—श्रीशीतला सप्तमी ।
२३ शनिवार—मृत्युवीर (शहीद) श्री भक्तसिंह, सुखदेव राजगुरु निधन (फांसी) दिवस ।
२६ मंगलवार—पापमोचिनी एकादशी व्रत ।
२८ गुरुवार—प्रदोष व्रत ।
३० शनिवार—चैत्री १४ मेला पृथूदक (पिहोवा)
३१ रविवार—अमावास्या चान्द्र सँव्वत्सर समाप्ति ।

अप्रैल १९५७ ई०

ता० १ सोमवार—नवरात्रारम्भ घटस्थापन चन्द्रदर्शन मु० ३०, श्रीगौतम जयन्ती, चान्द्र-सँवत्सर २०१४ वि० प्रारम्भ ।
३ बुधवार—गणगौरी पूजन मत्स्य जयन्ती ।
६ शनिवार—स्कन्द ६ मेला माईसरखाना ।
८ सोमवार—श्रीदुर्गाष्टमी और श्रीरामनवमी व्रत ।

——

तीसरी बार | महामहिम आचार्य | छप गया

श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीत

श्रीराष्ट्रालोक

राष्ट्रभाषानुवादसहित

राष्ट्रवादी ही आर्य हैं। आर्य ही शान्तिकी स्थापना कर सकते हैं।

भारत भारतीयोंका है

स्वातन्त्र्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। राष्ट्र हमारा पिता है, माता है और आचार्य है। हम सदा उसके सेवक हैं। हमारा राष्ट्र हमें भोग और मोक्ष दोनों देता है।

हम सच्चे राष्ट्रिय हैं

अभारतीय भारतके अतिथि हो सकते हैं, राष्ट्रिय नहीं।

हम संक्रान्तिका आदर करते हैं। हमें ऐसी शान्ति नहीं चाहिए जो राष्ट्रको परतन्त्र बनाए।

राष्ट्रिय राष्ट्रके पुत्र हैं, पति नहीं

भारतीय अपने आपको हिन्दू माननेमें गौरवका अनुभव करते हैं। भारतीय आदर्शके विपरीत क्रान्ति विक्रान्ति है संक्रान्ति नहीं। यदि आप इन भावोंसे स्नेह करते हैं तो 'श्रीराष्ट्रालोक' अवश्य पढ़िये।

श्रीराष्ट्रालोक परम पवित्र भारतीय आदर्शका एक जीवन शास्त्र है।

राष्ट्रप्रेमी इसका आदर कर रहे हैं। जनता हाथों-हाथ अपना रही है। आप भी आज ही मँगाइये। मूल्य ॥) मार्ग व्यय -) 'श्रीस्वाध्याय' और 'श्रीविश्वविजय-पंचाङ्ग' के स्थायी ग्राहकों तथा विद्यार्थियोंको मार्गव्यय सहित ।=) में।

महामहिम श्रीमदमृतवाग्भवाचार्यप्रणीत

श्रीआत्मविलास

मनुष्यमात्रके लिए परम कल्याणकारी व सन्मार्ग प्रदर्शक यह वही अद्भुत आध्यात्मिक दार्शनिक ग्रन्थरत्न है, जिसके प्रकाशित होते ही दार्शनिक जगत्में हलचल सी मच गई है, और सैकड़ों प्रतियां हाथों-हाथ लग गईं। इस ग्रन्थको पढ़नेसे स्थितप्रज्ञता प्राप्त होती है, चित्त शांत होता है। अतः यदि आप भी आत्मा क्या है? परमात्मा क्या है? ईश्वर जगदुत्पत्ति क्यों और किस प्रकार करता है। हम क्या हैं और हमें क्या करना चाहिए? दर्शन किसे कहते हैं? उनका प्रारम्भ तथा अन्त कहां होता है? उनकी उपपत्ति क्या है? आदि-आदि आध्यात्मिक गूढ़ रहस्योंसे भलीभांति परिचित होकर आत्मसाक्षात्कार करना चाहते हैं तो इस ग्रन्थका अवश्य मनन कीजिये। आपके सभी सन्देह दूर होकर अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा। मूल्य २) मार्ग व्यय ।।।) अलग।

श्रीपञ्चस्तवी

द्वितीय संस्करण प्रस्तुत है। इसमें प्रथम लघुस्तवकी ७०० वर्ष प्राचीन संस्कृत टीका तथा भारतकी वर्तमान राष्ट्रभाषानुवादके साथ मुद्रित है। शेष चार स्तोत्र मूल मात्र हैं। मूल्य ॥) डाक व्यय दो आने अलग।

श्रीमहानुभवशक्तिस्तव

संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्याके साथ मूल्य ॥) आठ आने। यह पुस्तक कितनी उपयोगी एवं महत्त्वमण्डित है यह सब देखने पर ही विदित होगा।

महामहिम आचार्य श्री १०८ अमृतवाग्भव विरचित—

प्रकाशित होने वाले ग्रन्थ

१. श्रीपरशुरामस्तोत्र, सचित्र राष्ट्रभाषानुवादसहित।

२. श्रीसप्तपदी-हृदय, द्वितीय-संस्करण, संस्कृत टीका तथा राष्ट्रभाषानुवाद सहित।

३. श्रीसंक्रांति-दंचदशी, संस्कृतटीका भाषानुवाद सहित।

व्यवस्थापक—श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी द्वारा अर्जुन प्रेस दिल्लीमें छपकर श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (हिमाचल प्र०) से प्रकाशित।